शिक्षक-दिवस १६६६

८१५८

अमर चूनड़ी

२२८५
ऋदाती

नृसिंह राजपुरोहित

अमर चूंनड़ी

२२६
कहानी

(राजस्थानी कहाणी-संग्रह)

राजस्थान साहित्य अकादमी सूं पुरस्कृत

६१२८

नृसिंह राजपुरोहित

शिक्षा विभाग राजस्थान
के लिए

सूर्य प्रकाशन मन्दिर
बीकानेर

मूल्य : पांच रुपये मात्र

०

© नृसिंह राजपुरोहित

०

प्रकाशक

शिक्षा विभाग राजस्थान के लिए

सूर्य प्रकाशन मंदिर

बिस्सों का चौक बीकानेर

द्वारा प्रकाशित

०

संस्करण : प्रथम, सितम्बर १९६९

०

मुद्रक : रूपक प्रिंटर्स दिल्ली-३२

AMAR CHOONRI by Nrisingh Rajpurohit

Rajasthani-Story Collection Rs. 5.00

७१५५

आमुख

राजस्थान के सृजनशील शिक्षकों की रचनाओं की शिक्षा विभाग, राजस्थान, द्वारा प्रकाशन की योजना के अन्तर्गत अब तक विगत वर्षों में हिन्दी तथा उर्दू की कुल आठ पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। इस वर्ष पांच संग्रह प्रकाशित किये जा रहे हैं जिनमें एक संग्रह राजस्थानी भाषा की कहानियों का भी है।

यह बड़े सन्तोष तथा प्रसन्नता की बात है कि विभाग की इस योजना का स्वागत सभी क्षेत्रों में हुआ है। सृजनशील शिक्षकों में एक नई उत्साह की लहर उठी है और अब प्रतिवर्ष अधिक से अधिक शिक्षक लेखकों की रचनाएँ प्रकाशनार्थ प्राप्त होने लगी है।

आशा है शिक्षक-दिवस १९६६ के अवसर पर प्रकाशित किये जा रहे इन ग्रंथों में पाठकों को नई-नई, विविध, रोचक तथा प्रेरणाप्रद सामग्री पढ़ने के लिए प्राप्त होगी और वे उसका पूरा आनन्द उठायेंगे।

राजस्थान के प्रकाशकों ने विभाग की इस प्रकाशन योजना में भरपूर योगदान दिया है। इसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं। इसी प्रकार जिन शिक्षकों ने इन संग्रहों के लिए अपनी रचनाएँ भेजी हैं वे भी धन्यवाद के अधिकारी हैं।

शिक्षक-दिवस
१९६६

हरिमोहन माथुर,
निदेशक,
प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा,
राजस्थान, बीकानेर

६९२८

एक सम्मति

श्री नृसिंह राजपुरोहित का आग्रह रहा कि उनकी पुस्तक 'अमर चूंनड़ी' पर मेरे दो शब्द जरूर जाने है। राजपुरोहितजी का मुझ पर विशेष स्नेह रहा है। स्नेह के आग्रह और अधिकार को टालना कैसे सभव है ? भारत की एक संस्कृति है—राजस्थानी संस्कृति। जो भारतीय सस्कृति की एक अमूल्य कड़ी है—एक गौरव-पूर्ण कड़ी। इसकी अपनी आन है और शान। पाश्चात्य प्रभाव को आत्मसात न कर सकने के कारण जिस असांस्कृतिक बाढ मे यह देश आज बह निकला है, वह स्थिति भयावह है। श्री राजपुरोहितजी का यह संग्रह उसी ओर इंगित करता है। कुछ कहानियां तो सीधी दिल और दिमाग पर प्रहार करती हुई एक टीस और तिल मिलाहट छोड़ती हैं। पुस्तक की भाषा राजस्थानी है। भाषा में प्रवाह और मिठास है। कहावतों एव लोकोक्तियो का बाहुल्य है। पुस्तक सर्व जन-पयोगी है। इसमे कोई संदेह नहीं कि राजस्थान वासियों का चरित्र एवं मनोबल ऊँचा उठाने में पुस्तक सहायक सिद्ध होगी।

राजस्थान विधान सभा — निरंजननाथ आचार्य

क्रम

रूपाळी राजां : ९
उडीक : १६
भारत भाग-विधाता : २४
बदळो : ३३
खूटा री आबरू : ३८
पेट री दाझ : ४१
लक्की स्टोन : ५५
अमर चूनड़ी : ६०
मेत वाळी बात : ७२
रूपाळी बीनणी : ७७
बोल म्हारी माछळी : ८३
मा री ओरणी : ८६
कुए भांग पड़ी : ९४
पांन झड़ंता देखनै : १०५

अमर चूंनड़ी

रूपाळी राजां

दिनूंगै त्वाड़ी मे बुहारी काढतां राजां रै कांनां में भणक पड़ी के मुल्क रै उतराद में झगड़ौ चेतग्यौ है। उणरा हाथ मतैई थमग्या। घूंघटा रौ पल्लौ थोड़ौ सीक तणीजग्यौ अर उणरी ओट में सूं आंख्यां नै कांन आंगणा कानी लाग ग्या। जेठजी जबरू धणै कागद बंचावता हा…

… सरब ओपमा विराजमांन अनेक ओपमा लायक भावौसा दुरगजी नै लिखी तेजा री जय श्री रघुनाथजी री बंचावसी। घणा मान सूं करनै। उपरंच समाचार एक बांचसी के उतराद में झगड़ौ चेतग्यौ है। म्हारी पलटण नै मोरचा माथै जावण रौ हुक्म मिळयौ है। आप कोई बात री चिंता फिकर करसी नी। बूजी नै म्हारा पांव धोक अरज करसी अर टाबरां माथै हाथ फेर सी। म्हारी कांनी सूं अमलां री मनवार मानसी।…

राजां तट्ट-तट्ट करनै खींपड़ा री बुहारी में सूं सुगियां तोड़ नै दांत कुचरण लागी। आंख्या उणरी फाटी'ज रैयगी अर सांस जोर-जोर सूं चालण लागी।

… उतराद में झगड़ौ चेतग्यौ है अर म्हारी पलटण नैं मोरचा माथै जावण रौ हुक्म मिळयौ है।

… ग्रामोफोन रेकर्ड रा खाडा में सूई अटकीजगी व्है ज्यूं वार-वार एइज समाचार उणरै कांनां में गूंजण लाग्या।

घर रा काम-काज सूं निवड़नै उणै जेठूता जवरजी नै पकड़ लियौ। गोळा मे बिठायनै लाड करण लागी—म्हारी लाडको बेटी, म्हारो

१ राजां

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] जावां फारां री [illegible] जवरजी बेटा ! [illegible] कागद पढ़नै सुणाय दो नीं ! [illegible] आख्यां गीली [illegible] इण कागद में ! [illegible] कागद सुणावो नै ! [illegible] कह्यो---जाओ बेटा जाओ अर तुरन्त [illegible] फेर दे दियो।

जवरू [illegible] कागद लिआयो अर पाछो गोखा में बैठनै बांचण लागो···सरब ओपमा बिराजमान···अनेक ओपमा थोड़ो धीरे बांचो जवरजी बेटा थोड़ो धीरे ! ओ इण ओळी में कांई लिख्यो है ? राजां एक ओळी माथै आंगळी राखनै बोली। ···उतराद में झगड़ो चेतग्यो है अर म्हारी पलटण नैं मोरचा माथै जावण रो हुकम मिळयो है ··

जवरू बांचतो रह्यो अर राजां रै डील में धूजणी छूटगी। कागद सांवट नैं जवरू ऊंचो जोयो तो काकी री प्याला जिसी मोटी-मोटी आंख्यां में पांणी देख्यो। टप्प करतो एक चळवळतो आंसू उणरै गाल माथै कर रळक्यो तो वो कागद नांखनै नाठग्यो।

राजां विचार करण लागी--आज धनतेरस है अर कालै रूप चवदस। आ सू नम (असाढ़ सुद नम) गई तो उणनैं परणियां नैं पूरा तीन बरस व्हिया अर चौथो बरस लागग्यो। तीन बरसां में वे तीन वेळा घरै आया। बीस-बीस दिन री छुट्टी में। वा आंगळियां माथै गिणण लागी।···एक बीसी ···दो बीसी अर तीन बीसी···तीन बीसी दिनां रा महीना कितरा व्है ? भगवान जांणै। किणनैं लेखो आवै। पण वे सगळी रातां उणै जाग नैं बिताई ही। आंख्यां में कस ई कोनीं पड़ण दियो। ओ सूतर री ढोलियो अर ए पड़वा रा थेपड़ा इण बात रा साखी है। इण तीन बीसी दिनां रै अलावा

उमर रा दूजा दिन तौ जाणै अकारथ ई गया।

रोज दिन उगै अर रात पड़ै, रात पड़ै अर दिन उगै। यूं उमर रा दिन ओछा व्हेता जाए। रोजीना सारैई छानो कूटो—झाड़ू-बुहारू, पांणी-लूंणो, पीसणो-पोवणो, दोवणो-विलोवणो अर धोवणो-धावणो। सरीखी सांमीनी सायणियां मिळै तो घड़ी-पलक मन राजी व्है जाए। पण करैई-करैई तो वां गूं ई उल्टी दैण व्है। उण दिन पे'लो हळोतियो व्हियां वा नाडी पाणी भरणनै गई तो सायणियां गावण लागी…

> मान महेल्या री झूलरी ए, पिणिहारी जी ए लो…
> गई-गई समद तळाव व्हाला ए जो…
> साता रै ई काजळ टीलियां ए पिणिहारी जी ए लो…
> एकलड़ी रे पीका ए नैण, व्हाला ए जो…
> साता रे ई पीऊ घरै वसै रै पिणिहारी जी ए लो…
> एकलड़ी रे पीऊ परदेश व्हाला ए जो…

मन जाणै कीकर ई व्हैग्यो। मूंडो उतरग्यो अर कंठ जाणै बैठग्यो। घरै आयां टांम उतरावतां जेठाणी पूछ्यो - बिनणी आज विलखा कियां?

पण इण विलखापणा रो कारण हरेक नैं कियां बतायो जा सकै?

आज ई पाणी री वेळा व्हैगी दीसै। काम हाल सगळोई पड़्यो है। बांटो भरणो है, विलोवणो करणो है अर पछै मटकै-मटकै पाणी लावणो है। पण वा उठै जितरी जेज है, पछै तो एकफटकारा री वात है। माल-मोटयार बहू-बुहारड़ी है, कांम री कांई भार? काम तो करणो इज चाहिजै। सगळै ई कांम व्हाला है, धाम व्हाला कठैई कोनी। पण थोड़ो घणो काम तो जेठाणीजी नैं ई करणो चाहिजै। पण वे तो डील रै एल ई नी दे। हलकै नै पाणी ई नीं पीए। आखो दिन नैन्या रे घोड़िया खनै बैठा रैवै अर उण माथै हुकम चलावता रैवै। भगवांन उणरो ई खोळो भर दियो होवतो तो किसीक नांमी रैवतो। गांम मं उणरै सावै जितरी ई छोरियां परणीजी सैगां रै ई खोळा में नैना टाबर है। उणै इज किणरा काळा तिल चोरिया है, उणै इज किसा बांमण मारिया है सो हाल तांई उणरो खोळो खाली है। जेठाणी गीगा नैं हालरियो गावै जद उणरै कांनो देख-देख नैं कितरी गुमेज सूं गावै—

> हूल रे नैन्या हूल रे…
> यूं पालणिया में झुलरे…

बेटी रै नाम जाणै भाठै नैं मेल्यो है। उणरै ई एक नैनो भायर रैतो—भूरो-भूरो, कालो-कालो, गोळ-मटोळ, रमत रै मगना जिणो नी जिणोक नांगो रैवतो। मा उणनैं छाती सूं चेपनैं जिवाणै गात सूं मनावती। (उणनैं लाग्यो जांणै उणरै आंनळां री चिटकीयां में निछूगी कीड़ियां चाल री है) गीगलो व्हियां भाभीजी रा मनमट गळ जावै अर बूजी री मंगा पण पूरी व्है जाए। नीं तो उळ-बैठ री एक इज वात—

—थेजा रो गीगलो निजरां देख लूं तो मरियांई गुणोतर जाऊं। बूजी कांई, बूजी रा बेटा नैं ई गीगला री जिसरी कोड है। लारली वेळा छुट्टी सूं रवानैं व्हिया जदरी वात है—पुणनो काठो पकड़ लियो अर नट्ट करती कांवळी पदार नांखी। इण उपरांत ई हंसनैं बोल्या—वो रोज गावौ जिको चाकरी वाळो गीत तो एकर सुणाय दो नीं लाडू। आज तो म्हूं साचांणी चाकरी माथै वहीर व्हियो हूं—

काळोड़ी तो कांठळ राज ऊपड़ी
कांई मोटोड़ी छांटां री बरसै मेस
भंवर भल चढ़जो राज···चाकरी···
कांई रैवो तो रांधू ए राज लापसी
कांई चढ़ो तो बाजरियो खीच
भंवर भल चढ़जो राज···चाकरी···

म्हारी आंख्यां में पांणी आयग्यो हो तो ई म्हे मुळक नैं कह्यौ—

गीत री छेली कड़ी तो पूरी करता पधारो—

एक टका री ए राज···चाकरी
कांई लाख रुपियां री घर री नार
भंवर भल चढ़जो राज···चाकरी···

उणां बाथ में लेयनैं म्हारा आंसू पूंछ दिया। बोल्या—इतरौ बिलखौ पड़ण री कांई बात है? म्हूं अब कै वेगी छुट्टी आऊंला अर जे कदाच वेगौ नीं आय सक्यौ तो नवमैं महीनैं तो गीगलौ आय जावैला।

पण उण बात नैं तो बारै महीना होवण आया। कठै गीगलो अर कठै गीगला रा कोडाया उणरा बाप!

राजां निसासा नांखती ऊभी व्हैगी। बारै जेठजी सूं कोई बात करै हो। स्यात जबरू रौ मास्टर दीसै—

···झगड़ौ अबकै जबरौ चेत्यौ, अलेखां चीणी कीड़ियां रै ज्यूं आंपणी

कांकड़ माथै चढ़नैं आया है। आंपणा जवान हिम्मत अर बादरी सूं वांरै मुकाबला में अड़ियोड़ा है। वे दुस्मियां नै काट नै नांख देला।

राजां रै नस-नस में जांणै विजळी खिवण लागी। हाथां रा वूकिया जांणै फाटण लाग्या। वा आंगणै जायनै बिलोवणो करण लागी—झरड़ ···मरड़ ! झरड़···मरड़ ! झगड़ो अवकै जबरो चेत्यौ—झरड़···मरड़ ! कांकड़ माथै दुस्मी ऊभौ—झरड़···मरड़ ! हरामियां नै काट नांखो-झरड़···मरड़ ! जोर री झाट लागी सो काठा-काठा दही रो लूंदो गोळी रै वारै आय पड़यो पच्च करतो।

—यूं करै कांई है बिनणी ! झाट थोड़ी धीरे दे। का तो गोळी फोड़ नांखेला अर का नेतरो तोड़ नाखैला। रसोड़ा में बैठ्या वूजी बोल्या।

झरड़···मरड़ !

राजां थोड़ी धीमी पड़गी। वा सोचण लागी—उणनै ई मोरचा माथै भेज देतो किसोक नांमी कांम वर्णे। वा हरदम वारै सागै री सागै रैवैला। दुसमण जे सनमुख आय जावै तो नीं वंदूक रो कांम है अर नी कारतूस रो। उणनै आपरा हाथां रै गाड़ माथै भरोसौ है। दो टणका मोटधारां री गावड़ां उणरा पंजो में झिल जावै तो वा टैं ई नीं करण दे। मसळ नै नांख दे। अर तीजो आवै तो फगत एक लात री काम है। उठनै जे पाणी ई मांगलै तौ फिट कहौ जो। मोटयार मोरचा माथै जाय सकै तौ लुगायां क्यूं नी जाय सकै? वा उणां सूं किण बात में कम है? जे एकली सैंकड़ूं दुस्मियां नै नीं रगदोळ दू तो म्हारी मा म्हनैं धकै सेय नै नीं धवाड़ी है। मगदूर नैं भाग है। मूंडो मूंडो वापड़ा चीणियां री जो कांकड़ री मामली कांनी ई पग देय दे। पग कलम नीं कर नाखूं हराम खोरां रा !

झरड़···मरड़ !

एक जोर री झाट लागी अर तड़ंद करतो नेतरो तूटनै आघो पड़यो अर गुड़ल समेत दूजो टुकड़ो हाथ में दूज रैयग्यो।

—थारै आज व्हियौ कांई है वेटी री बाप? यू घर रै लारै क्यूं उतरी है बड़ो मिनख? बिलोवणो गाळ नैं धूड़धांणी कर दियो अर नेतरो तोड़नैं पोलाळो कर नांख्यो। काम नी करणो व्है तो ना क्यूं नीं देय दे।

—वूजी अवकै जोर सूं किड़किया।

—धणाई बिलोवणा किया थे बापड़िया—बाप रै घरै बरैई देख्यो व्है जरै करेक। जाओ पधारो अबै पाणी भर दो। पग मटकी रो थोड़ो

[illegible] । आज [illegible] आगे [illegible] नी है। [illegible] नी दिन [illegible] ही।

राजा [illegible] नाठी [illegible] नी दिन [illegible] ही पण [illegible] गामा नैं [illegible] गाम री गोमाळ [illegible] [illegible] ही पण [illegible] । उण वास्तै [illegible] ने ऊभो हो। [illegible] एक काटीड़ा रे [illegible] री [illegible] नाथां [illegible] [illegible] ऊभा हा। [illegible] यार कर [illegible] ही। [illegible] ने [illegible] माथै [illegible] काटीड़ा ने [illegible] घणो पण [illegible] छियोड़ा अर ऊदम [illegible] [illegible] , हाण-फांण अवतो काम हो। [illegible] , [illegible] ने [illegible] छियोड़ा काटीड़ा काळ [illegible] मोटयार [illegible] ने [illegible] पटकण री हा। इण वास्तै आज [illegible] जावता [illegible] तजवीज ही।

गोर में हा-हू मच्योड़ी ही। एक कानी मोटयार नाठियां में मजबूत गाळा घाल नैं घेरो दियां ऊभा हा तो दूजै कानी डाफा-चूक व्हियोड़ा काटीड़ा कान ऊंचा किया अठी-उठी देखै हा। अठीनै तो राजां ठांम भरनै पाछी आई अर उठीनै डावियाळ काटीड़ा रै गाळो पड़ियो। काटीड़ो चीतरा री गळाई फुरणा बजावतो साम्ही काटकियो।

परतख काळ नैं साम्ही आवतो देखनैं मोटयार तो पड़ भाग्या पण राजां लपेटां में आयगी। उणनैं एकदम यूं लखायो, जांणै वा मोरचा माथै ऊभी है अर सनमुख दुसमण काटकियोड़ौ आवै है। एक छिन में वा मटकी एक कांनी उछाळ नैं काटीड़ा सूं जाय भिड़ी। गव्व करतां काटीड़ा रा दोन्यूं कांन उणरै पंजां में झिलग्या। अर झिल्या तो पछै इसा झिल्या के जांणै संडासी में सांप। काटीड़ै घणाई फूंफाड़ा किया, घणोई आफळियो पण राम भजो नीं छूटै कांई जीव! छेवट थाक नैं पोठा करण लाग्यो थच्च-थच्च।

राजां हाकौ कियौ--म्हारै ओरणा री पल्लौ तो थोड़ौ म्हारै माथा पर नांख दो रे नां जोगां! मूंछाळा व्हैनैं एक मामूली टोगड़िया सूं डरनैं भाग ग्या। फिट रै नादारां थांनैं! अबै थांरा बाप रै नाथ घालणी व्है तो घालौ क्यूं नीं आघी। म्हारै हाथां में झिल्यौड़ौ ओतो टें ई नीं कर सकैला। इतरौ सुणतां इज तो मोटचार नीचा माथा कियां अर वड़ियौड़ा आया अर एक छिन में ऊभा काटीड़ा रे इज नाथ घाल दी।

उण दिन सूं राजां रे करार री चरचा गांम में तो कांई पण पूरा

चोखळा में होवण लागी। वात सुणी जिकोई थूथको नांखण लागो। साथीड़ां लेजा नैं कागद लिख्यौ तो उणनै ई ए समाचार लिख्या। मुल्क री उतरादी कांकड़ माथै गोडां-गोड़ां लग बरफ में ऊभै, उणैं ओ कागद पढ़यो तो उणरी छाती फूलीजगी। वो सोचण लागो-राजां फूल जिसी कोमळ अर वज्जर जिसी कठोर, चाद जिसी फूटरी अर चंडिका-सी विकराळ। अठै उणरै सागै वा ई बदूक लिया ऊभी व्हैती तो किसीक नामी रैवतौ। इतरै तो उतराद मे काई खुड़को व्हियो, उणैं एक हाथ सू दूरबीण निजरां आगै लगाय नैं दूजै हाथ सू बंदूक काठी पकड़ली।

उडीक

यूं रांमगढ़ बीसूं वार आयौ गयौ हूं पण अबकाळै उठै जावणौ घणौ आं झौ लाग्यौ। मन जांणै कियांई होवण लाग्यौ। पे'ली जद कदेई रांम-गढ़ जावण रौ मौकौ मिळतौ, मन में घणी हूंस रैवती, च्यार दिनां पे'लीज एक अणबोलणी खुसी मन में भरीज जावती अर मन हर वगत भरयौ-रैवतौ। मोटर में वैठतौ जरै तौ मोटर री चाल रै सागै वा खुसी पण तर-तर वधतीज जांवती अर मोटर रा हच्चीड़ां रै सागै उणमें पण उछाळा आंवता रैवता।

पण आजकी हालत सफा उल्टी ही। गाडी सूं उतरनै मोटर कांनी रवांनै व्हियौ तौ पग इसा भारी लाग्या जांणै मण-मणवजन वंध्यौ व्है। उदास मन सूं वांनै कियांई ठिरड़तौ-ठिरड़तौ मोटर में आयनै वैठ्यौ तो वैठतांपांण एक जोर रा हचीड़ा सागै वा स्टार्ट व्हैगी। जांणै उणनै वैम हो कै म्हूं आळांणौ नीं कर दूं अर पाछौ रवांनै नीं व्है जाऊं।

काचा मारग पर धूड़ रा गोट उठता रह्या अर हच्चीड़ां रै सागै नैंना-नैंना गांम लारै छूटता रह्या। अवै तर-तर रांमगढ़ ढूकड़ौ आवण लाग्यौ। पे' ली पनजी चव्हाण री वेरौ आवैला अर पछै अरणां वाळौ सेरियौ। लांवा सेरिया रे दोनूं कांनी कोरा अरणा इज अरणा। सेरिया वारै निकळतां ई तो रांमगढ़ रा झाड़का दीखण लाग जाएला अर पछै तो पूगतां एक चिलम भरै जितरी जेज लागैला। मोटर ऊभी रैवै उठै खासी भीड़ व्हैला। कोई रे मोटर में वैठनै आगै जावणौ व्हैला तो कोई

अमर सूंनड़ी

किशा रै ई साम्ही आयो म्हैला। पाछली साल म्हूं आयो जद धापू अर किसन् दोन्यू बैन-भाई म्हारै साम्हां आया हा। किसन् तो म्हनै देखता पान ताळियां बजाय-बजाय नै नाचण लागग्यो हो—मामोसा आया रे··· मामोसा आया !···अर धापू तो पकड़ धावळियो हाथ में अर दड़ी छूट परां दोड़गी ही—बाई नै बधाई देवण नै कै उणरो बीरो आयग्यो है।

भ्रड़ाड़ ' राड़ीड़···हुब्बोड़···हुब्बोड़ ! मोटर रा छाजला में मिनखां रा छोटा मोटा दांणा उछळ-उछळ नै नीचा पड़ता हा। जितरै तो एक जोर रो हुब्बोड़ो लाग्यो अर म्हारी भेर टूटी। रामगढ़ आयग्यो हो। मोटर ठमता ई लोग-बाग चढण उतरण लाग्या। म्हू ई नीचै उतरियो अर बेग उठायनै रवानै व्हियो। भीड़ मूं बारै निकळयो तो धका ,मापै ऊभा एक टाबर माथै निजर पड़ी। मन में वैम व्हियो-किसनू तो नीं है कठैई ? ना-ना, ओ किसनू हरगिज नीं व्है सकै। बाल बिखरयोडा, हाथा-पगां पर मेल रा थारड़ा जम्योड़ा, अर सरीर पर फगत एक मैलो सीक कुड़तियो। मूंडा में हाथ रो अंगूठो घाल्यां वो खरी मीट सूं मोटर कांनी देखै हो। म्हूं थोड़ो नैड़ो गयो। अरे ! ओ तो सागैई किसनू इज दीसै। म्हारै अचूभा रो तो ठिकाणोईं नीं रह्यो। म्हैं उणनै धीरैसीक बतळायो—किसनू ? पण उणं ध्यान इज नी दियो। वो तो अंगूठो चूसतो, आंख्यां फाड़-फाड़ नै मोटर कानी देखै हो।

म्है फेरूं जोर सूं कह्यो भाणू ! अबकै उणं म्हारै कांनी देख्यो। मोटी-मोटी आंख्या, सफेद-सफेद कोया में नैनी-नैनी कीकियां, गाला माथै आसूवां रा टेरा सूखोड़ा। छिन भर तो वो देखतो इज रह्यो। पछै एक दम मुळक नै बोल्यो-मामोसा थे आयग्या। म्हूं तो रोज थारै साम्हा मोटर माथै आवूं।

—जरै इज तो म्हूं थनै मिळण नै आयो हूं भाणू !

—पण म्हारी बाई कठै मामोसा ? बाई सा तो रोज कैवे के अबै उणनै सफाखाना सूं छुट्टी मिळ जाएला अर थारै मामोसा उणनै लेयनै आवैला। वो अठी-उठी देखनै बिलखो पड़ग्यो अर म्हनै जवाब देवणो भारी पड़ग्यो। म्हूं अबै उण भोळा कमेड़ा नै काई जवाब देवतो। उणरा विस्वास नै कियां पंडत करतो। जिण उम्मेद री डोर माथै वो जीवै हो उणनै कियां तोड़तो। जिण बरत रै सहारै वो वेरा में उतरियोड़ो हो,

उणनें लियां आइनौ । म्हैं थांरौ समझ नें व क्यौ

—आठै रात थांरी है आठै, वा मावा जैन नीं रै [illegible] उणनें मना·

याना सू छुट्टी मिळै कोनी । म्हैं उणनें थांरी में जनाव दियौ ।

—कद छुट्टी मिळैला ? थे मैं कूड़ा बोलो हो, म्हनें सिखावौ ।

वौ आखी आपरै [illegible] लागग्यौ । म्हैं उणनें सावी रै [illegible] में दुतकारण लागग्यौ वो [illegible] भनीजग्यौ । म्हैं बीड़ [illegible] ने छानौ राखियौ ।

देख तू नीं समझणौ है वी भाणू ! आठै कितरा दिन पछै मांदी पड़ी ही, अबै दवा नीं करावै तो [illegible] व्है जावा ? ठीक व्हैनाई म्हूं उणनें सेवा में आवूंला । [illegible] वारै आपनै उणं [illegible] भरनैं [illegible] भेजणा है अर कियायौ है कि इणा में तू थापू नैं एक ई मत दीजै ।

अबै जावतौ उणनें थोड़ौ भागस बांधौ । वो आंख्यां पूछतौ बोल्यौ—

म्हनें ई बाई सनैं ले चालौ नीं मामोसा ! म्हूं उणनें कोई दुख नीं दूला । बाई बिना म्हनें कांई चोखौ नीं लागै । अठै म्हनें भाईसा लड़ै अर धापूड़ी रांड म्हनें रोज कूटै । बाई तो म्हारै हाथ ई नीं लगावती ।

—थूं नांनीजी सनैं चालैला किंतू ? वे थारौ घणौ लाड राखैला अर उठै थनैं कोई नीं कूटैला ।

म्हारी बात उणनें जची को नी । थोड़ी ताळ वो ठैर नं वो बोल्यौ—

—म्हारै तो बाई सनैं जावणौ है, नांनीजी सनैं नीं जावणौ । पछै म्हारौ हाथ पकड़नैं फेर बोल्यौ—

—मांमोसा छोरा म्हनैं कैवै के थारी बाई तो मरगी ! मन में एक धक्की सी लागी, तो ई म्हैं कह्यौ—

—सफा कूड़ बोलै नकटा, वे थनैं यूं ई चिड़ावै । घरां आयनैं म्हैं उणनैं नीचौ आंगणै उतार दियौ । पण हे रांम ! इण घर री आ हालत ! कठै तो वौ बुहारियौ-झाड़ियौ, नीपियौ-गूंपियौ देवता रमै जिसौ कुंपली व्हैं जिसौ घर अर कठै ओ भूत खांनौ । ठौड-ठौड़ कचरा रा ढ़िगळा, आंगणा रा नींवड़ा हेटै बींटां रा थोकड़ा,ऐंठवाड़ा वासण,उघाड़ौ पणेरौ अर भरणाट करती माखियां । सगळा घर माथै एक अजांणी उदासी, एक अणबोली छिया ।

म्हैं धापू नैं हाकौ कियौ तो वा पाडौस रा घर सूं दौड़ी आई । पण सदैई का ज्यूं आयनैं पगां में बाथ नीं घाली । दस बरस री छोरी छः महीनां

मे इज जाणं डोकरी व्हैगी ही। सूखोड़ो मूडो, मैला-मैला गाभा, माथौ जाणं सूगणियां रौ माळौ। म्हैं माथै हाथ फेरियौ तौ वा छिबरा-छिबरा रोवण लागी। नीठ बोली राखी।

हाथौ हाथ घर री सफाई करनै नौवड़ा री छिया में मांचा माथै बैठ्यौ तौ मन आणं कियांई व्हैग्यौ। घर रा सूणा-खूणा सू बाई री याद जुड़ियोड़ी ही। यू लाग्यौ जाणं वा रसोड़ा मे बैठी रसोई बणाय री है अर अबार म्हनै बुलाय लेला। जाणं वा ग्वाड़ी में बैठी गाय दूह री है अर अबार किसनू नै गिलास लावण रौ हाको कर देला। जाणं ढालिया मे बैठी खरटी फेर री है अर अबार बीरौ गावणो सरू कर देला।

म्हनै वीरौ सुणण रौ अर बाई नै वीरौ गावण रौ कितरौ कोड ही, जिणरौ कोई पार नी। म्हूं आवतौ जितरी वार लारै पड़ जावती—बाई एकर तौ वीरौ सुणाय दे! अर वा झीणा कठ सू सरू कर देवती। आज ई इण अळस दो पार री पो'र में यू लाग्यौ जाणं वा साम्हा बैठी वीरौ गाय री है—

बागा मे वाज्या जगी ढोल
सहरा मे वाजी सहनाईजी
आयौ म्हारौ जामणजायौ वीर
चूंनड़ तो ल्यायौ रेसमीजी
...   .
मेलू तौ छाब भरीज
तोलू तो तोला तीसजी
ओढ़ू तो हीरा खिरजाय
भरू तो हाथ पचासजी
...   .
बागा मे वाज्या जंगी थोल
सहरा मे वाजी सहनाईजी
आयौ म्हारौ जामण जायौ वीर
चूंनड तो ल्यायो रेसमीजी

लारली साल म्हूं आयो जद बैठी-बैठी बीरौ सुणतौ हो अर बाई गावती ही, उण वखत न जाणं गावतां-गावतां काई व्हियौ सो उणरौ कठ धूजण लाग्यौ अर आंख्यां भरीजगी। म्हैं उणरौ हाथ पकड़नै कह्यौ—ओ मनू

वाई ? तो बोली—कांई हीं रे बीरा, मन जाणै यूं ई किणां ई व्हैग्यो। सोच्यो थूं रोज बीरो गवावै पण कुण जाणै, सागण काम पड़ियां जद म्हूं रैस्यूं कै नीं ?

—थूं इसो गजब सोचै ईंज क्यूं ? म्हैं कह्यो।

—यूं ईं रे भाई, इण कानी कागा री कांई भरोसो, आज है अर काल नीं। दूजो जिणनैं जिण चीज री हूंस घणी व्है, वा पूरी नीं व्हिया करै।

गळा में कांटा-सा अटकण लाग्या अर नींवड़ा माथै होए कागला बोलण लाग्या—क्रां…क्रां…क्रां ! किसनू कठी गयो ? रसोड़ा में धापू एकली वैठी साग वनारती ही, उणनैं पूछ्यां तो जाण पड़ी के गनला कमरा में सूतो व्हैला। जाय नै देख्यो तो आंगणा माथै फाटा-तूटा गाभा विछायनैं सूतो हो अर बाथ में एक ओरणो भरचोड़ो हो। म्हूं खासी ताळ ऊभी-ऊभो उणरा भोळा-ढाळा चेहरा नै देखतो रह्यो। वो रैय-रैयनैं आपरा नैना-नैना होठां नै भेळा करनै ऊंघ में ईंज बोबो चूंघतो व्है ज्यूं बसड़-बसड़ करतो हो।

धापू बोली—ओ रात रा यूं इज सोवै मामोसा ! जे बाई रा कपड़ा इणनैं ओढ़ण विछावण नैं नीं देवां तो इणनैं ऊंघ ई नीं आवै। एक रात ओ भाईसा साथै सूतो तो सगळी रात जकियो। ओ कैवै के इण कपड़ां में म्हनैं बाई री वास आवै, जिण सूं ऊंघ झट आय जावै। इण वास्तै इज भाईसा ए कपड़ा धुपावै कोनीं।

म्हनैं म्हारी पीळकी गाय रो वो लवारियो याद आयग्यो जिको फगत वीसेक दिन रो हो के उणरी मा मरगी। तीन दिन तांई वो ठांण सूंधतो रह्यो, जठै उणरी मा बांधती। सेवट चौथे दिन डेंडाड़ करतै प्रांण छोड़ दिया। अर ओ लवारिया जिसो इज अवोध किसनू जो फगत पांच वरस रो है अर इणरी जांमण मरगी, उणनैं जे मायड़ रा परसेवा री वास सूंध्यां विना ऊंघ नीं आवै तो इणमें इचरज री बात ई कांई ?

थोड़ी ताळ में वो जाग्यो तो म्हैं उणनैं कह्यो—चाल भांणू थनैं सिनांन कराय दूं। देख थारै डील माथै कितरौ मैल जमग्यो है अर कुड़तौ किसौक मैलौ घांण व्हैग्यौ है। थनैं सूग ई नीं आवै भोळा ? पे' ली तो थूं कितरौ साफ-सुथरौ अर फूटरौ फर रौ रैवतौ। अबै थारै कांई व्हैग्यौ है ? वो एक सबद ई नीं बोल्यौ, चुपचाप म्हारै लारै आयग्यौ। पण म्हूं उणरौ कुरतौ

उतरावण लाग्यौ तो वो एकदम रीसा बळतौ बोल्यौ—

पे'ली माथौ मत काढौ नैं पे'ली बांयां उतारौ—यूं—वो आपरौ नैनो सो क हाथ ऊचौ करनै बोल्यौ। म्हैं उणैं कह्यौ ज्यूं पे' ली बांया में सूं हाथ काड नैं पछै उणनैं बाल्टी रै खनै बिठाय नैं लोटौ भरनै उणरै माथा पर कुड़ण लाग्यौ, तो एक दम लोटौ म्हारैं हाथ सूं झड़पनैं फेंकतौ थको बोल्यौ—

—पे'ली हाथां पगां रै मैल करै के पे'ली माथा माथै पांणी नांखै ! इतरा मोटा व्हैग्या तो ई सिनांन करावणौ ई नीं आवै। बाई तो सब सूं पे' ली म्हारा हाथ-पग भिगोय नैं धीरैं-धीरैं मैल करती। पछै मूंढौ धोय नै लाड करती अर पछै माथा माथै पाणी नामती ए तो ले पाणी नैं धड़ ड़ ड़ ड़ ! आ धापूड़ी ई रांड रोज यूं इज करै, अरै इज तो म्हूं सिनांन नी करूं।

म्हनैं दुख में ई हसणौ आयग्यौ। म्हैं कह्यौ ले भाई, थाईकरावै ज्यूं इज सिनांन करावूंला थनै। पछै तो कांई नीं ? म्हूं उणरा हाथ-पग भिगोय नैं डरतौ-डरतौ धीरैं-धीरैं मैल करण लाग्यौ। कांई भरोसौ रीसां बळतौ अबकै लोठौ लेयनै म्हारा माथा में नी ठरकाय दे। पण इसी कोई बात नी व्ही। काम उणरी मरजी रै माफक होवण सूं वो वातां करण लाग्यौ—

—बाई तो म्हनै खोळा में बिठाय नै धीरै-धीरै दूध पांवती। गरम व्हैतो तो पे'ली आंगळी घाल नैं देख लेवती। फीकौ व्हैतो तो चाखनै खांड थोड़ी फेर नाखती। अर ए भाई सा तो सांम्ही बैठनैं माहाणी पावैं। दूध में घी नांख देवै अर पछै जोर कर-कर नैं कैवै—पीई! पीई! पीई ! अर आ धापूड़ी रांड लारैं ही लारै···पीए क्यूं नीरे ! पीए क्यूं नी रे ! है इज किसी रांड, डकण व्है जिसी। रीस तो इसी आवै के रांड रा लटिया तोड़ नै नाख दूं। म्हनैं दूध में तारा देखनै ऊबका आवे। एक दिन तो उल्टी व्है जाती। पण नी पीऊं तो भाई सा कूटैं। मामोसा बाई आवै जितरै ये अठैइज रही जौ, आईजौ मती, हो !

म्हैं उणनै थावस देवतां कह्यौ—अबै थूं खासौ मोटौ व्हैग्यौ है गेला, कोई मोवौ चूंघतौ नैनो टाबर तो है कोयनीं। आखौ दिन बाई-बाई कांई करै ?

··· चढ़ाय नै बोल्यौ—

··· ? बाई तो अबेई म्हनै रोज

बीनो न्हावण आवै।

उणरा [illegible] नग-नग में आवै निगोड़ी अंगूठी री म्हनै याद आवसी। [illegible] मैं [illegible] अंगूठो [illegible] धकलो पड़्यो हो। [illegible] उणनै पूछ्यो नाई बनै किण बगत बीनो न्हावण नै आवै के सिनान ?

किण बगत काई रोज [illegible] रा आवै। नणी तावळ आंगणा रा नींबड़ा नीचै ऊभी रैवै। पछै [illegible] म्हारै मनै आवै, म्हारी न्हाव करै अर पछै गोदी में ऊनाव में म्हनै बीनो संभावै।

—नितरोज आवै ?

—नित रोज।

कदैई गळती नीं करै ?

—एकर म्हूं भाई सा रै नागै गयो हो।

उण रात बाई कोनी आई। नीं तो रोज आवै म्हूं उणनै सिनांन कराय नै कपड़ा पेहराय दिया। बाल ठीक करनै आंख्यां में काजळ घाल्यो तो खासो ठीक दीखण लाग्यो म्हूं कह्यो देख भाणू, यू सफाई सूं रैवणो, जिणसूं बाई थारो घणो लाड रानैना। अर यू मैलो-कुचैलो घांण व्है ज्यूं रह्यो तो वा आवैला ई नीं।

म्हारी वात उणरै हींयै ढूक गी। पांटकी हिलावतो बोल्यो—अबै रोज सिनांन करूंला- कपड़ा ई नवा पेहरूंला।

धीरै-धीरै दिन ढळग्यो। आंगणा री तावड़ो रसोई रा नेवां माथै पूगग्यो, नींबड़ा माथै पंखेरू किचकिचाट करण लागा, ग्वाड़ी में ऊभी टोगड़ी तो वाड़ण लागी अर जीजाजी रे घरै आवण री वेळा व्हैगी।

बाई रांम चरण हुयां पछै वांरी कांई हालत ही, म्हैं सगला समाचार सुण लिया हा। जे इण टाबरियां री बंधण नीं व्हैतौ तो वे कदैई ओ घर-वार छोड़नैं नाठ गया व्हैता। पण आ एक इसी बेड़ी ही जो काटियां नीं कटती ही। इण वास्तै नीं चावतां थकांई वांनैं दुकान माथै बैठणो पड़तौ अर दोन्यूं वखत काया नैं पण शाड़ौ देवणो पड़तौ।

टगू-मगू दिन रह्यां वे घरां आया अर म्हनैं मिळनैं काम में लागग्या। दिन आथमियां गाय दूह नैं धापू रै हाथ रा काचा पाका टुकड़ा खायां पछै वातां होवण लागी। वाई री चरचा आवतां ई वांरी आंख्यां जळ जळी व्हैगी। वे बोल्या —म्हारी चिंता नैं म्हूं सहन कर सकूं हूं: पण इण टाबरियां

अमर चूंनड़ी

61२४

रा दुख नैं सहन करणो म्हारै हिम्मत रै आगै री बात है। धापू नैं तो फेर कियांई धावस देय सकां, समझाय सकां, उणरा दुखनैं थोड़ो हळको ई कर सकां। पण इण पसूड़ा नैं कियां समझावां, इणनैं कांई कैयनैं धीरज बंधावां ? इणरै दुख रो तो नी दिन रा पातरो पड़ै अर नीं रात रा। जिण विस्वास री डोर माथै ओ जीवै है, वा जे आज टूट जावै तो इणरो जीवणो कठण है, आ पक्की बात है।

जिण दिन सू म्हूं इणरी मा नैं खांधै चढ़ायनै पुगाय नै आयो हूं, उण दिन सू लगाय नै आज दिन तांई ओ नितरोज मोटर माथै जावै अर उणरै आवण री वाट उडीकै। मोटर पांच-दस मिनट लेट भलाई व्हो पण इणरै जावण में जेज नीं व्है।

बोलतां-बोलतां फेर वारो गळो भरीजग्यो अर म्हारी आंख्यां पण जळजळी व्हैगी।

रोमगढ़ म्हूं पूरा सात दिन ठहरियो अर आठमैं दिन रात री मोटर सू रवानैं व्हियो तो किसनू उण वखत गहरी नींद में सूतो हो। म्है उणनैं जगावण रो विचार कियो तो दिमाग में एक झटको सो लाग्यो। कुण जांणै वाई नींवड़ा रे नीचै ऊभी व्हैला के गोदी में ऊंचाय नै उणनैं चूंधावणो सरू कर दियो व्हैला। सो सूतोड़ा रै इज एक हळको सीक वाल्हो देय'र म्हूं रवानैं व्हैग्यो।

61२४

भारत भाग विधाता

एक नैनोसीक गांमड़ो। नीठ सौ सवा सौ घरां री वस्ती। रेल्वाई ठेसण अठा सूं बारै कोस पड़ै। वस कठैई आघी-नैड़ी ई नीं चालै। गांम दुसाखियौ होवण सूं गांम वाळां नैं फगत लूंण मोल लेवणौ पड़ै। बाकी सगळी चीजां तो उठै इज पाक जावै। गांम में घणौ दूध, घणौ घी, कोठियां-कणारां में ऊन्हौ-ठाडौ धांन, राजा राज नैं प्रजा चैन। नीं कोई दुख अर नीं कोई दुआळ। लोगड़ा प्रभु छांना दिन काढ़ै।

पण उण गांम में एक नवी वात वणी। उठै राज री स्कूल खुली। जांणै भरिया तळाव में किणई भाठौ नांख दियौ अर पांणी हिलोळै चढ़ग्यौ। टीपरिया जितरौ गांम, वात फैलतां कांई जेज लागै।

……रांमा बापू रै नोहरा में स्कूल खुलैला—इसकोल नीं स्कूल!

—राज रौ मास्तर आयौ है—सरकारी एलकार—पटिया पाड़ियोड़ा—धारीदार ढीलौ-ढीलौ जांघियौ नैं कुड़तौ—आंख्यां माथै चस्मौ—डोळा जांणै मारकणी भैंस—ध्यान नीं राख्यौ तो अवार सींगड़ौ घुसेड़ दे ला—अळगा रहीजौ—राज रौ वेली है भाई…

राजा जोगी अगन जळ, यां री उलटी रीत
डरता रहीजै फरसराम, थोड़ी पाळै प्रीत…

चिलम भरै जितरी जेज में गांम रा सगळा छोकरा भेळा व्हैग्या। पांणी जाती पणिहारियां रा पग ठमग्या अर चिलमां पीवता अमलियां री चिलमां हाथ में इज रैयगी। देखतां-देखतां रांमा बापू रौ नोहरौ थवौथव भरी-

जग्यौ। कांणा घूघटा में नूरिया पिंजारा री बीबी चिमूड़ी बोली —

—ए मा! मास्तर रै तो डाढ़ी मूछ ई कोनीं सफा टांवर इज दीसै।

सनैं ऊभी वरजू भुआ नैं आ बात जची कोनी। वा फाटोड़ा बांस री गळाई भरड़ा सुर में बोली—कोई मरतंग व्हियो व्हेला बापड़ारे, जिण सूं भद्दर व्हियोड़ो है। बाकी नैंनो कंण रौ, घणोई मातो-मगणो है। गांमसाऊ पाडा व्है जिसो।

मास्तर मलूकदास तीसरी पास अर चौथी फेल हो। बाप नैंनपण में इज मरग्यो अर मा अणूतो लाड राख्यो जिण सूं पूत परवार ग्या। घणा बरस तांई तो कीतणियां री मंडळी में भरती होयनैं—झट जावो चंदणहार ल्यावो-घूंघट नहीं खोलूंगी—गावतो अर घुघरा बजावतो गांम-गांम फिरतो रह्यो। पण भलौ व्हैजो भारत सरकार रो सो मुल्क में पंचसाला योजनावां सरू व्हैगी। जिणसूं मलूकदास नैं ई बी० डी० ओ० ऑफिस में चपरासी री नौकरी मिळगी। मलूकदास, चपरासी मलूकदास बणग्यौ।

भाग सूं उणरी ड्यूटी बी० डी० ओ० सा'ब रै घरै इज लागी। वो जितरौ नाचण-गावण में हुसियार हो, उतरोई हाजरी साजण में पण पाटक हो। सा'ब रै पग दबावण सूं लगायनैं बीबीजी रै पेट मसलणौ, अर टाबरां रे हूगा धोवण तक रौ सगळौ चार्ज उण आपरै हाथ में ले लियौ। अर साल भर में तो बी० डी० ओ० सा'ब नैं गाळ नै पांणी-पांणी कर दिया। एस० डी० आई० सा'ब री सलाह सूं तिकड़मबाजी सूं बंबई हिन्दी विद्या-पीठ री सर्टिफिकेट कवाड़ नै देखतां-देखतां चपरासी सुं मास्टर बणग्यौ।

इण भांत पे'ली तकदीर खुल्यौ मलूकदास री अर अबै इण गांम री।

वाड़ा मे भीड़ घणी होवती देख नैं रांमो बापू खंखारो करतां छोकरां री पलटण कांनी देख नै बोल्या—घणा दिन व्हिया है डीकरां उद्यम फिरता नैं, अबै कांवड़िया उडैला जरै टा पड़ैला। भणेतर घणी दोरी ई। कह्यौ है—धी दोई लौ सासरौ अर पूत दोई लौ पोसाळ।

इतरौ सुणतां इज दो एक बीकण छोरा तो हिरण्यां रै ज्यूं कांन ऊंचा करनैं पड़ भागा। अर लारली नागी-तड़ंग पलटण पण लटपट-लटपट करतो बाडै चूटी थारा कांन। जाणै चिड़ियां में ढळ पड़ग्यौ।

चिमूड़ी ही...ही...ही...करनैं हसण लागी ही...ही...ही...ही! मास्तर चस्मौ उतार नैं खरी मीट सूं उण कांनी देखण लाग्यौ। जितरैं तो वरजू भुआ चिमूड़ी कांनी देखनैं बोली—कोई छोटी गिणै न कोई मोटौ

अर आगो दिन ओ गांव री [illegible] लागणो । लुगाई री आन है, थोड़ी [illegible] चाहिजे ।

[illegible] इज निमूंगी [illegible] नाम लियो अर दूजी [illegible] पाळी लुगायां पण [illegible] तळाव [illegible] । [illegible] माना री चासणी पेट लियो ।

दूजोड़ै दिन इज स्कूल रो सिरी गणेश कियो । [illegible] टाबर टोळी मना [illegible] अर गिलर है, [illegible] कियां जाई री । [illegible] नाळेरां रो डिगलो लाग नाळेर लेग-लेग नैं हाजर किया । [illegible] भगीजग्यो ।

गांव वाळां मिळनैं [illegible] कियो [illegible] पंछी—आंपणैं गांव मे आयो है, कुण तो इणरै [illegible] अर कुण इणरै पांवेला । एकलो जीव है—सो पांनारी लकड़ी अर [illegible] रो बोझ । टाबर जितरा पढ़ण नैं आवै, वां रै हिसाब सूं वारी बांध दी जावै । मास्तर घर-घर जाय नैं जीम लेसी अर सांझ-सवार वारी-सर दूध री लोटी पण मंगाय लेसी ।

इण भांत मलूकदास रै तो मास्तरी फाचरै आई पण आई । कठै तो वे वी० डी० ओ० रा ऐंठा-जूंठा वासण मांजनैं लूखा-सूखा टुकड़ा खावणा अर कठै आ सायबी भोगणी । रोज टैंमसर जीमण नैं नूंतो आय जावतो अर वो वांनैं वैठ्योड़ा वींद रै ज्यूं रोज बण-ठण नैं नित्त नवै घर जीमण नैं पूग जावती । टावरां रा माईत सोचता—महीणै में एकर वारी आवै, मास्तर नैं चोखी रोटी घालणी चाहिजै । खावै मूंडो अर लाजै आंख । आंपणै टावर माथै पूरी मैंणत करैला इणारै पढ़ायोड़ा इज मुंसी अर थांणा-दार वणैं । कुण जाणैं आंपणैं छोकरा रा ई तकदीर खुल जावै ।

इण वास्तै जिकौ मावां पोता रा टावरां नैं तो विलोवणा वारी रै दिन पण एक टीपरिया सूं वेसी घी मांगणैं पर ठोला ठरकावती, वे इज वारी वाळै दिन मलूकदास नैं ताजा घी में धपटमा गळगच्च चूरमा करा-वती । घर में तो टावर दूध री खुरचण वास्तै ई कूटीजता पण मास्तर रे वास्तै निवांणिया दूध री लोटी जळोजळ भरीज नैं टैंमसर पूग जावती।

थोड़ा दिनां में इज मलूकदास रे डील मातै पसम आयगी । कपड़ां लत्तां में ई फ़रक आयग्यो अर आदतां ई खासी वदलगी । धीरै-धीरै देसाई वीड़ी छोड़नैं पनामा सिगरेट पीवणी सरू कर दी । वो मन में सोचतो—उमर रा पाछला दिन तो फोगट इज गमाया ।

अमर चूंनड़ी

रामा बापू रा बाड़ा मे जठै स्कूल गुनी ही, दो मोटा-मोटा भूंगा हा। बांमे सूं एक मे स्कूल चालती अर दूजोड़ै मे मास्तर रैवतौ। बाड़ा में चौगान मोकळौ हो, इण वास्तै एक खूणा में गांम साऊ फाटक खातर डीगी-डीगी बाड़ री एक बाड़ोटियौ बणायोड़ो हो—जिणरै आगै एक जंगी नींबड़ो ऊभो हो। बाड़ा में मास्तर रैवण सूं रामा बापू रै फाटक री देण मिटगी ही। बाड़पंच होवतां थकांई बापू ढोट हा। इण वास्तै फाटक में आयोड़ा ढ्ढियार ढाडां री रसीदा काटण में वांनै पूरी दिक्कत रैवती। मास्तर रै कारण वांरी आ दिक्कत मिटगी। मास्तर नै रसीद बुक सूंप नै बापू तो छुटा व्हैगा अर मास्तर निहाल व्हैग्यौ।

मलूकदास घाट-घाट रो पांणी पियोड़ो एक छंटमी रकम ही। उणै देख्यौ के गाम में नीन च्यारेक आसामियां इसी है के वांनै 'फोवर' में रागणी पणी जरूरी है। वो आ वात पण आछी तरै सू जाणं हो के मालियां गुड़ सू राजी रैवै। इण वास्तै उणै नींबड़ा रे नीचै चूल्हो बणाय नै चाय री इंतजाम कर दियो अर गनै ठाठियो भरनै जरदो पण धर दियौ। मास्तां नै दूजो चाहिजै ई कांई ? दिन उगतां ई जाजम जम जावती। हांडी भरनै चाय ऊकळती, अमलां री मनवारां व्हैती अर चिलमां सूं धूंआ रा गोट उठता। गांम री भली-भूंडी बातां व्हैती अर आप री टंटा री पंचायती बैठती, डंड-पूळ चालीजता अर डंड रो गांम-साऊ हिसाब मास्तर नै सूंपीजतो।

चाय री चुस्कियां अर चिलमां री फूंका रै बिचाळै मास्या मलूकदास। री तारीफां रा पुल बांधता—वाहरे मास्तर वाह ! है पूरी खांनदांनी आदमी। दूजोड़ौ कैवतौ—वस्नीरा भाग है जरै इसौ हीरो मिळयौ है, नी तो इण जमाना में इसा आदमी सोध्या ई को लाधैनी। तीजोड़ो टेको राखतौ—दो एक बरस ए अठै रैयग्या तो गांम रा सगळा छोकरा 'फिरंट' व्है जाएला। म्हारी पोतो तो अबै सू इण इंगरेजी बोलण लागग्यौ है, म्हनैं कैवै—यू डेम फूल ! म्हूं कैवूं रे बनिया फूल तो थूं है, म्है तो पाका पांन हां। मोटोड़ो मारो ई नाक में गुणगुणावतो– क्यू नी सा इंगरेजी बोलणो कांई वड़ी बात है, मास्तर बड़ा विदमान है। कितरा तो इणा नै फलमी गाणा आवै अर कितरा इणानै नाच आवै। मूंडा सूं बाजौ बजावै जांणै सागी राग इंगरेजी बाजौ बाजण लाग्यौ। म्हारै रामूड़ो ई थोड़ो-थोड़ो बजावणो सीखग्यो है। होठां आडी ऊभी हथाळी राखनै यूं बजावै

[illegible] सुकाम ? [illegible] !

माडो —[illegible] ···[illegible]···! —हूँ···
गमन्ना [illegible] एक गाने [illegible]
हू··· हू ··! [illegible] आय जावनी
आवना।

नानी बाबा अर [illegible] सुनने [illegible] ? [illegible] फली
अर [illegible] यान मानो। सगळांई
गागा अर [illegible] लेय आवो।
गाम [illegible] गाम री [illegible] है, सो
उणनैं संभाळण री [illegible] बांध दीना,
म्हूं सभाळ लेसूं। [illegible] लेवै ज्यूं
पछै देखजो [illegible] मुंडाय दूं। लोगळा रा दूजा
पूरी गांम [illegible] इण जमाना में रेडियो गांम री रूपक है।
गाम देखता [illegible] आवैला। [illegible] —बात तो आप लाख रुपियां री

मागा बाटी [illegible] बोलना [illegible] उणानें मनावणा आपरै हाथ री
बनाई-ना पण थांरी बातू मानें जद है। धारो जियां कराय सकां।
बात है बाकी तो सगळो गाम म्हारी मुट्ठी में है, एक बळद री मोल!
अर आगे जायनें बापड़ा रेडिया री जिनात ई कांई ? रुपिया आपरै गनैइज है। आप
गांम रै वास्तै भार ई कांई है। गांमसाऊ जितरै खूब धूं धावो
जोधपुर जाय नै रेडियो लेय पधारो। अठे विराजो आपरै बापरो। गांम
अर बदळी व्हैनैं पधारो जद रेडियो आपरो नैं मेहरबानी राखो, म्हांरै
री तरफ सूं आपनैं भेंट। आप म्हांरै ऊपर इतरी थोड़ा इज हां।
टाबरां नै जिनावरां सूं मिनख बणावो तो म्हे कोई नुगरा रेडियो आयग्यो। असली

अर महीना भर में स्कूल में साचांणी
फलीप्स रेडियो—लौड स्पीकर समेत। पूरा गांम में खलबली मचगी। एक
अनोखी चीज गांम में आई—जो चाबी फेरियां मिनख रे ज्यूं बोलै

अबै रोज दिन उगै अर नींवड़ा पर सूं पूरा गांम में आवाज आवै—
ये रेडियो सीलोन का व्यापार विभाग है—अब सुनिये मोहम्मद रफी
को, दिल तेरा दीवाना में—

लाल-लाल-गाल ! लाल-लाल गाल !···और अब सुनिये एक बेहत-
रीन और दिलकश तस्वीर प्यार की रात में लता मंगेशकर को —

बिछिया मोरा छम छम बाजै !
बिछिया मोरा छम छम बाजै !

अर माथा पर बैठ्यौ सिगरेट री फूंक खांचतौ मास्टर, नीचै बैठ्या बाप री चुम्बिया लेवता मास्टर, स्कूल रै पिछवाड़ै घर रौ कांम-काज करती बिमूड़ी, पणघट पर पाणी भरती पणिहारियां, खेतां कानी जावता मोटयार अर पोळा पापरी छोरियां-सगळौ गाम एक सागै इज माथा हिलाय नैं गुणगुणावण लाग जावै—

बिछिया मोरा छम छम बाजै !
बिछिया मोरा छम छम बाजै !

अर उठीनै जिनावर सूं मिनख बणण री कोसिस करता छोरा आपस में वातां करै—

—ए बरगू थैं वाल यूं काई ओंमिया रे ?

—कीकर ?—पाटी रै थूक लगावतौ दूजौ बोलै ।

—अठीनै म्हारै कानी देख ! दोन्यूं कांनी गुफावा बीच में फूल अर सारै भमरिया ।

किसाक फूटरा दीसै ? माटसा'ब रै ज्यूं रा ज्यूं है कै नी ?

—हूं ! 'बाळां में गु फावा है तो काई व्हियौ —

बुसट्ट कठै ? फाटोड़ी सी अंगरखियौ अर बाल सिणगार नैं पधारया है। म्हारै बुसट्ट नैं देख, मायै फलमी आदमिया रा फोटू है। माट सा'ब रै टी सट्ट माथै ई इसा रा इसा फोटू है।

—जाए नी बापड़ आधी। मोडी धणी आई बुसट्ट वाळी एक झोगरौ कराय लियौ सो मिजाज बतावै। म्हारै काकौ अमदावाद जासी जद म्हूं ई मंगाय लेसूं। थारै तो इण झीगरा मायै फलमी आदमियां रा फोटू है अर म्हारै बुसट्ट माथै फल्मी लुगाया रा फोटू व्हैला। पण बेटा थनै तो आज माट सा'ब मार नांखला।

— क्यूं ?

—कालै सांझ रा थारी बारी ही अर थूं माट सा'ब रा पग दबावण नैं क्यूं नीं आयौ ? म्हे तो सगळा आया हा।

—अरे यार माटसा'ब नैं याद मत दिराईजै यार, आपां दोस्त हा नी यार !

—थूं तो थारै बुसट्ट रौ मिजाज बतावै हो नीं रे। खैर अबै पक्कौ

दोस्त बणणो व्है तो एक काम कर ।

—कांई ?

—थारा घर सूं एक कणियो मांगनै म्हनै दे ।

—कणियो कठा सूं मांगूं यार ! घर में म्हनै कुण मांगण दे । ठा पड़ जावै नी काको म्हारी टाट पांणी नी कर दे यार !

—धीरै बोल म्हाना !

—तू कणिया रो कांई करसी यार ?

—बीड़ी नै माचिस लावला ।

—तू बीड़ी पीवै ?

—हां, हां, पीवूं, कम्मी जोर ।

...छोरा पावड़ा जोर-जोर सूं बोलनै लिगो रे ए नांथिया-सिट डौन-सिटडौन !

...एक दू दू...दो दूना च्यार...दो दूना च्यार !

—बीड़ी में थनै कांई मजो आवै यार ?

—थूं बापड़ कांई समझै इण बाता नै । बीड़ी पीवण में कई गुण है, देख—

एक तो बीड़ी पीवण सूं मूछ्या वेगी आवै । दूजी बीड़ी पीवण सूं ताकत वधै अर तीजो ठाट कितरो रैवै —अपटूडेट वणयोड़ा व्हां—यूं दोन्यूं आंगळियां रे बीच में बीड़ी पकड़योड़ी व्है, पे'ली लांबी फूंक खांच नै धीरे-धीरे नाक सूं धुंओ काढां, पछै मूंडो ऊंचो अर होंट भेळा करनै तलवार कट मूंछां रे नीचै सूं फु ऊ ऊ ऊ ऊ ! जांणै अंजण आयो ।

बुसट्ट वाळो छोरो हसतो थको बोल्यो-तलवार कट मूंछां केड़ी व्है यार ?

—आंपणै मलूकिया माट सा'व रे केडी है, दिखै कोनीं । पण म्हूं मोटौ होस्यूं जद बंदूक कट राखस्यूं—देख यूं-पछै फु ऊ ऊ ऊ ! बुसट्ट वाळो छोरो पाटी में माथो घालनैं फेर हसण लाग्यो ।

—हसै कांई रे बोफा ! बीड़ी में गुण नीं व्हैता तो ए मोटा-मोटा आदमी क्यूं पीवता ?

—आंपणै माट सा'व तो धोळी बीड़ी पीवै यार !

—अरे देखली मलूकिया मास्टरिया री धोळी बीड़ी, आंपां काळी पीवांला । थूं रूपियौ तो लाव दोस्त, पछै देख थनैं फिरंट बणावूं । बोल

अमर चूंनड़ी

सागीक ?

—सार्थूसा

—पिनारी ?

—जिसम

—मिठारो हाथ माई डियर—यू डेम फूल !

···अरे आज हाल तांई दूध री लोटी क्यूं नी आई रे ? जिण री वारी है ?

—आज राजिया री वारी है सा।

—स्साला राजिये रा बच्चा ! दूध क्यू नीं लायोरे ?

—आज भैंस गुमगी सा, म्हारी मा ढूंढण नै गई है।

—भैंस पड़ी कुआ में अर ऊपर पड़ी थारी मा। दूध टैमसर आवणों चाहिजै। नी तो मार मार नै टाट पोली कर दूला।

★ ★ ★

रोज री एक लोटी सौ महीना री तीस लोटी। बरस रा महीना व्है बारै, अर तीन बरस रा छतीस। दिन जावतां कांई जेज लागै। हांकरता तीन बरस बीतग्या। मलूकदास रै पेट में गांम री मणावध दूध भर पी पूगग्यौ।

पण मलूकदास ई नुगरौ नीं हो। उणै गांम सूं जितरौ लियौ। उणसूं ई वेसी पाछौ देय दियौ। लियो जिणरी कीमत तो उणरै पोतारै पंडताइज ही पण दियौ जिणरी थाग पीढ़ियां लग हो। स्कूल में छोरा दो दूनी च्यार सूं आगै तीन दूनी छः भलाई नी सीख्या व्हो, पण बीड़ी पीवणी चोरी करणी, कूडबोलणो अर आगा-पाछौ करणी आछी तरियां सीखग्या। घरटी फेरतां हरजस तो बंद व्हैग्या अर फिल्मी गीत गूंजण लाग्या—अंखियां मिलाके—जिया भरमाके—चले नहीं जाना हो हो चले नहीं जाना। गांम में दो च्यार मुकदमा ई चालू व्हैग्या, जिणसूं लोग-बाग कई दफा रा आंणकार व्हैग्या। कैवण रो मतळब ओ के गांम रौ मोवळौ सांस्कृतिक विकास व्हैग्यौ।

पण इतरौ लिया पछैई गांमवाळां नै संतोस नीं हो। मुगरापणा सूं लोग मांयनै रा मांयनै चच-चच करण लाग्या—

···मास्तर आयै बरसाळै साली साल खेती करावै. टको एक खरच नीं करै अर मणां बंद धांन मुफ्त में कवाड़ लेवै।

दोस्त वणणो चै तो एक काम कर।

—कांई ?

—म्हारा घर में एक रूपियो लावनै म्हनै दे।

—रूपियो कठा सूं लावूं यार! घर में म्हनै कुण लावण दे। ठा पड़ जावै तो काको म्हारी टाट पांनी नी कर दे यार!

—धीरै बोल स्याना!

—थूं रूपिया रो कांई करसी यार ?

—बीड़ी नै माचिस लावूंला।

—थूं बीड़ी पीवै ?

—हां, हां, पीवूं, करनै जोर।

…छोरा पावड़ा जोर-जोर सूं बोलनै लिखो रे ए नौथिया-सिट डौन-सिटडौन!

…एक दू दू…दो दूना च्यार…दो दूना च्यार!

—बीड़ी में थनै कांई मजो आवै यार ?

—थूं बापड़ कांई समझै इण बातां नै। बीड़ी पीवण में कई गुण है, देख—

एक तो बीड़ी पीवण सूं मूंछा वेगी आवै। दूजी बीड़ी पीवण सूं ताकत वधै अर तीजो ठाट कितरो रैवै—अपटूडेट वणयोड़ा व्हां—यूं दोन्यूं आंगळियां रे बीच में बीड़ी पकड़योड़ी व्है, पे'ली लांबी फूंक खांच नै धीरे-धीरे नाक सूं धुंओ काढां, पछै मूंडो ऊंचो अर होट भेळा करनै तलवार कट मूंछां रे नीचै सूं फु ऊ ऊ ऊ ऊ! जांणै अंजण आयो।

बुसट्ट वाळो छोरो हसतो थको बोल्यो-तलवार कट मूंछां केड़ी व्है यार ?

—आंपणै मलूकिया माट सा'व रे केडी है, दिखै कोनीं। पण म्हूं मोटो होस्यूं जद बंदूक कट राखस्यूं—देख यूं-पछै फु ऊ ऊ ऊ! बुसट्ट वाळो छोरो पाटी में माथो घालनै फेर हसण लाग्यो।

—हसै कांई रे बोफा! बीड़ी में गुण नीं व्हैता तो ए मोटा-मोटा आदमी क्यूं पीवता ?

—आंपणै माट सा'व तो धोळी बीड़ी पीवै यार!

—अरे देखली मलूकिया मास्टरिया री धोळी बीड़ी, आंपां काळी पीवांला। थूं रूपियौ तो लाव दोस्त, पछै देख थनै फिरंट बणावूं। बोल

म्हारै ?

—सादूळा

—सियाळो ?

—सिगम

—सियाळो हाथ मांई सिवर —नू हैम नूप !

···अरे आज हाथ मांई दूध री मोटी बदू मी म्हाई है ? किण री भरी है ?

—म्हारै पाडिया री म्हारी है मा।

—म्हारा पाडिये रा बच्चा ! दूध बदू मी म्हारी रे ?

—म्हारै मैंस दुमरी मा, म्हारी मा दूरा में गई है।

—मैंस थारी भुमा में थर ऊपर थारी म्हारी मा। दूध टेमगर आवणो चाईजै। मी तो म्हारै म्हारै मैं हाट पोनी कर दूना।

★ ★ ★

गोत रो एक मोटी नो महीना रो तीन सोटी। बरस रा महीना म्है बारै, अर तीन बरस रा छतीस। दिन आवता मांई जेज लागै। हाकरणो तीन बरस बीतग्या। मनूदास रे पेट मे गाम री मनायंग दूध घर री पुगाग्यो।

पण मनूदास ई गुस्सो नीं हो। उणै गाम सूं किणरो लियो। उणसूं ई बैतो पाछो देय दियो। सियो किणरी कोमत तो उणरै पोथारै पढ़ाईज ही पण दियो किणरी पाग पीड़िया मग हो। स्कूल में छोरा दो दूनी च्यार सूं आगै तीन दूनी छः भणाई नीं सीखता म्हो, पण बीड़ी पीवणी चोरी करणी, कूड़बोलणो अर गाळा-गाळी करणी आछी तरियां सीखग्या। परटी पेतो हरजस तो बद म्हैग्या अर फिल्मी गीत गूंजण लाग्या—अंखियां मिलाके—जिया भरमाके—चले नहीं जाना हो हो चले नहीं जाना। गांव में दो च्यार मुकदमा ई चालू म्हैग्या, जिणसूं लोग-बाग कई दफा रा जांणकार म्हैग्या। कैंवण रो मतळब ओ के गांव रो मोकळो सांस्कृतिक विकास म्हैगो।

पण इणरी दिया पछैई गांमवाळा नै संतोग नीं हो। गुगरापणा सूं लोग मांयनै रा मांयनै मथ-भाग करण लाग्या—

·· म्हारर आयै बरसाळै गाली गास सेती मरायै, टको एक रारच नीं करै अर सगां बद धांन गुरत मे फवाड़ देवै।

·· मास्तर पाऊडर रौ दूध बेच नाखै अर मांनखिया टाबरां रैग जावै ।

···मास्तर एस० डी० आई० नै घी रा पीपिया पुगावै अर बी० डी० ओ० आवै जद दारू री बोतलां तैयार राखै ।

···मास्तर पलकारां सूं मिळ नै गांम रै नाम सूं सिमंट अर पतरां रा झूठा परमट कटावै अर ऊपर रा ऊपर पैसा खाय जावै ।

···मास्तर पनरै दिन सेकतो फिरै अर छोरां नै आखर एक नीं पढावै ।

···मास्तर गांम में धोड़ा घलावै अर मुकदमा बाजी करावै ।

···मास्तर नूरिया पिंजारा रै अठै रात-बिरात जावतौ रैवै अर आधी-आधी रात तांई बैठका करै । नागड़ी रांड सिमूड़ी ही ही करनै हंसती रैवै अर वो सिगरेटां फूंकतो रैवै ।

रांमा बापू रे जीव नै गिरै व्हैगी । ओ सगै हाथां गांम में केड़ी दुख घालियो । सूती बैठी छोकरी नै घर में पाल्यो घोड़ी । इसी ठा व्है ती तो स्कूल रै लारै पावड़ै-पावड़ै धूड़ बाळता । इसी पढाई पांत तो गांम रा छोकरा ठोट रैय जावता तो कोई खोटी बात नीं ही । गाडर पाळी ऊन नैं अर ऊ भी चरै कपास । पगरखी सुख नै पे' रीजै । माथा फोड़ी करनैं स्कूल खुलवाई तो इण वास्तै ही के गांम रा टाबर पढ़ लिख नैं हुंसियार बणैला अर गांम रो सुधारो व्हैला । पण ओ तो जबरो सुधारो व्हियो । अबै करणो तो कांई करणो ? आ तो जबरी दैण व्ही ?

तीन वरसां में स्कूल में टाबरां री संख्या घटती-घटती च्यार-पांचेक व्हैगी । वे ई मरजी पड़ै जद आवता अर मरजी पड़ै जद छुट्टी मनाय लेवता । स्कूल तिकड़म बाजी री अड्डी बाणग्यी । गांम में नेखम दो पार्टियां पड़गी । व्हैतां-व्हैतां एक दिन इसी आयी के आपसरी में भिडंत व्हैगी । लाठियां बाजी अर दो तीनेक रा माथा फाटग्या । कहावत है के घर घांचियां रा बळै जेद ऊंदरा पण भेळा इ ज सिकै, सो मास्तर मलूकदास पण लपेटा में आयग्यौ अर बळदां रे खांधै चढ़ नैं सफाखानैं पूग्यौ ।

★ ★ ★

रात बीत्यां दिन उग्यौ । आज स्कूल रौ भूंपौ सूनौ पड़्चौ हो अर लगातार तीन वरस सूं बौलतौ लौडस्पैकर मूंडौ लटकायां नीं बड़ा माथै चुपचाप पड़्चौ हो । नींबड़ा री टींग माथै एक भूडौ गिरजड़ौ आंख्यां मींच्यां अर नाड नीची कियां बैठ्यौ हो । नींबड़ा रै नीचै चाय वाळी हांडी ऊंधी पड़ी हीं अर चूल्हा री राख में एक पांवरियौ कुत्तौ सूतौ हो ।

बदळौ

संसार मे सगळा दुख चोखा पण पेट री [illegible] । [illegible] भव रा वैरी दुसमण नैं ई पेट री दास [illegible] पछै टांग मूंघनी अर हेडाड़ करनी [illegible] । [illegible] गूंटा पछै हाफ। चूक व्हियोड़ी वेलड़ां [illegible] गूंगा जिनावरां री बानां है । मानखा [illegible] इण आफत री काई माप ? इण [illegible] मोटपार वेटौ मुढापा मे इगो [illegible] उण वावल री काई मवम ? [illegible] उण विपदा नै कुण आण सकै ? [illegible] जिणरै पीड़ । घायल री गत [illegible]

इण वास्तै डोकरा नाद [illegible] विचाळै मायौ घाल्या वो [illegible] सरीर हिल जावतौ । मुंडा [illegible] डाई ही । रमम-रिसाव [illegible] तो वानैं वावस देवना [illegible] डोकरौ नाद मायौ [illegible]

उणांरो एकाएक [illegible] उमर री आधार, [illegible] दिन दिवा पछै ई [illegible]

बदळौ

नीं गान्यो ।

नाथू जात रो मैंणो कोरा भणाई मती अणगाक अर भलो आदमी हो । । उणरै महैना बांगी-नागी भणाई नीं थी च्है, उणरै वास्तै तो दूजा री चीज हराम बरोबर ही । अर उणरो बेटो पनियो तो उण सूं ई दो पानड़ा आगै हो । माथा अन्ला री गाय । नीं गोडै री हरी मैं अर नीं कोई री भणी में । आपरा मैली रा गांम सूं उणनैं फुरसत ई कोनीं मिळती । पच्चीस बरस रो हुयो पण कोई री आंग में गान्यो ई कोनीं रुख्यो । पण फोरी मुळ आवै जद रीत नै नीं आवै । उण बगत पंड रा गाभा ई दुस्मण बण जावै । गो पनियो मैंणो सालम अर निरदोस केलां थकां ई एक चोरी रा मामला में फसीजग्यो । कारण गा कसूर फगत इतरो इज हो के वो जात सूं मैंणो अर उमर सूं मोटयार हो ।

किसनजी गांम में एक मोतबिर आदमी गिणीजतो । पीढ़ियां सूं जम्योड़ो घर होवण सूं वांरै घर मे रामजी राजी हा । तीन दिनां पे'ली किसनजी रै घर में एक मोटी चोरी हुई अर चोर हजारां रो माल लेयग्या । इण सूं गांम में तो कांई पण चोखळा में ई हा हू मचगी । पुलिस री कार-वाई सरू हुई अर सूका-नीला भेळाइज बळण लाग्या । इण धा-धूं में पनियो ई लपेटा में आयग्यो । पुलिस मार-मार नै उणरा हाडजोजरा कर नांख्या । उणरै पसवाड़ां अर गुप्त अंगां माथै मरम री चोटां लागी । जिण सूं तीन दिनां तांई खून थूक नै सेवट उणनै मरणो पड़ियो ।

अर इणरै पनरै दिन पछै डोकरी ई रात'र दिन बेटा रै वास्तै झुर-झुर नैं हाय-हाय करतां आपरा प्राण छोड़ दिया ।

डोकरी नैं बाळ नैं नाथू घरै आयौ तो संसार उणनैं सूनौ लागण लाग्यो । पनियै उणरी कमर तोड नांखी ही अर रही-सही कसर डोकरी पूरी कर दी ।

नाथू आपरा मोटयार पणा में बड़ो सुखी हो । पूंगळगढ़ री पदमणी व्है जिसी आपरी लुगाई पारू अर राजकुंवर व्है जिसा पनिया नैं देखनैं उणनैं आभो टोपाळी जितरो निजर आवतो । नैंहचा सूं बैठनैं पारू री भूरी-भूरी आंख्यां में आपरी तस्वीर देखतौ वो कदैई थाकतौ ई नीं हो । इण वास्तै जिको संसार उणनैं इंदरापुरी सूं ई इदको लागतो वो इज आज आकड़ा सूं ई खारो लागण लाग्यो । उठतां-बैठतां, खावतां-पीवतां हरदम उणरी आंख्यां रे आगै वा काळी अंधारी मौत सूं ई डरावणी रात फिरण

लागती, जिण रात पनियै दिनूगा तांई खून थूकयौ अर सेवट हिचकी खाय नै गावड़ एक कांनी लटकाय नांखी ही।

उणनै याद आयौ किसनजी रे ई एकाएक बेटी है—नरपत-अर उणरै मांयली सैतांन जागनै जोर-जोर सूं हसण लाग्यौ।

थोड़ा दिनां में नाथू अधगेलो व्है ज्यूं व्हैग्यौ। उणनै नी तो पोतारै कपड़ां-लत्तां री सुध-बुध ही अर नीं पोतारै पंडरी। वो तो रात'र दिन पळवट में छुरी अर हाथ में लट्ठ लियां गांम में फिरतौ रैवतौ। अंधारी रात रा सरणाटा मे जिण वेळा दुनिया सुख री नींद सोवै, नाथू किसनजी रै घर रै च्यारूं मेर चांटा देवतौ। लोग-बाग उणनै देखनै डरण लागग्या। हरदम उणरी आंख्यां सूं अंगारा झरता रैंवता अर इसौ मालूम व्हैतो के जाणै इण अंगरां में बळनै किसनजी रो परिवार भस्म व्है जाएला।

नरपत अर ठाकुर रा कुंवर रै आपसरी मे बड़ी मेळ हो। वारै एकण दांतै रोटी तूटती। कुंवर रोटी घरै खावतौ तो कुरलौ नरपत रे घरै आयनै थूकतौ। नरपत ई कूंवर रे लारै छिया री गळाई लाग्योड़ौ रैंवतौ। कुंवर नै सूरां री सिकार रौ बड़ौ चाव हो सो नरपत पण करेई-करेई जायवौ करतौ।

एकर भादवा रौ महीनो हो अर प्रभात री वेळा। जमांनो उण वरस चोखौ पाक्योड़ौ हो। गाम सूं उगमणा आयौड़ा डूंगर नीला हेवन व्हैग्या हा अर वांरै ढाळ में आयौड़ा कोसां लांबा खेत, इसा लागता हा जाणै हरियल जाजम बिछ्योड़ी व्है। डूंगर सजळ होवण सूं मां में मोकळा जिनावर रैवता। सूरा रौ तो ओ खास ठायौ हो। वे डारां री डारां निसंक फिरता अर देखतां-देखतां मैणत सूं तैयार कियौड़ी करसां री कमाण नै धूड़ धांणी कर नांखता।

उण दिन प्रभात रा इज कुंवर नै सिकार जावण री जची। वो नरपत अर कई आदमिया रे सागै घोड़ां माथै चढ़नै कुत्ता री पळटण लियां डूंगरां री ढाळ में पूग्यौ। सूरां री डारा रात-रात भर खाखा बरबाद करती अर दिन उग्यां पे'ली-पे'ली आयनै झाड़िया में बैठ जावती। एक झाड़ी में रात भर अनाज खावण सूं, पेट फुलाय नै मस्त व्हियोड़ी डार पड़ी ही। वा हा हू सुण नै बारै निकळगी। सूरां नै देखतां ई घोड़ा रे एड़ियां लागी अर घोड़ा हवा सूं बातां करण लाग्या। घोड़ा री टापां अर बदूका रे धम्मीड़ां सूं डूंगर गूंजण लाग्या।

वदळौ

नाथू एक [illegible] भाठा रै ओळै छिप्यो सगळा [illegible] अर बावळा असवारां री [illegible] देखै हो। [illegible] उणरी नजरां झाड़ी में सूं अरड़ाट करतो एक [illegible] सूर निकळ्यो। झाड़ी में [illegible] चरड़-चरड़ करती [illegible] अर वो नाठै भागतो ऊभो रह्यो। [illegible] अर वो पाडियो बड़ो जिसो डीगो अर मोटो पेट बड़ो जिसो। सूर [illegible] ढोगी-ढोगी दातरड़ियां जिसा पूरो साठ बरस रो जवान हो।

कुंवर री निजर उण माथै पड़ी अर घोड़ो लारै फेंक दियो। कुत्तां अर घोड़ा नै लारै आवता देख नै सूर ई भागण लाग्यो। पण भागतोड़ा सूर रै पीठ में कुंवर रै हाथ री गोळी सरणाट करतोड़ी लागी अर सूर घायल व्हैग्यो।

गोळी लागतांई उणरो अरड़ाट कियो अर सन्मुख आई झाड़ी में बड़ग्यो। कुंवर अर उणरा साथीड़ा सगळाई झाड़ी नै घेर नै ऊभा व्हैग्या। जोर री हाकल हुई। सूर घायल व्हियोड़ो अर बिफरयोड़ो झाड़ी रै मांयनै बैठ्यो हो। एक दो सिकारी कुत्ता हिम्मत करनै झाड़ी रै मांयनै घुसिया तो घुसतां पांण डाकी वांनै कागद रे ज्यूं चरड़ करता चीर नै थूंड सूं बारै उछाळ दिया। कुत्ता काऊं-काऊं करता जमीन माथै आय पड़्या अर आंतरड़ा बारै निकळग्या।

झाड़ी माथै गोळियां रीं बरखा सी होवण लागी तो सेवट विकराल व्हियोड़ो सूर बारै निकळ्यो। आंख्यां सूं आग बरसै ही अर वो चरड़-चरड़ करतो दातरड़ियां पिसै हो। उण बखत नरपत आपरो घोड़ो साथियां सूं उण काळ कांनी वदाय दियो। सरपट आवता घोड़ा नै देख नै सूर तारा री गळाई सांम्ही तूटो। अबै उणनै मौत री ई भौ मिटग्यो हो। सरणाट करती एग गोळी चाली पण ऊपर होय नै निकळगी।

जिण भाठा रै ओळै नाथू छिप्यो हो उणरै ठीक सांम्ही नरपत अर सूर री टक्कर हुई। चरड़ाट करती दातरड़ी बाजी अर हाथ भरियो घोड़ा री पसवाड़ो फाड़ नांख्यो। घोड़ो सरणाट नै एक दम आभै कांनी उछळियो अर नरपत जमीं माथै आवतो वाजियो।

सूर आधौक खेत रवा दौड़नै पाछौ फ़िरची। अबकी फेट में जमीं माथै पड़्या नरपत री वारी ही। —दातरड़ी चालैला चरड़ करती—अर आंतरड़ियां वारै—नाथू मन में सोच्यौ। उणरी आंख्यां चमकण लागी। वो खुसी सूं नाचण लाग्यौ। आंख्यां ठंडी करण नैं वो उछळ नैं आगै आयग्यौ

अर जोर-जोर सूं ताळियां बजाय-बजाय नै हसण लाग्यो—हा-हा-हा''' हा !

उणं देख्यो के कुंवर अर दूजा सगळाई साथी बाको फाड़यां अळगा ऊभा हा अर नरपत घायल व्हियौड़ो जमीं माथै पड़यो हो अर उठी नै सूर आवती हो पवन रै दोट रै उनमांन अरड़ाट कियौड़ो। पण ओ कांई ? उणरो हीयो ठाडो पड़ण रै बदळै बळण क्यूं लाग्यो ?

बिजळी रै पळाका रै ज्यूं दिमाग में एक विचार आयो—अरे बाप रो एकाएक बेटो मर जासी—म्हारी आंख्यां रै सांम्ही अबार देखतां-देखतां मर जासी। म्हारै लाडकै पनियै रै ज्यूं ऊभां-ऊभां खत्म व्है जासी। म्हारो पनियो, म्हारो नरपत ! उणमें सोळू आना मिनखपणो जागग्यो।

अर वो आंख्यां मीच नै कूद पड़यो नरपत—नी-नीं पनिया नै बचावण नै। हाथ में उणरै हाथ में बा सागण छुरी ही, जिकण सूं नरपत रो खून करणो चावै हो। भाठा सूं भाठो आफळै ज्यूं टक्कर हुई अर छुरी ठेट डांडा तांई सूर रे पेट में घुसगी। पण सागै-सागै नायू रो पेट पण ठेट ना भी सूं लगाय नै काळजा तांई चिरीजग्यो।

कांनी कांनी सूं बंदूकांरा फायर हुया धड़ाम ! धड़ाम ! अर सूर ठंडो व्हैग्यो। नरपत रै आंख्यां सूं आंसूड़ा टपक्या टप टप। अर मरतां-मरतां नायू रै होटां माथै मुळक आई।

खूंटारी आवरू

राजू पटेल री घर गांम में तो कांई पण चोगळा में ई चावो हो। सात पीढ़ी सूं जम्योड़ी ग्वाड़ी माथै रांमजी री किरपा होवण सूं लिछमी री उठै नेम्वम वासो हो। पटेल नै वळदां री अणूंतो कोड हो। इण कारण उणरी वळदारी में कोई बीस नेड़ी जोडियां हरदम लाधती। जात-जात री अर भांत-भांत री। सांचोरी, नागोरी अर धाटी। एक-एक सूं आगळी। वळदां री चाकरी पण पटेल उतार ही। इण कारण वळद पण सगळाई थूथकारिया पाबूजी रे पड़ में मांडै जिसा हा। इतरो व्है तां थकांई पटेल रो मन नीं पतीजतो अर वो आई साल तिलवाड़ं, नागोर अर पोकरजी पूग जावतो नैं उठा सूं एकाध टाळमी जोड़ी लेय आवतो।

यूं पटेल जोड़ियां मोकळी लीवी अर मोकळी वेची पण अबकाळै जिको जोड़ी तिलवाड़ा रे मेळा सूं लायो, उणैं सगळी जोड़ियां नैं मात कर दी। वळद पटेल रे कानां तां ई डीगा अर धवला सफेद बगला रीजात हा। डील माथै पसम इसी के माखी बैठी व्है तो पितळ जाए। नैंनी मूंडी, छोटा सींग, झूलती कांवळ, पतळी पूंछ अर गोळ गट्ट थूंबी। सागी साग जांणै सिवजी रा नांदिया। पटेल चाकरी करण में ई पछै पाछ नीं राखी। पाला अर फळ-गटी सूं ठांण भरया रैवता। इण रै उपरांत दो न्यूं वखत जब-ग्वार रौ वांटो, सियाळा में तिलां री सैंलाण्यां अर ऊपर सूं गावा घी री नालां। वळद वण्या तो पछै वे वण्या के चालै तो ई जाणै जमीं थरकै।

गिणगौरां री मेळो आयो। पटेल रे अबकै भगवान जांणै कांई जची सो

जाय नैं गाम रा ठाकर नैं अरज कीवी—ठाकरां गुन्हो माफकरावो तो एक अरज करू'—अबकाळै गिणगौर रा मेळा में आपरै अबलख घोड़ा सागे म्हारै बळदां री दौड़ करावणी चावूं।

ठाकरां थोड़ा मुळक नैं हूंकारो दे दियो। पटेल री जोड़ी चोखळै चावी ही तो रावळो घोड़ो पण हजारां में एक हो। बात फैलतां वाई जेज लागै। गिणगौर रै दिन मिनखां री तो थट्ट लाग्यो। हियो-हियो दळीजै। थाळी फेंकी व्है तो नीची नी पड़ै।

सगळा री आंख्यां मैदान कांनी'ज लाग्योड़ी ही के रावळो घोड़ो अर राजू पटेल रो रेखळो एक साथै इज मैदान मे उतरिया। हांकरतां दौड़ सरू व्हैगी। पवन रै उनमांन घोड़ो उडियो अर आधी रैदोट री गळाई बळद ई उपड़िया। देखण वाळां नैं तो फगत धूड़ रो गोट इज निजर आयो। हांका-धाकां में जोड़ी आगै निकळगी अर घोड़ो लारै रैग्यो। ठाकर चौधरी रा मों'र थापोटिया।—घणा रंग है थनै अर थारी जोड़ी नैं। बळद व्है तो इसा व्है।

संजोग री बात इसी वणी के वाइज जोड़ी महीना भर पछै चोरीजगी अंधारो पड़ताई चोर वाड़ तोड़ नैं बळदा नैं लेय उडग्या। चौधरी बळदारी मे चारो नांखण नै गयो तो खूंटी खाली मिळयो। वो डाफाचूक व्हियोड़ो सीधो ठाकरां खनै पूगो।

—धणियां चोरां बळद काढ़ दिया है सो फुरती सूं वार चाढो। इसी नीं व्है के जोड़ी हाथ में सूं जावती रैवै।

ठाकर नैं मसखरी करण रो मौको मिळयो। बोल्या—पटेल थारी जोड़ी नैं म्हारो घोड़ो तो पूग नी सकै। पछै थूं कैवै ज्यूं करां। —खांमदां ओ मसखरी करण रो वखत नी है, ओ तो गांम री इज्जत रो सवाल है सो फुरती करावो।

ठाकर नैं तो फगत कौगत इज करणी ही सो चिलम भरै जितरी जेज में ऊंठां अर घोड़ो माथ वार चढ़ी। चोर तीन-च्यार कोस गया व्हैला के वार लारै पूगगी। ठाकर अबलख घोड़ा माथै सवार हा अर चौधरी साजणी तोड पर। ठाकर नैं फेर मसखरी सूझी।

—कांई रे पटेल था वाळी जोड़ी तो ताकड़ी घणी गिणी जती ही। आज यूं कीकर व्हियो? ए रिग दिया तो तीन कोस ई कोनी आया के वार

पेट री दाझ

यूं तो गांम राम है। मंदिर है तो ऊखरड़ा पण है। कई भली-भूंडी बातां होवती रैवै। पण धानपुर गाम थप्यां लग होयनै आज दिन तांई इसी अजोगी बात कदैई सुणण में कोनी आई इसौ नांजोगौ काम कदैई कोनी व्हियौ। दिन उगतांई [गाम में हाकौ सो फूटग्यौ। जणीका-जणीका री जबांन माथै एक इज बात। ग्वाड़िया, गळियां, खेतां अर खळां में ठौड़-ठौड़ एक इज चरचा। जगै-जगै मिनखां रा टोळा रा टोळा ऊभा। सगळां रा मूंडा थाप खायोड़ा। आंख्यां में एक अणजाण्यौ भौ भरयोड़ो। सगळां रै मन में एक इज बात, सगळा रै मन में एक इज सवाल के गांम में इसौ कुण चंडाल दुस्टी जनम्यौ के जिणं इसौ अकरम कर नाख्यौ। मिनख व्हैतांई इसौ रागसी काम कियो के जिनवरां नै ई लारै छोड दिया। खाणका सूं खाणकौ कुत्तौ अर जहरी सूं जहरी नाग पण नैन्या टाबर रौ तौ नाम नी लै, पण इण पापी तो तीन बरस रो भोळा टाबरिया नैं लोभ रै खातर टूपौ देयनैं मार नाख्यौ।

—रांम, रांम, रांम, सिवहरै, सिवहरै, घोर कळजुग आयग्यौ। इण गांम री पुन्याई अबै खतम व्हैगी। अबै तो इण गांम माथै जरूर कोई आफत आवैला—पणघट पर तांबा री कळसौ मांजतां पुजारी बोल्या अर पछै चस्मा रै ऊपर होय नै खनै पांणी भरती लुगायां कांनी खरी मीट सूं झाकण लाग्या। पुजारी री बात सुणनै काछड़ा मारियां गोडां-गोडां लग पाणी में ऊभ ओगड़ी ऊभी लुगायां घाघरा थोड़ा नीचा कर लिया। मरियोड़ा टाबर

री मास मास करनै [illegible] री [illegible] पाणी आवणो, त [illegible] सू मारै हांनळां में पाणी आवणो ।

— [illegible]-[illegible], [illegible] उण [illegible] री, कोड उभर नै [illegible] उण [illegible], [illegible] गळजुग आवणो ।

पण [illegible] पुजारी री [illegible] आवतां लुगायां एक दूजी रै [illegible] लागी । [illegible] पुजारी रो चरित्तर ई छांनो कोनीं हो ।

दूणी देय नै मांगियो जिको टावर लाभूजी सुनार रो हो। लाभूजी वापड़ो असराफ आदमी, अल्ला री गाय, नीं कोई री लेणी में अर नीं कोई री भरी में । सीधै रास्तै चालणियो । कदैई चालती कीड़ी नै ई कोनीं दुखाई के कोई रै आंख में घालियो ई कोनीं गार नाखियो । यूं सुनार री जात छाकटी गिणीजै । वांरै धंधा में वे सगी मा री ई लिहाज कोनीं राखै । पण लाभू वापड़ो इसो नीं हो । वो मजूरी पूरी लेवतो अर काम पण सातरो बंद करनै देवतो । दूजोड़ा सुनारां रै ज्यूं खोट भेळ नै गैणो घड़णो उणरै वास्तै हरांम बरोबर हो । इण वास्तै पूरा चोखळा में ई उणरी पैंठ जम्योड़ी ही । पण इसा भला आदमी रै ई भगवांन लारै उतरियोड़ो हो। घर में आठ टावर जनम्या अर आठूं ई पेट बाळणी करनै चालता रह्या । ओ नवमो कोड़ो-लियो तीन बरसां पे'ली भगवांन दियो हो, जिण सूं धणी लुगाई रो जीव ठंडो हो । इण टावर माथै इज वांरो ऊगतो आथमतो । इणरी मूंडी देख-देख नैं इज वे दिन तोड़ता । टावर पण टावरां जोग हो । गोरी निछोर, दोवड़ै हाड़, प्याला जिसी मोटी-मोटी आंख्यां अर गोळ गट्ट चेहरो अर भूरी-भूरी लटुरियां । राजा रो कुंवर ई उणरै आगै पाणी भरै ।

इण वास्तै मा टावर नैं हथाळी रा छाला रे ज्यूं राखती । हरदम उणरी आइज मंसा रैवती के वो कठै चालै अर कठै हाथ राखूं । उण मौकै दीवाळी री तिंवार होवण सूं मा उणनैं घणा कोड सूं नवा-नवा कपड़ा पेहराया । कानां में नगदार लूंग, हाथां मैं सोना री माठियां अर पगां में झांझरिया घालिया । रांमा-सांमा रै दिन वाल ओस, काजळ घाल, अर लिलाड़ माथै निजर री काळी टीको लगायनै उणनैं वास ग्वाड़ में तुळसीम करण वास्तै भेजियौ । थोड़ी ताळ में इज टावर मे'ल माळियां सूं कुड़ता री फड़क भरनैं पाछौ आयौ अर ऊभौ-ऊभौ इज वांनैं आंगणा रे सैं

बीच सांगनै रमण नै बारै नाठग्यौ। कोई जोग री बात इसी बणी के मा बाप तो बापड़ा जावता टावर री पूठ इज देखी। बो तो गयौ सो गयौ इज गयौ। पाछौ आयौ इज नी। रोटी वेळा ताई तो उण री मा इण भरोसै बैठी रही के बो बारै रमतौ व्हैला अर अबार आय जावैला। पण रोटी वेळा री तो दोपार व्हैगी अर दोपार बीत्यां सांझ पड़गी पण टावर रौ तो कठैई पतौ इज नीं। मां बाप बापड़ा फिर-फिर नै हैरान व्हैग्या। घर, गळियां, खेत, सगळा आखरिया, तळाव, कुआ-बावड़ी सगळाई देख-देख नै तळा री माटी कर नाखी, पण टावर तो जाणै हार मोर इज व्हैग्यौ, जाणै मोर ऊंबी गिटली के जाणै जीवता नै धरती डकारगी।

लाभू रै घर में कूका-रोळौ माचग्यौ। सुनार-सुनारी बापड़ा भूंडी ढाळै डाडण लाग्या। पूरा गाम में तळ तळौ मचग्यौ। घरां में हाडियां वाधगी। मिनख लालटेणां लेय-लेय नै कांनी-कांनी टावर नै जोवण नै रवानै व्हिया। पण कठैई पतौ नीं लागौ। पूरी रात गांम में सोपौ कोनी पड्यौ। मिनख झींकता रह्या, कुत्ता ऊंचौ मूंडौ कर कर नै कूकता रह्या अर धानपुर री काकड़ में रात भर मामाजी री हीड री गळाई झपाझप करती लालटेणां फिरती री।

ज्यूं-त्यूं करनै दिन ऊगौ। मिनख दिसा-फरागती जावण लाग्या तो मसाणां कानी गिरजड़ता भमता निगै आया। देखण वाळां नै वहम व्हियौ। जायनै देखै तो बाटका रै ओळै लाभू रै छोकरा री लास पड़ी। घांटी की भागोड़ी, आंख्यां फाटोड़ी अर जीभ बारै निकळयोड़ी। फूल जिसौ कवळौ टावर जिकौ कालै दोटा देवतौ फिरतौ हो आज मसाणां री धरती माथै उगरांणै पड्यौ हो। चिलम भरै जितरी जेज में मसाणा में ठमठोर गाम भेळौ व्हैग्यौ। सुनार-सुनारी नै ढावणा मुसकल व्हैग्यौ। सुनारी तो गाय डाढ़ै ज्यूं इज डाढण लागी। लुगायां उणनै नीठ पकड़'र पाछी घरां लेयगी। लास रै खनै ऊभै पुजारी लेवौ होठ कियां जरदा री पिचकारी छोड़ता कह्यौ—सिवहरै, सिवहरै, घोर कळजुग आयग्यौ। इण गाम री पुन्याई अबै खतम व्हैगी?

मारण वाळै दुस्टी टावर रै सरीर माथै सूं तीवरी तीव उतार लीवी ही। कायदे सर पुलिस नै इतला देवणी पड़ी। लास रौ पोस्ट मारटम हुयौ अर तीजै दिन आवतां लास नै दाग पड्यौ। लाभू रे घर रौ तो दीवौ बुझ्यौ इज पण गांम माथै ई जाणै आफत आयगी। पूरा गांम री गिरै दसा

[illegible] थाणा में। पुलिस वाळा माणसां सूं पकड़ै आदमियां नै पकड़'र लेगी अर नै जाणै कस-कस जुलम किया नीं पछै भलो ई मौड़ रांम नै। मार-मार नै नगळा रा ई हाड ओसरा कर नांख्या। भाखू रा पड़ोसी कानिया नाई नै मांनै मार नै मनमानणो जुलम कियो नीं नाईड़ो कूकियो — थांरी मिन्नत करूं हूं रे थांणादारां, म्हनै छोड़ दो, म्हूं थांनै सगळी बात बताय दूंला। पण मांना सूं नीको उछळियो तो साफा नटग्यो — के म्हनै कीं ठा व्है तो सैन भगत री सौगन, म्हूं तो मार रा भौ सूं यूं ई कैवतो हो। थांणादार म्हैम वगत नै झाळ छूटी, वां दो तीन कीमती गाळा कर कान नै ले डंडो नैं टिकियो सो मार-मार नै वापड़ा नाईड़ा रो पोगाळो कर दियो, कूस काढ नांख्यो। नाई अचेत होग्यो अर इण भांत रात भर थांणो नरक बण्योड़ो रह्यो।

दिनूगै थांणादार कोटर में गयो तो ग्यारै टावरां री मा (वार मो टावर पेट में हो) बीबी जुबैदा आंख्यां में गुमार लियां बोली—या खुदा, परवरदिगार पुलिस री नौकरी ई कोई नोकरी है ? रात-दिन मिनखां नैं मारणा'र कूटणा। चोवीसां घंटा हाय-तोबा ! बाल बच्चांदार आदमी हो थोड़ी घणी तो दया-मया राख्या करो। कठैई कोई गरीब री बददुआ नीं लाग जावै।

इतरी कैयनै वा पोतारा रिडक-भिडक कांनीं देखण लागी, जो पूरा आंगणा में मतीरां री गळाई गुड्या पड़्या हा।

खां सा'ब वड़ो रसियौ आदमी हो। वो बीवी री काजळ विखारी अर खुमार भरी आंख्यां में झांक नैं उणरी हिचकी पकड़तां बोल्यौ—जानेमन थूं लुगाई री जात है, थारो मन घणो कोमळ है। थूं इण दुनियादारी री बातां नैं नीं समझ सकै। विना मारियां कूटियां कोई ओ कैय सकै के म्हैं चोरी कीवी है, के म्हैं खून कियौ है। संसार वदमासां अर गुंडां सूं भरियौ पड़्यौ है। जिण भांत जहर सूं जहर दवै उणीज भांत ए चोर-गुंडा। पुलिस सूं दवै। पुलिस जे मार कूट नीं करै तो ए लुच्चा लफंगा आभै रे फांडौ कर नांखै। भला मिनखां रौ संसार में जीवणौ मुसकल कर दे।

बीवी नैं खांमद री वात रौ कोई ठीक पडुत्तर नीं सूझ्यौ तो वा बोली—पण कम सूं कम मूंडा में सूं फाटौ तो नीं बोलणौ चाहिजै। थे रात दिन थांणा में ममौ-चचौ बोलता रैवौ अर थांरा ए मोटा-मोटा छोरा-छोरी सुणता रैवै। बोलौ इणां पर कांई असर पड़ै ? अर संसार में 'मा' सवद

कांई इतरौ हल्कौ व्हैग्यौ है के उणरौ यूं अपमांन कियौ जावै। मा जनम री देणार व्है। था सगळा रै ई बराबर व्है, उण सगती रौ यूं अपमांन करतां थारी जीभ कट जावणी चाहिजै।

अबकै खां सा'ब लचकांणा पड़ग्या। बोल्या—ठीक है, ठीक है, अबै ध्यान राखूंला। थू चाय झट बणाय दे।

धांनपुरा में ई रात भर पंचायती चालती री। गांम रा पनरै आदमी थांणा में बंद होवण सूं घर-घर कळकळौ मच्यौड़ौ हो। गांम में दो आदमी पुलिस रा खास मांनीता हा—पुजारी परमानंद अर चौवटियौ फौजराज। थांणा में नवौ थांणादार आवतौ जरै करंई एक रौ पलड़ौ फारी रैवतौ तो करंई दूजा रौ। अबार फौजा रौ सितारौ तेज हो। वो थांणादार री मूछ रौ बाल बण्यौड़ौ हो। खटरा कद रौ फौजो चोवटियौ घर मे एकल बादर इज हो। नीं रांड रोवण नै ही, नीं भैंस दोवणनै अरनी सूपड़ौ सोवण नै। आगै ई हाथ अर लारै ई हाथ, रक्षा करै गुरु गोरखनाथ। चूंधी सीक आंख्यां, भारत रौ नकसौ व्है जिसौ चे'रौ, जावड़ा दोनूं कानी बैठौड़ा, जाणै एक कांनी हिंद महासागर अर दूजै कांनी, बंगाल री खाड़ी। हाथां-पगांरी नाड़ा निकळयोड़ी पण जवांन ठाला भूला री डोढ हाथ लांबी। असली कवड़ियौ—खापरियौ कैवणौ चाहिजै वाइज मूरत। कोई झूठौ मुकद्मौ करणौ व्है, कोई खोटा खत में साख घालणी व्है, कोई कूड़ी गवाही देवणी व्है तो ए काम फौजा रा। पुलिस रे वास्तै वो घणौ काम रौ आदमी हो। अठी उठी री खबरा लावणी, थांणादारां री गाय वास्तै फळगटी अर मुसीजी री बकरिया वास्तै पाला रौ इंतजाम करणौ ए सगळाई काम फौजा रे जिम्मै हा। इण वास्तै पुलिस जठै चूरमा करती ऐठौ-झूठौ इणनै ई मिळ जावतौ।

दिनूगै गाम वाळा भेळा होय नै फौजराज खनै पूगा अर कैवण लाग्या—चौवटियाजी, अबै गामरी इज्जत आपरै हाथ है। कियाई करनै आप थांणादार नै मनावौ अर आंपण आदमियां नै छुडाय नै लावौ।

फौजी आंख्यां मिचमिचाय नै खेंखारौ करतौ बोल्यौ—म्हूं थांनै कैवूं देखौ भई, थाणादार म्हारै काका रौ बेटौ तो लागै कोनीं, कांमी हरांमी है अर पेट सबरा पोला है। म्हूं थांनै कैवूं कतल री केस ठैरियौ सो कोरे भांणै तो आरती व्हैनी अर थोड़ौ घास सूं ढोली ठरै तो खावै किणनै? इण वास्तै जे फी आदमी एक सौ रुपिया रौ इंतजाम बैठतौ व्है तो म्हू

आपने भाणादार मैं बात [illegible] । नीं नीं नै [illegible] किनी अर म्हे गुण लियो। आगे ज्यूं ओम है ज्यूं होसा । पछै म्हनै दोस मत दीजो ।

मैदा [illegible] कांई आन के पीछ प्रमाणे । पड़ी भरिया में गविया पनरे गो गोकड़ा सामने मोना फोजा रै कब्जा मैं थाम दिया अर दिन आथमिया पंछी पनरैई आदमी कुडनें पाछा आई गळा ढोल्या । नाणी कांई नीं करै । कवियो यड़ी [illegible] नें ई गेवो करै । पण मार गाय-गाय नै ज्याग डील मूळगोड़ा हा नारे मन में तो ओ भो तीर री गळाई सालतो हो के जे गुनी रो पतो नीं लाग्यो तो सगळां नेई पाछो थांणे जावणो पड़ैला । अर थांणे पाछो आवण रो मतळब हो के मौत रा मूंढा में जावणो । सो पूरा ई गांम इण कोसिस में लागग्यो के किणीई करनें असली गुनी रो पतो लाग जावै तो कसूरवार नें दंड मिळै अर दूजां री गाळो निकळै ।

गांम रांम है, लारै पड़ जावै तो पतो कांई नीं लागै कोसिस करण सूं ठा पड़ी के जिण दिन टावर री गुन हुयो, उण दिन गांम रै गोर में नटियां रा डेरा पड़्या हा, जिको दूजै दिन इज आगै चालता वण्या। नटिया ई चोर नटिया हा, राज नट नीं हा । दूजी बात, उण दिन गांम रै सुनै होय नैं बाळद निकळी ही। अर तीजी खबर आ मिळी के कांन जी रा बेटा बळदेव नैं, जो कॉलिज री छुट्टियां में घरै आयोड़ो हो, उणीज दिन उण सुनार रा बेटा रे सागै टावरां देख्यो हो ।

कांनजी रे सागै फौजराज चौवटिया अर परमानंद पुजारी री जूंनी अदावदी चालती ही । कारण के चौवटियौ तो दो-तीन वार गांम में वाड़ कूदतौ पकड़ी ज्यौ जद कांन जी इणनैं झाल नैं सागैड़ौ वजायौ हो अर पुजारी महाराज ई कई वार लपेटा में आया हा अर दांतां तिरणा लेय नैं छूटा हा । कांन जी घर में खावतौ-पीवतौ होवण सूं नांम में कईयां रे आंखै चढ़चौड़ौ हो । पण रास्तै चालणियौ होवण सूं उणनैं दवावण री कोई नैं कदै ई मौकौ इज नीं मिळचौ । कांनजी मिलट्री रौ रिटायर हेंड एक साधारण घर धणी आदमी हो । घर में सुलक्खणी रजपूतांणी, मोटचार वेटौ, वडेरां रे हाथ री काजू जमीन अर पेंसन री रकम सूं वांरौ गाडौ मजा सूं गुड़कतौ हो । गांम में उणांरौ ओ ढंग हो के नीं किणी सूं दोस्ती अर नीं किणी सूं वैर । मारग आवणौ अर मारग जावणो । खड़ी खाणी न कोई पड़ी उठावणी । पोतारी मौज में मस्त रैवणौ । पण एक

बात कानजी में बड़ी जोर की ही, वा आ के बानै लुच्चाई-लफंगाई अर चोरी-जारी सूं बड़ी चिड़ ही। गांम मे जद कदै ई ईसी बात सुणण में आवती उणरौ लोही ऊकळण लाग जावतौ। उणरौ बस चालतौ तो वो कवड़िया लापरिया री घांटकी मुरड़'र नांख देवतौ।

कांनजी री लुगाई इण मामला में उण सूं ई दो पांवडा आगै ही। पूरी मरदानी औरत ही। वा कहृया करती के साफौ बांधै जितरा सगळाई आदमी नीं व्है अर ओरणौ ओढ़ै जितरी सगळी ई लुगायां नी व्है। धान-पुर गांम लूटांणौ जद कानजी तो घरै नीं हो पण आ डाकण बंदूक झाल'र फळसा मार्थ ऊभी व्हैगी ही। घणी दोरी लोगां उणनै पकड़'र घर मे बिठाई ही।

कांनजी रै बेटा रौ नाम इण कतल रा मामला में आवण सूं पुजारी परमानंद जोर-जोर सू बोलण लाग्यौ—सिवहरै, सिवहरै, घोर कळजुग आयग्यो। इण गांम री पुन्याई अबै खतम व्हैगी। फौजो चौवटियौ बोल्यौ—म्हूं थांनै कैवूं, समझया के नी, म्हनै तो आ पे'लीज ठा ही के इण कतल रा मामला मे कोई मोटी मुरगी री हाथ व्हैणो चाहिजै। हरांम खोर बगला भगत वण्या फिरै—म्हूं थांनै कैवूं अर इसा नीच काम करै—चोरां रा सिरिपूज। अर इसा नीच काम करै—चोरां रा सिरिपूज। इसा नालायकां रौ मूडौ देख्यां ई पाप लागै। घणा दिन व्हिया है कांनजी ठाकरां नै डोढ़ा-डोढ़ा चालतां नै, अबके रेवड़ी री फेट में आया है, समझ्या के नीं। जे तीन सौ दो में फसाय नै सगळी टेंटाई नीं काढ दू, म्हूं थांनै कैवूं तो म्हारो नाम फौजो चौवटियौ नी।

★ ★ ★

थांणा में नव नटिया अर बार बाळदिया पकड़ीज्या। तीन दिनां तांई जरंद उडता रहृया। बाळदिया कूकता रहृया

—दादा रे दादा! मत मार रै दादा! कबूतरियां कूकती री—बाप रै बाप! क्यूं मारे रै बाप! अर थांणा रा कोटर में जुबैदा कूकती री—खुदा रै खुदा! यूं ही मालिक है रै खुदा!

पण नतीजौ कांई नी निकळयौ। चौथे दिन नटिया अर वणजारा तौ पुलिस-देवता नै नाळेर समेत धोक देय नै भाग छूटा पण बळदेव वल्द कांनजी री गिरैंदसा बोदी आयगी। उणनै कांनिज में इज गिरफ्तार कियौ अर रातौ रात लायनै थांणा मे दाखल कर दियौ। उठीनै सूरज ऊगौ

अर अठीनै उणरै गळा उजणा गम किया···ठै···ठै···ठै··· है ! गोविंद ···गोविंद · गोविंद ! गाम जमैर नांगी पग मारो भाठो बोलै तो मूंडै बोलै । पुलिस मार-मार नै हैरान कर्यो । थांणादार बोल्यो— मून पिनाग नै ऊंधो लटकाय दो सा ळाने ।

हुकम री तामील हुई । आधा क घंटा में वो नै भांन कर्यो । वो नेता नूक होय नै कुत्तियो-कमीण छोड़ दो-म्हूं सब बताय दूंला । सिपाहियां नीचो उतार दियो । थांणादार नेड़ै आवतां ई उणरै मूंडा माथै एक ठोकर जमाई, बोल साळा नीं तो फाड़ नै खा जाऊंला । वो डाफा चूक होय नै अटकतो अटकतो बोल्यो—

—छोरा नै म्हैं मारियो

किणां मारियो ?

—टूंपी देय नै मारियो ।

—क्यूं मारियो रे ?

—म्हूं उणनै मारणो तो नीं चावै हो फगत उणरो गैणो उतार नैं लेवणो चावै हो । इण वास्तै म्हूं उणनै पोटाय नैं गोदी में ऊंचायां मसांण कांनी लेय नैं गयो । उठै गैणो उतारियो तो वो कैवण लाग्यो म्हारै बावै नैं कैय दूंला अर रोवण लागग्यो । म्हैं बदनामी रे डर सूं उणरै टूंपी देय दियौ ।

—वो सगळो गैणो कठै ?

—आधोक तो वेच दियौ अर आधो म्हारी होस्टल रे भींत लारै जमीन में गाड्योड़ो है ।

—थैं उण पैसां रो कांई कर्‌यो ?

—आधा पैसा तो दारू सिनेमा अर खावण-पीवण में खरच व्हैग्या अर आधा मांगता पेटै दे दिया ।

—मर स्साळा हरामी तेरी···थांणादार एक वजनी गाळ ठरकाय दी अर कागदिया पूरा करनैं मुलजिम नैं हवालात में वंद कर दियौ ।

चोखी वात फैलतां नैं जेज लागै पण भूंडी वात तो पवन रे वेग उडै । रेडियौ में खवर पूगै ज्यूं आ खवर धानपुर पूगी तो गांम में खळवली माचगी । मिनखां रा अवै मूंडा जितरी ई वातां । कांनजी माथै तो जांणै विजळी पड़गी । पगां हेटै सूं धरती खिसकगी । उणनैं सुपना में ई आ ठा नीं है के उणरी संतान इसी नां जोगी निपजैला । लड़का नै सहर में भेज्यौ

तो इण वास्तै ही के पढ़ लिख'र हुंसियार बणैला अर कुळ रो नाम बधावैला। पण इण नालायक तो कुळ नै डुबोय नाख्यो।

उणनै मन में आ सोच'र संतोस व्हियो के छोरा नै फांसी जरूर व्है जाएला। पण थोड़ी 'क ताळ में मन जाणै कीकर ई होवण लाग्यो अर मांयनै सूं काळजो टूटण लाग्यो। बाप रो जीव हो अर एकाएक टाबर। फांसी रो ध्यान आवतां ई माथो भमण लाग्यो। इणरै सागै-सागै कांनजी नै घर ग्वाड़ी री मांन मरजाद रो ख्याल आयो अर याद आयो फौजी चौवटियो नै परमानन्द पुजारी। उणरो विचार एक दम बदळग्यो। किणांई व्हो,घर, ग्वाड़ी अर बं'रां री इज्जत नै बचावणो पड़ैला दोखिया अर दुस्मिणां नैं तो दबावणाइज पड़ैला।

घर रै मांयनै सूं रोवण री आवाज आई। कांनजी घर में गयो। आज उणरी जिंदगी में ओ पै'लो मोको हो के उणै आपरी लुगाई नै इण भांत रोवता देखी ही। कानजी नै देखता ई वा भच्च करती बैठी व्हैगी। बाल बिगरपोड़ा अर आंख्या राती चट्ट-जांणै रोरा धुकै,विकराळ रूप व्हियोड़ो। वा बोली —इण पापी तो म्हारी कूख लजाय नांखी, म्हारा दूध नैं दाग लगाय दियो। म्हारो फरजंद अर इसो नांजोगो? उणरै किण बात री कमीं ही? इसो नां जोगो काम क्यूं कियो? म्है उणरै जनमतां पांण टूंपो क्यूं नी दे दियो, म्हूं पापण क्यूं नव महीना इण दुस्टी रो भार ऊंचायां फिरी! लावो छुरी लावो अर म्हारा इण नकामा पेट नै काट'र नाख दो, जिणमें ओ पापी नव महीना लोटियो, म्हारै इण जहरी हांचळां रा टूकड़ा-टुकड़ा कर नांखो, जिणां नै चूस'र ओ काळो नाग मोटो व्हियो।

कांनजी हाक-बाक व्हैग्यो। वो आपरी लुगाई री रीस नै आछी तरियां जांणै हो। उणै कह्यो-थोड़ी धीरैं बोल भली मिनख, कोई बाड़ कांटो सुणैला, बतस रौ मांमलो है अर हाल मुकद्दमो ई दरज व्हैणो है।

—म्हूं धीरैं बोलूं? इण दुस्टी रा पाप नै छिपावण नैं म्हूं धीरैं बोलूं? साची कैय दूं औ थांरो अंस इज नी है। थे एकर नी बार कैय दो के ओ म्हारो अंस इज नी है। इणमूं म्हारी बदनामी व्हैला पण म्हनैं म्हारी बदनामी रो एक रत्ती भर ई भौ नी है। म्हारी कूख नैं तो दाग लगा इज गियो, पण कम सूं कम थांरो पख तो उजळो रैय जावैला।

कांनजी कांनां में आंगळियां घाल दी। उणरो माथो भमण लाग्यो। उणै कह्यो-ओ थारो भरम है के म्हनैं उणनालायक सूं मोह है। म्हारो बस

नाळै नो अवार उण रा टूकड़ा-टूकड़ा कर नांखूं। पण सवाल उण नालायक रो नीं है, सवाल घर अर म्हारी री इज्जत रो है। खानदान बडेरां री मान मरजादा रो है अर सब गां बड़ो खानदान गांम गांमरा उण कमड़िया, पाप-रिया अर दोगिया रो है। जिकां नै म्हे सेंग उमर दबायनै राख्या पण आज वे आपा माथै मुसीबत आई देखनै फाड़नां कूदै है। सो वांरा मरमट गाळण वास्तै नीं चावतां थकाई एकर तो म्हनै उण नालायक नै म्होबिरी करावणी इज पड़ैला। भलै ई उणरै वास्तै घर धोयनै धवळो कर देवणो पड़ै। पछै म्हूं इण दुस्टी रो मूंडो ई नीं देखणो चावूं।

* * *

जिण वखत कानजी थांणा में पूगो उण वखत थांणादार रहीमवगस नमाज पढ़'र कोटर बारै आयो इज हो। वो उणनै देख'र बोल्यौ— कहो सिरिमानजी, म्हूं आपरी कांई सेवा कर सकूं ?

कांनजी भागोड़ी बेंचड़ी माथै बैठ'र निसासा नांखतो बोल्यौ—हजूर म्हूं उण अभागिया छोरा रो वाप हूं जो कतल रा केस में आपरा थांणा में बंद है।

—ठीक तो थूं उणरो वाप है। बड़ो खतरनाक छोरो है। उण माथै तीन सौ दो पूरी लागू व्हैग्यो है, वचणो मुसकल है।

—हजूर आप वड़ा हो, सांमरथ हो, इणनैं कियांई बचाय दो, म्हारो एका एक छोरो है। म्हूं आपरी हर तरै सूं सेवा करण नैं तैयार हूं। अवै मरणवाळो तो मरग्यो, वो तो पाछो आवै नीं अर एक हत्या फेर व्है जाएला। इतरो कैयनैं कांनजी एक हजार रा नोट काढ़ नैं मेज माथै राख दिया। खां सा'व देख्यौ के मुरगी तो माती दीसै। वो बोल्यौ—नीं, नीं, इणरी कोई जरूरत नीं है। ओ कतल रौ केस है, कोई हंसी ठट्ठा नीं है।

कांनजी पांच सौ रा नोट काढ़ नैं और धर दिया अर हाथ जोड़नैं बोल्यौ—हजूर गरीब आदमी हूं, थोड़ी दया करौ, उमर भर आपरौ एह-सान नीं भूलूं ला।

—सिरिमानजी ओ तीन सौ दो रौ मामलौ है, आपनै ध्यान व्हैणौ चाहिजै। तीन हजार सूं एक पाई कम नीं चालै।

सेवट हां-मां करनै दो हजार में मामलो बैठग्यौ।

थांणादार कह्यौ—म्हारी तरफ सूं म्हूं अदालत में बेगा सूं बेगौ चालान पेस कर दंला। मौका रौ अर चस्मदीद गवाह म्हूं होवण दूंला

नीं। पण इण पे'ली थानै पी० आई० सा'ब, सरकल सा'ब अर डी० एस० पी० सा'ब नै मिळणौ पड़ैला। कोई ढंग रौ वकील ई करणौ पड़ैला। इणरै अलावा एस० पी० अर जज माथै कोई ऊपर सू दवाण नाखण री कोसिस करणी पड़ैला, जद कठैई जायनै मामलौ बैठौ तो बैठैला। एक बात फेर कैय दूं। इण पैसां रौ कठैई जिकर मत कीजौ, म्हूं इण मे सू एक पाई पण कोई नै नीं दूला, सो आ बात पण पे'ली समझ लीजौ।

पछै नोट उठायनै कोट री मांयली जेब में हिफाजत सू घालतौ बोल्यौ—

दुनिया साळी कैवे के पुलिस बेईमान है, म्हूं पूछू के आज रै जमांना मे कुण बेईमान नी है ? ए ब्लेक करणिया वैपारी, ए रिस्वतां ठोकणिया मोटा-मोटा अफसर, ए ठेका परमिट देवणिया नेता, सगळाई तो म्हारा भाई बन्द है। पछै म्हानै इज क्यू बदनाम किया जावै ?

—आपरौ फरमावणौ वाजब है हजूर, कुए भाग पड़योड़ी है। कोई नै दोस देवण रौ काम कोनी। कानजी खुसामद रे सुर मे बोल्यौ अर रामा सांमा करनै थांणा रे बारै निकळयौ तो जाणै गढ़ जीत लियौ।

ऊखळ में माथौ दिया पछै धम्मीड़ा सू काई डरणौ सो थाणादार री सलाह माफक कानजी पी० आई०, सरकल अर डी० एस० पी० सगळा नै ई मिळ लियौ। पण हाल ताई तो दो देवता अणपूजिया बैठया हा—एस० पी० अर जज। वारै वास्तै ऊपरला दवाण री जरूरत ही। कानजी नै अखैराज एम० एल० ए० याद आयौ। सात भूडी तो ई जात भाई हो। इण अबखी वेळा मे वो काम नीं आवैला तो कठै सुरगां मे आडौ आवैला। वो दूजोड़ै दिन इज एम० एल० ए० सा'ब रे बंगळै जाय नै हाजर व्हियौ।

माया थारा तीन नाम—फुसौ, फरसौ, फरसराम। एमनै सा'ब रै जनम रौ नाम उखरड़ौ हो पण प्यार पैसा कमाया तो ओगाराम व्हैग्यौ अर धीरे-धीरे अखैराज व्हैग्यौ। अखैराज रौ बाप एक दो भैस्यां राखतौ घर घर-घर फिरनै दूध बेचतौ। स्यात् अखैराज पण ईण उमर दूध ईज बेचतौ पण करम कोई कुण रा खोलनै देख्या है। पाचवी-सातवीं ताई पढ़ लियौ। आवारागरदी मे फिरता-फिरता भासण देवणा सीख लिया अर धीरै-धीरै छोटो-मोटो नेता बणग्यौ। बोलणौ ढंग सर आवतौ कोनी सो जयहिन्द नै जायहिद कैवतौ अर सुराज नै ष्रु राज, तो ई गामड़ा मे तो वो नेता इज गिणीजतौ।

आजादी री आंधी आई तो चोरां री ठौड़ साहू पड़ग्या अर साहां री ठौड़ चोर बणग्या। चुणाव रो मोको आयो तो गाडी भिड़गी अर न्यात-गंगा री किरपा सूं जीत नै विधानसभा में पूगग्यो। अबै क्यूं पूछो अंगरेजजी सारी बातां। तीन-च्यार बरसां में तो गांव में पक्को बंगळो बणग्यो अर भैंस्यां बांधती उण ठौड़ जीप ऊभी रैवण लागी। मोटोड़ो बेटो मिडल फेल हो, सो जिला में एक सेठ री हिस्सादारी में सिमेंट रो होल सेल डीलर बणग्यो अर छोटोड़ो इंजिनियरिंग कालेज जोधपुर में पढ़ण लाग्यो।

कानजी जाय नै एमलै सा'ब नै रामा सामा किया तो आप बोला— जायहिंद ! आवो कानजी, आज तो मारग भूलग्या कांई ?

कानजी आपरी पूरी रामायण सुणाय दी। पूरी बात सुण'र एमलै सा'ब थोड़ी जेज तो चुप रैयग्या, पछै धीरै सीक बोल्या—

हूंऽऽऽऽऽऽ तो आ बात है। पण कोई बात नीं। थे कोई चिंता मत करो। अठै तो कांई पण ठेट दिल्ली तांई आंपणी पूछ है, पछै बापड़ो एस० पी० अर जज किण बाग री मूळी है। म्हनै कमसल बैंक अर डफलफमेंट डिपाट-मेंट में काम सूं जावणो है, उण मोकै इण सरकारी मुलाजिमां नैं ई मिळतो आवूंला। (एमलै सा'ब कॉमरसियल बैंक नैं कमसल बैंक, डेवलपमेंट डिपार्टमेंट नैं डफलफमेंट डिपाटमेंट अर सरकारी मुलिजमान ने सरकारी मुलजिम इज कैवता) सो इण केस री तो आप फिकर इज छोड़ दो। आगलो चुणाव नजदीक आय रह्यो है उणरी चिंता राखो। पे'ली ज्यूं आंपणी न्यात री पक्की संगठन रैवणी चाहिजै।

थोड़ी जेज ठैरनैं एमलै सा'ब आगै बोल्या—सरकारी मुलजिम ई आजकल बड़ा हरांमी व्हैग्या है। बिना मतळब तो माटा बात ई नीं करै। फेर ओ कतळ री केस ठैरयो। आप जांणो के गरज पड़ै जद गधा नैं ई बाप बणावणो पड़ै।

कानजी एमलै सा'ब रो इसारो समझग्यो। लारला दिनां में उणनैं खासो अनुभव व्हैग्यो हो। उणै झट च्यार हजार रा नोट काढ़ नैं एमलै सा'ब से आगै धर दिया। एमलै सा'ब बोल्या—ना, ना, म्हनैं इणारी जरूरत नीं है। थे थारै हाथ सूं इज दे दीजो। म्हारो काम तो फगत जनता री सेवा करणो है। म्हूं गरीबां रो दुख नीं देख सक्यो इण वास्तै इज तो म्हनैं चुनाव में खड़ो होवणो पड़्यो। बोलो, आज म्हूं नीं व्हैतो तो थां

जिसा घरधणी आदमी री कुण मदद करतो ?

कानजी हाथ जोड़ दिया।

—आपरो आसरो है, इण वास्तै इज तो आपरै चरणां में आयो हूं। मोटा अफसरां नैं तो पैसा आपरै हाथ सूं देवणा इज ठीक रैवैला, सो किरपा करनैं पैसा तो आपरै खर्च इज रखावो।

एमलै सा'ब बेपरवाही सूं एहसांन जतावतां नोट ले'र घोळा री जेब में घाल दिया। इणरै पछै कितरा नोट तो ठिकाणै सर पूगा, अर कितरा उण जेब में इज रह्या इणरो हिसाब तो सावरियो जांणै, पण अदालत में न्याव रौ एक नाटक जरूर हुयौ—पी० आई० कितणियां री गळाई पग पटकतौ रह्यौ, वकील थूक उछाळतौ रह्यौ अर जज कदैई चस्मा रे ऊपर सूं अर कदैई नीचै सूं उण दोन्यूं नै देखतौ रह्यौ। दो-तीन पेसियां पछै मुकद्मो खारज व्हैग्यौ अर बळदेव बरी व्हैग्यौ।

फैसला री वखत कांनजी, फौजी चौवटियो, परमानन्द पुजारी, काळूसिंह सरपंच, गणपत पटवारी अर धानपुर रा बीसूं आदमी अदालत में मौजूद हा। मुकद्मा रै दरम्यांन कानजी आपरै बेटा कांनी आख उठाय नैं देख्यौ तकात नीं। फैसलो होवता ई कांनजी चुपचाप अदालत सूं रवानैं व्हैग्यौ। जिण-दिन सूं पुलिस अर कानजी री सांठ-गांठ हुई ही, उण दिन सूं फौजी चौवटियो मोळो पड़ग्यो हो। फैसला री वखत तो पायौइज पलटग्यो। उणै देख्यौ के अबै कांनजी सूं अदावदी राखणी, उल्टी आंपां नैं नुकसाण पुगावैला। पण हालताई उणनै कोई इसौ मौकौ नीं मिळ्यौ हो के वो कांनजी सूं राजीपो करतो। अदालत में उणै देख्यौ के बेटो बरी व्हियां ई बाप नैं कोई खुसी नी व्ही। स्यानूं कांनजी नैं रीस आयोड़ी व्हैला। अर छोरौ सरमां मरतौ बोल्यौ नी व्हैला। आंपा नैं बाप-बेटा नैं मिळावण रौ काम करणौ चाहिजै। वो बळदेव रे लारै लारै उणरै होस्टल तांई गयौ अर पोटाय-पुटूय नै उणनै घरै चालण नै राजी कर लियौ।

★ ★ ★

पूनम री घट्ट चांदणी रात। वे दोनूं जणा धानपुर पूगा जितरै व्याळू वेळा व्हैगी। गांम रा गोर मे छोरा कब्बडी रमता हा अर चांवटै बैठ्या लोग-बाग वाता करता हा। बळदेव नैं फौजा रे सागै आवतौ देख नैं छोरा कानजी रे घरां समाचार देवण नैं दौड़िया। कांनजी घर रे सांम्ही मांचा मायं बैठ्यौ हो, समाचार सुण'र हाक बाक व्हैग्यौ। उणनै ध्यांन इज नी

लाग्यो के अबै काई करणो चाहिजै । वो मामला में समझ्यो के उणनै हरण होणो चाहिजै के मौका । उणनै आ सूजगी के उम्मीद नीं ही के वो निगरगो सू घरै आग जावैला पर वो ई फोजिया रै मार्ग । उणरै गळा में एक अटकग्यो अर कांटा ज्यूं चुभण लाग्यो— नीं पूर्णजनै हौ अर नीं गिटीजतो ।

माथा पर आयोड़ा पसेवा नै अंगोछा सू पूंछ'र कानजी मांचा माथै सू ऊभो होग्यो । पण अबै आगै कांई करणो, आ उणनै दिस नीं लाधी । उणनै आपरी लुगाई रो ध्यान आयो अर उणरा रूंगटा ऊभा व्हैग्या । उण नालायक नै देख'र वा कठैई चेरी-चाकरी नीं करलै । उण पग में एक पगरखी घाली अर दूजी पैरिया बिना इज पाछो विचार में पड़ग्यो ।

जितरै तो उणनै चावटा कांनी सूं बळदेव, फोजो चोवटियो अर लारै निरी ई भीड़ आवती निगै आई । उणनै भमळ आयगी, वो माथो पकड़'र पाछो मांचा माथै बैठग्यो भीड़ थोड़ी फेर नेड़ी आयगी । इतरै तो बिजळी रै पळाका रै ज्यूं कांनजी रै प्रोळ री मेड़ी सूं बंदूक रा तीन फायर हुया-धड़ाम !…धड़ाम !…धड़ाम ! बळदेव रै गोळी छाती में लागी ही अर फोजा चोवटिया रै माथा में । भीड़ तो इसी नाठी जांणै चिड़ियां में दळ पड़ियो । कानजी मेड़ी माथै जायनै देख्यो तो मारण वाळी पण मरगी ही अर बंदूक खनै इज पड़ी ही । कांन जी माथो फोड़ लियो ।

लक्की स्टोन

संझ्या री वेळा बंबई री झवेरी बजार इंदरापुरी बण जावै। जठीनैं देखो उठीनै ई च्यानणो पळका-पळक करै। नजर ई नीं थमै। रात अठै दिन पात ई सुहांमणी लागै। कीमती काचरी अलमारियां में जगमग करता हीरा मोती अर नरम-नरम गादियां माथै पसरयोड़ा मोटी तूद अर गंजी खोपड़ियां वाळा सेठ लोग मरकरी चादणा में सगळाई चमाचम करै। कोई गुजराती, कोई पंजाबी अर कोई सिंधी। पण सगळाई एक इज माळा रा मणिया, एक इज साचा में ढळियोड़ा। चीकणा चेहरा अर बगला री पांख व्है जिसा सफेद झबक कपड़ा, जांणै अलकापुरी रा भाड बैठ्या।

सड़क पर भीड़ री टेलमटेल माच री। खाधा सूं खांधो रगड़ीजै। पण घण खरा लोग इसा के जिणा नै इण हीरा मोतिया सूं कोई मतळब नीं। वे सगळाई पोत पोतारा ध्यान में नीचा माथा कियोड़ा खाता-खाता चाल रह्या। वारे एक कांनी मोटरां री लैंण चाल री-धीरै-धीरै। इसो लागै जाणै कीड़ी नगरी जागग्यो। भांत-भांत री कीड़ियां-नीली, पीळी, धवळी, काळी, सिंदूरी, डमणी, पांखाळी अर रूंआळी सगळाई नमूना तैयार। देखण वाळो भलाई थाको पण ओ रैलो नी टूटै।

इणीज कतार में सू चमाचम करतोड़ी एक नवी केडलोक टळी अर सेठ नगीनदास सामळदास रे आगै जाय नै ठैरी। सेठ नगीनदास बम्बई रा सबसूं मोटा झवेरी गिणीजै। इसा वैपारी री दुकांन रे ठाट रो पछै पूछणो

इज कांई ? गाडी देखो नी आंख्या चूंधीज जावै । पेढ़ी चढ़णो नी घणी मोटी बात है पण फोगो फळो तो उठीनै मूंडो ई नीं कर सकै । सेठ नगीन-दास पोतै गादी माथै बैठाइज हा कै मोटर में सूं एक परदेसी जोड़ी उतरियो । मिस्टर कपलिंग अर उणरी मेमड़ी । सेठ हीरा-मोती बेचतां-बेचतां धवळा लिया हा, इण वास्तै हीरां रै सागै-सागै वां मिनखां री पण पक्को पारखी व्हैग्यो हो ।

वो पेढ़ी चढ़ता गिराक नै एक मिनट में इज तोल लेवतो । देखतां पांण परख लेवतो कै इण मिनखां में कितरोक तेल है । किसा गिराक सूं किसो मोल-तोल करणो वो उणियारो देख नै इज तय कर लेवतो । बंबई रा झवेरी बजार में सैंग तरै रा गिराक आवै । हूंसियार सूं हूंसियार जिको झवेरियां नै ई कांन पकड़ाय दे अर इफोळ सूं इफोळ जिको एक हजार री हीरो पांच हजार में लेयनै जावै अर फेरूं पाछा हंसता हंसता आवै । गिराक नैं पटावण में पण दुकान रा सेल्समेन पण एक-एक सूं आगळा । मजाल है पेढ़ी चढ़यो कोई गिराक जेब हल्की कियां बिना नीचो उतर जावै । मोटर में बैठयां पछै घणी ताळ थ्याज नीं रिणै जरै सेठ नगीनदास री पेढ़ी चढ्यो ई कांई ।

दुकान कांनी आवतोड़ा सा'ब अर मेमड़ी माथै सेठ री निजर पड़ी । आंख रूपी ताकड़ी आपरो कांम करण लागी । नवी चमाचम करतोड़ी साठ हजार री कीमती केडलॉक, जवान परदेसी जोड़ी, फर अर गेवरडीन री कीमती पोसाकां, गळा में गूंधा मोतियां रा हार अर अंगूठियां में जगमग-जगमग करतोड़ा कीमती हीरा । गिराक तौ कोई ताजी जच्यौ । सेठ अर सेल्समेन सगळाई सावचेत व्हैग्या । नेड़ा आयां उणियारौ देखण सूं आई जांण पड़ी के सा'ब वम्बई री कायम रैवासी कोनीं । कोई ऊंचै घराणा री आदमी हिन्दुस्तान देखण नैं आयौ दीसै । सेठ रौ अंदाज सोळूं आना सही निकळचौ ।

मिस्टर कपलिंग इंग्लैंड रै लार्ड घराणा री जवांन अदन में कोई ऊंचा ओहदा माथै कांम करै । उणरौ ब्याव अवार इज हुयौ हो सो हनीमून मनावण नैं संसार री जात्रा माथै निकळचौ हौ ।

सा'ब नैं सो रूम में बैठाय नैं सेठ एक सेलसमेन नैं कह्यौ—एल्या, एक सौ त्रण ! एक सौ त्रण सेठ रौ कोडवर्ड हो । गिराक जिण ढंग रौ व्है तौ, सेठ उण हिसाब सूं इज आंक बोलतौ । उण हिसाब सूं इज उणरी खातरी

ह्ीरो अर उण ढंग रो इज उणनैं माल बतायो जावतो । सो मू ऊपर आक उणरैं बारैं बोलीजतो जिसो गिराक एकदम ओळिखतो जवतो । सो मिस्टर कपलिंग अर उणरी मेमड़ी रे बाग्नै आक तै हुया एक सो पण।

सेठ रो हुकम सावतां पाण बागी मूधी मू मूधी सामरी होवण लागी। मेमड़ी पमर नै बैठगी अर सा'ब री बळी-बळी गिलगी। इणरैं पछै सा'ब एक घोंगा कीमती हीरारी माग कीवी। सेठ थानैं थोरा मू थोरा पनरैं बीस हीरा बताया। एक-एक मू इकबा अर एक-एक मू आगळा। कीमत पाच हजार मू लगाय नै पचास हजार तांई। हरेक बार नवी हीरो देसता इज एक बार तो मेमड़ी री आंख्या चमकण लागती पण थोड़ीक जेज में पाछी मगगी पड जावती। वा हीरो देगनैं पाछी सोपा सेट में समाय जावती जाणै सवा में बुदरियो घुस्यो। सा'ब उणरैं कांनी देसनैं पाछो सेठ कांनी देसतो पण हरेक बार मैणत फोगट जावती। सेवट सेठ पोतैं उठ्यो अर सेफ में मू एक अनोखी चीज उठायनैं लायो। एक जगमग करतोड़ो हीरो, भरपूर पाणी वाळो, मार्थै निजर ई नीं ठैरै।

सेठ बोल्यो– ओ हीरो म्हैं अमुक रियासत रा महाराजा धना मू दस दिनां पे'लीज साठ हजार में लियो हो। काले इज एक गिराक इणनैं स्वीटजरलैंड जावतां पसत पसंद करनैं गयो है। पण आपनैं जे ओइज दाय आय जावै तो उण गिराक वास्तै कोई दूजो प्रबंध कर दियो जासी। बंबई रा बजार में आपनैं आज री तारीख में इण सू बढ़िया हीरो नीं मिळ सकै। भलाई आप फिरनैं तपास कर लिरावो। दूजो म्हारो ख्याल है मेम सा'ब नै पण ओ हीरो जरूर दाय आयो व्हैला। कारण कै आ चीज आपरैं लायक है। अर अब की वार मिसेज कपलिंग नै हीरो साचाणी दाय आयग्यो। वा सा'ब कांनी देख'र थोड़ी मुळकी अर सा'ब हीरो मोल ले लियो।

गिराक पेढी नीचा उतरता ई सेठ नगीनदास सेल्समेन देसाई कांनी देख'र थोड़ा मुळक्या। देसाई ही···ही··· करनै पाळियोड़ा कुत्ता री गळाई पूछ हिलावण लाग्यो। सेठ याद करण लाग्यो आज दिनूंगै किणरो मूंडो देख्यो हो? सेठाणी रो कै बेटा रो? पे'ली चोट में इज पोबारैं पच्चीस। एक चोट ई पूरा बीस हजार री। दो दिनां पैं'ली ओ इज हीरो एक गिराक नै चाळीस हजार में दे'वण नै सेठ घणा थोरा किया हा पण चीकू गिराक मांनियो कोनीं।

झवैरी बजार री भीड़ लिछमी री रेळ-पेळ में आपरी सुभाविक गति

सूं चाकरी री अर मिस्टर कर्पलिंग री विदाई रा ओ टा समंदर में एक जिनसी म्हार री मलाई मनाणगी।

रुत आई अर गई। उण बात नै छ महीना बीतग्या। सेठ नवीन-दास री ताकरी म्हां निजर मिरासां नै नोंकरी थी पण उणो ताजो मिजाज फेरूं नीं आयो। छः महीनां रो अरसो माजरी सी को। सेठ तो मिस्टर कर्प-लिंग नै भूल-भुलायग्या हा के एक दिन अदन सूं सेठ रै नांव एक कागद आयो। लिख्यो हो — आपरै अठा सूं मोल लियोड़ै हीरै म्हांरा तो भाग खोल दिया। हीरो म्हारै वास्तै बड़ो भागशाळी निवड़ियो। उणरै घर में आयां पछै म्हनै फायदो इज फायदो हुयो। म्हारै ओहदा री तरक्की हुई, मेम सा'ब नै वांरै बाप रो अथाग धन मिळ्यो अर सब सूं मोटी बात आ के पूरा पैंतीस बरसां पछै म्हारै कडूंबा में टाबर घरै आयो। हीरो बड़ो सुलखणो निवड़ियो अबै एक तकलीफ आपनै फेरूं देवणी चावूं। म्हनै इणरै जोड़ी रा एक इसा रा इसा हीरा री जोजवांण है। इण वास्तै मेम-सा'ब म्हारा नित रोज कांन खावै सो आप किरपा करनै भारत में सूं जठै होवै उठा सूं ई तपास करनै इसो रो इसो हीरो म्हनै इंश्योर्ड व्ही० पी० पी० सूं अठै वेगो भेज दिराईजो। कीमत री आप कोई चिंता मत करा-ईजो। एक लाख रुपिया लाग जावै तो ई कोई परवा जिसी बात नीं। पण हीरो इसो रो इसो होवणो चाहिजे। म्हनै जठा तांई याद है, भारत री जात्रा करतां वखत एक इसो रो इसो हीरो कलकत्ता में निगै आयो हो। उठै आप जरूर तपास कराई जो। ओ काम आपरै सिवाय दूजा सूं होवणो कठण है। इण वास्तै आपनै इज तकलीफ देवूं सो माफी वख्साईजो। उम्मीद करूं के म्हारा काम नैं आप जरूर पार घालीला।

कागद वाच'र सेठ घणा राजी व्हिया। सा'ब री कागद कांई आयौ जांणै लिछमी टीलो काढ़ियो। हुंसियारी सूं कांम कियो तो सीधी तीस-चालीस हजार री चोट ही। सेठ नैं मिसेज कर्पलिंग री चमकतौड़ी आंख्यां याद आयगी।

अबै हीरा री तपास सरू हुई। पे'लौड़ै दिन झवैरी वजार में अर दूजौड़ै दिन खास-खास ठायां माथै। टेलीफोन करनैं मोकळा मिनखांनैं ई भळांमण घाली पण दौड़ भाग फिजूल गई। बीसां हीरा देख्या पण उण जिसौ हीरौ तो निगै नीं आयौ सो नीं ज आयौ। सेवट हार खायनैं सेठ कलकत्ता कांनी रवानै व्हिया अर देसाई नैं दिल्ली कांनी दौड़ायौ।

सेठ तीन दिना तांई कलकत्ता री सड़कां नापी जरै कठैई जावता चौथोड़ै दिन ठीक विसौ री विसौ इज हीरौ एक देसी फर्म में निगै आयौ। देखतां पांण सेठ रौ जीव राजी व्हियौ। उणरी निजरां आगै सा'व अर मेंमडी रा हंसतोड़ा उणियारा फिरण लाग्या। सेठ नै पक्कायत विस्वास व्हैग्यौ के हीरौ वांनै सोळूं आना दाय आवैला।

हां नां करनै हीरौ एक लाख में हाथ लाग्यौ। सेठ बंवई आयग्या। दूजौ ई दिन इज कागद में लिख्या ठिकाणा माथै सवा लाख री इंस्योर्ड व्ही० पी० पी० सू हीरौ अदन रवानै कर दियौ। अबै जावतां सेठ रै जीव नै कठैई नेहचौ व्हियौ।

पण अजोगी वात आ वणी के हीरौ तो बारमै दिन इज अदन री मुसाफरी करनै पाछौ आयग्यौ। डाक तार रै महकमै लिख्यौ हो के इण नाम रौ कोई आदमी उण ठिकाणै नी है। सेठ रै पेट में डवकौ पड़ग्यौ। मन में वहम रा गोट उठण लाग्या। पैकैज खोलनै हीरौ खरी निजर सू मींटाय नै देख्यौ तो ओळखता जेज नी लागी। औ तो सागण वौ इज हीरौ हो जिकौ छः महीनां पै'ली मिस्टर कर्पालिग नै वेच्यौ हो। झवेरी बजार में मोटरां री चालती कतार में एक सिनेमा की गाडी निकळी—जिणमें रेकर्ड बाजती ही—दुनिया में सब चोर-चोर…कोई छोटा चोर कोई वड़ा चोर…!

अमर चूंनड़ी

अठारवीं शताब्दी री बात । सियाळा रो मौसम । प्रभात री वेळा । एक रथ जोधपुर सूं पाली कांनी एक वरगड़ दौड़तौ जावै । आगै लारै पचासेक घुड़सवार । लस्कर पाछै सूं लैरा । सियाळौ व्हेतां थकां ई रथ रा बैलिया अर घोड़ा हांण फांण व्हियोड़ा । परसेवा रा टपा पड़ै । फुरणियां में सांस नीं मावै । तो ई आंधी रा दोट व्है ज्यूं जावै । लारै धूड़ रा गैतूळ उडै । तीस चाळीस जवांन सागै रा सागै लारै पैदल दौड़ता आवै ।

घड़ीक दिन चढ़यौ अर लस्कर लूणी लांघ नैं गुड़ा-मोगड़ा री कांकड़ में पूगौ । पैदल जवांना नैं मारग में बकरियां री एक एवड़ चरतौ निगै आयौ । एवड़ री बकरी मातौ-मतवाळौ, करारौ घोर व्हियोड़ौ । जवांनां रौ मन डुळग्यौ, सो बकरानैं खाजरू वास्तै उचकाय लियौ । रबारी कूकियौ—वापसी बकरा नैं छोड़ दो, एवड़ एक राजपूत रौ है, सो एक जिनावर रै खातर कठैई विघन पैदा व्हैला अर मिनख मरैला ।

जवांन रबारी री बात सुणनैं हंसण लाग्या । वे बोल्या—थनैं इण बात री जांण है के नीं थूं पाली रा पट्टा में ऊभौ है । आगै रथ गयौ उणमें पाली ठाकर मुकनसिंह जी अर वांरी ठकरांणी विराज्या है । एवड़ रा धणी नैं जायनैं कैय दीजै के बकरौ तो खाजरू वास्तै थारौ बाप पाली ठाकर लेयग्यौ । पाछौ लावण री हिम्मत व्है तो लारै जा परौ ।

रबारी लचकांणौ पड़नैं नीची धूण घाल्यां रवांनै व्हैग्यौ अर जवांन बकरा नैं लेयनैं आपरै मारगै पड़िया ।

★ ★ ★

दिल्ली रा तखत माथै उण वखत औरंगजेब राज करै अर मारवाड़

री गादी मार्थं महाराजा अजीतसिंह। राजा अजीतसिंह कानां रौ काचौ अर मन रौ भोळौ। सुणै जिकौ ई मान लै। इण धींगा मस्ती में लोगा राठौड़ दुरगादास नै देस निकाळो दिराय दियौ। राज दरबार खुसाम-दिया अरजी हजूरियां रौ अखाड़ौ बण्योड़ो। जठै नित नवा साग बणै। पाली ठाकर मुकनसिंह मुसाहब रै रूप में दीवाण रै ओहदा मार्थं काम करै। वे भी रासौ देखनै मन रा मन मैं बळै पण कांई बस नीं लागै। वे दरबार नै चोखी सलाह देवणी चावै, राज काज रौ ढंग सुधारणौ चावै पण कोई बात भरै नीं पड़ै।

उठीनै खुसालपुरै ठाकर प्रतापसिंह दरबार रै मूछ रौ बाळ बण्योड़ा। दरबार वे कैंय जितराई पावड़ा भरै। सो उणां एक दिन राजा नै उल्टी पाटी पढ़ाई

—अन्नदाता मुकनसिंह बादसाह औरंगजेब रौ खास आदमी है। वो सांमदां रौ लूंण खायनै लूण हरामी पणौ करै। आपतो उणनै दीवाण बणायो है अर वो जिण हांडी में खावै उणनै इज फोड़ै। मारवाड़ सू नित रोज आपरी साची मूठी सिकायता दिल्ली पुगावै। अन्नदाता तो देवता मिनख हो सो पोता नै तो इण बातरी जाण पड़ै कोयनीं अर म्हनै इसौ लखावै कै कठैई अन्नदाता नै गादी मार्थं सूं उतारण री दिल्ली सू परवांणो नीं आय जावै।

दरबार नै खुद रा आदमियां मार्थं अभरोसो अर दिल्ली सू खतरौ हो इज सो पाली ठाकर वाळी बात अगी अंग लागगी। सोळू आना जचगी। दिनूगै मुकनसिंह किला मे आवै जरै माथौ वाढण री योजना बणगी।

पण राजमहल री दास दासियां अर चाकर वागरुआं में मुकनसिंह रा मिनख ई मौजूद हा। वारै कांनां में भणक पड़तां ई उणां रातौ रात खबर पाली री हवेली पुगाय दी। बात सुण'र ठाकर ठकरांणी रै मन में पक्कौ खतरौ पैठग्यौ। जिको आदमी दुरगादास जिसा सांमधरमी नै ई देस निकाळो देय सकै, उणनै मुकनसिंह रौ माथौ वढावतां कांई जेज लागै। दोनूं जणा आपसरी में सलाह कीवी। खास भरोसा रा आदमी सार्थं लिया अर रथ जोताय नै रातूरात पाली कांनी रवांनै व्हिया।

* * *

गुड़ा मोगड़ा री कांकड़ मे दो आदमी खेत में ऊभा पालौ वाढ़ै।

धनजी राठोड़ अर भीमो गहलोत । धनजी मामो अर भीम जी भाणेज । गरधणी आदमी, खेती पाती करै अर गुजारा खातर एक एवड़ियो ई राखै । मामो-भाणेज दोनूं जीव रा गैनार अर छाती रा वज्जर । काळजो इसो कै दोनूं मिळनै हजारां मिनखां रो सामनो करण री हिम्मत राखै । रवारी आयनै खबर दीनी कै पाली ठाकर रा आदमी एवड़ में सूं गोजरू वास्तै बकरियो गाडांणी उठायनै लेग्या तो सुणनै भीमा रै झाळी झाळ लागगी । वो रवारी माथै फरसो उठायनै फिरनै बोल्यो निजरां आगै सूं मिनख बकरो उठायनै लेग्या अर थूं अठै ऊभतो म्हांनै रोवण नै आयो है ? निकल जा निजरां आगै सूं, नी तो अबार माथो बाढ दूला ।

अर मानाणी जे धनजी आडो नी फिरै तो विना कसूर एक रवारण रांड व्है जाती । रवारी तो उठा सूं नेतीसा गनाया । अबै दोन्यूं मामा-भाणेज रै आंख्यां में खाणे भेह गियै । हाथां रै बटका भरै । म्हांरै एवड़ में सूं इज बकरो लेयग्या ? अर थोड़ी जोर रै जरकै ? वाघ रै गळै बाड़ला नै हाथ नांखियो । मूंडो भूंडो बापड़ा पाली ठाकर रो, म्हारा बकरिया नै खाय जावै ? डाडां नीं उगेल नांखूं । रजपूतण रा जाया सूं कदेई कांम कोनीं पड़्यो दीसै ! ···मांमै भांणेज पाला वाढण रा फरसा वेवला तो आगा फेंक्या अर खेजड़ी रै टिरता डांडा लेयनै खांधै कीना । एवड़ चरती उठै जायनै पग टोळिया तो पाली रै राज पंथ माथै धोम पग मंडिया । रथ रा चईलां माथै घोड़ां रा पोड़ अर पोड़ां माथै पैदल आदमियां रा पग मंडियोड़ा । दोन्यूं जणा पगां रा पगां लारै अरवड़ियोड़ा गया । पण गया-गया जितरै ठाकर रो धागड़ो काकांणी गांम पूगग्यो ।

काकांणी पाली रै पट्टा रो गाम, सो ठाकर जायनै कोटड़ी में डेरा किया । किनात खांच ठकरांणी मांयनै विराजिया अर ठाकर प्रोळ में । ग्राम में हाको फूटग्यो—धिन घड़ी धिन भाग ! ठाकर पोतै गांम में पधारिया । नाई, कुम्हार, भांवी सगळा कमीण कारू पोत पोतारै कांम लाग्या । गांम रा मौजीज आदमियां आयनै रावळै मुजरौ अरज कियौ अर जाजम ढाळ नैं गांम में अमल री हाको करायौ । घोड़ां ने दांणो अर वेलियां नैं गुळ फटकड़ी दिरीजी ! रोटां वास्तै आटो गूंदीजियौ, साग-भाजी री तैयारी होवण लागी अर मसालौ पीसतां सिला लोडी वाजण लागी । ठाकर रा आदमियां खाजरू करनै बकरौ ऊंचौ टेर दियौ अर विचार कियौ के मसालौ तैयार व्है जितरै अमलड़ा लेय लां अर पछै इणनै पकाय नांखांला । भींत

रै झारं गादी माथै ठाकर पोतै बैठा अर आजू-बाजू बारा आदमी। आजम माथै पूरौ गाम घटोघट बैठौ। कोटड़ी में साधा सू साधो रगड़ीजै, पण रासण नै ई जागानी, अमल री गळणी टप टप करती टपक री। नक्कासी रिचोड़ा दारूड़ियां में असल बसूवो केसर रै उनमान हिलोळा खाय रह्यो। मोवा-सोवा भर-भर नै आंम्हा-साम्हो मनवारा व्हैरी। इतरै तो मांमो भाणेज जाय पूगा।

पिरोळ बारै छिनेक ठैर नै मामै भाणेज कांनी देख्यो। भाणेज बात नै ताड़ग्यो। वो बोल्यो—आप बारै ऊभा रैवाड़ो अर म्हू माय नै जावू। उम्मीद तो कम के वकरियो सेय नै जीवतो बारै आय जाऊंला, पण जे कदाच कांम आयग्यो तो लारली रामत आप संभाल लिराई जो। मामै उणरै पोतिया रै थाल्हो दियो अर मो'र थापोट नै रवानै कियो। भीमड़ो पिरोळ रै मायनै पूगो। आंख्या रा डोळा राता चुट्ट व्हियोड़ा, गिणण-गिणण भमै, जाणै मायनै मैंहं रिवै। परतख काळ रूप बण्योड़ो। भक्ख करतोड़ी भवानी म्यांन में सू बारै काढ़ी। पळाको पड़्यो पळाक करतौ अर ठाकर री सभा तो जाणै भाटा री मूरत बणगी। कोई बोलै न कोई चालै, कोई हिलै न कोई डुलै, कोई चूकारो ई नी करै। भीमड़ा री निजर ऊंचा टिरता माजरू माथै पड़ी। वो धम-धम करतो चौकी माथै चढ़्यो, खाजरू खोल पछेवड़ी में लपेट मो'रा माथै बांध्यो अर आयो ज्यू ई वतूळा रै वेग री गळाई हाथ में तलवार लिया एक छिन मे पाछो पिरोळ बारै निकळग्यो।

बारै आया मामा-भाणेज री आख मिळी तो मामो अचूभा मे पड़ग्यो, गतागम में पजग्यो। वे किण विचार सू अठै आया हा अर ओ कांई रासो व्हैग्यो। बानै इण कौतक री एक रत्ती भर ई उम्मीद नी ही। वे तो आ सोचनै आया हा के आज राटक उडैला। बकरिया रै बदळै पचास-पचीस री खाजरू व्हैला गेहरो घमसांण व्हैला अर मायी हथाळी में राख्यां बिना वकरियो पाछो हाथ नीं आवैला। पण अठै तो रांमत सफाइज परवारगी। वकरियो तो मरियो सो मरियो इज पण पिरोळ में बैठा ठाकर समेत सैंकड़ू आदमियां रो अंस ई निकळग्यो। एकाधै जणै जबान फोड़नै भीमानै टोकियो व्हैतो तो ई मांमा भाणेज रै जीवनै संतोख रैवतो।

धनजी कह्यो—बोल भाणू अबै कांई करणो ?

—आप फरमावो ज्यूं करां-नीचौ धूंण घाल्यां भीमै पडुत्तर दियो।

—सांम्ही कोई जीवता भिनख व्हैता, बारै मांयने ई थोड़ो घणो

आगाप री अंग कोनी, तो बकरियो पाछो लिजावण में ई मजेदारी ही। पण ए तो मगळाई मुरदा है, सफा नाजोगा कायर है, इणां सूं बकरियो खोसनै पाछो लिजावता ई शूरा लागां रे भाग, सो आपनै लायो जठै इणनै पाछो नाख दे।

धनजी निगासा नाखनै कह्यो।

वातरी भीमा नै ई जचगी। गाढीनियां सूं कांई रार करणी अर गायां सूं कांई ग्रास खोसणो। सो उणीज पगै पाछो वळियो अर पिरोळ में जायनै भरीज करतां बकरिया नै नाखतो नोकी माथै नाखतां ठाकर कानी मूंडो करनै बोल्यो - ठाकरां थांरा आदमियां म्हांरो बाकरो लाय नै घणो अजोगो कांम कियो अर उण सूं ई नापावट कांम कायरता बतायनै कियो। वां में इतरोइज तंत हो तो भूंसागड़जी वणनै बकरियो उठायनै लाया'इज क्यूं? चीज खोसनै लिजावण री मजो तो जद आवै के बरोबरी री सांमनो व्है। जीवता मिनखां सूं काम पड़ै अर धीरां सूं भिड़ंत व्है। मुरदां सूं कांई खोसनै लिजावां अर कायरां नै कांई चूथां? सो ओ बकरियो तो पाछो नांखनै जावूं हूं पण एक वात आपनै कैयनै जावूं सो गांठ वांध लीजो के आपरी इण परधै रै भरोसै थाप आईन्दा कठैई वाघ तो कांई पण हिरण्या नै ई मत छेड़जो।

ठाकर री जीभ तो जांणै ताळवा रै चैठगी अर सभा सगळी जांणै पावूजी रा पड़ में मंडनै चित्रांम वणगी। मांमो-भांणज पाछा रवांनै व्हैग्या। ठकरांणी किनात में वैठी आ सगळी रांमत देखै ही। उणै तुरत डावड़ी नैं भेजनैं ठाकर नैं वुलाया अर वोली—ठाकरां, म्हारै मत सूं पे'ली गळती तो आ हुई के आंपणा आदमी इण राजपूतां रै एवड़ में सूं वकरियो उटायनैं लाया अर अवै दूजी गळती आ हुवै है के ए हाथां में आयोड़ा हीरा पाछा जावै है आप तुरत आदमी भेज नैं इण दोन्यूं जणां नैं पाछा वुलावो अर म्हारै खनै भेजावो। पधारो फुरती करावो।

ठाकर रे तो कीं समझ में नीं आयो। ठकरांणी रे कह्या माफक वांरै लारै आदमी दौड़ाय दियो अर पोतै अणमणा सा सभा में जायनै वैठग्या। लारै हेलो सुणनैं मांमै भांणैज पाछळ फेरी—देख्यो एक आदमी दौड़ियो आवै। नैड़ो आयां पूछियो।

—कांई वात है भाई!

—आप पाछा पधारो।

—क्यूं !

—आपनै ठकराणी सा बुलावै।

—किसी ठकराणी सा ?

—पाली ठाकर मुकनसिंह जी रे लाडीसा।

—क्यू कांई काम है ?

—काम रौ तो म्हनै ठा कोनीं पण। आपनै पाछा बुलाया जरूर है। मामै भाणेज दोन्यू जणा एक दूजा रै मूडा कांनीं देख्यौ अर लारै आयोड़ा आदमी सागै-सागै पाछा रवानै व्हैग्या। कोटड़ी रै मायनै ठेट कनात खनै जायनै हाजर व्हिया।

—थे कुण हो ? कनात रे मायनै सू आवाज आई।

—राजपूत रा बेटा।

—केहड़ा राजपूत ?

—ओ गहलोत है अर म्हू राठोड़।

—किसौ गाम-थांरौ ?

—गुड़ौ—मोगड़ौ।

—कांई नांम थारा ?

—धन्नौ अर भीमौ।

—कांई धंधौ करौ ?

—खेती-बाड़ी।

—बकरियौ थांरै एवड़ रौ हो ?

—हा, हुकम।

—थारै में सू नैन्हौ व्हैं जिकौ कनात मे हाथ आगौ करौ।

—क्यूं ?

—म्हूं डोरौ बांधणौ चावू।

भीमै कनात मे पुणचौ आगौ कियौ अर ठकराणी डोरौ बाध दियौ। दोन्यू जणां नै मोळिया बंधवाय दिया। वे सोचण लाग्या—संजोग री बात देखौ, पासोइज पलटग्यौ। कठै तो वे मरण-मारण नै आया हा अर कठै काचा तांतण मे बंधग्या। धनजी अरज करी—

—बाईसा आप म्हानै आ इज्जत बख्सी है तो म्हारी झूंपड़ी तांई पधारौ म्है ई म्हानै मिळै जेहड़ी आपनै चूनड़ी ओढ़ाय नै भाई रो फरज पूरौ करां।

—म्हैं इण साधारण चूनड़ी सारू थारौ जीवौ नीं मांग्यौ है वीरा, थारै हाथां सूं तो म्हनैं अमर चूनड़ी मिळणी चाहिजै। ठकरांणी ठीमर सुर बोली।

—अमर चूनड़ी? दोन्यूं मामो भाणेज एक सागै इज हळफळता बोल्या।

—हां, हां अमर चूनड़ी वीरा अमर चूनड़ी, थे अमर चूनड़ी ओढावण जोग हो। इण वास्तै इज म्हैं आज थारै डोरो बांध्यो है।

अर पछै ठकरांणी ठाकर माथै आयोड़ी विपदा री सगळी गाथा धुरा-मूळ सूं मांडनैं सुणाय दी। बात री गंभीरता नै समझनै उणांई ठकरांणी नै अरज करी—

आप म्हांनै इण जोग समझिया औ आपरौ बड़ापणौ है। बाकी जिण विस्वास सूं आप म्हांनै भार सूंप्यौ उणनै तो भगवान'इज पार लगावेला। मिनख वापड़ा री कांई जिनात सो उणरा काम में लिगार ई फेर फार कर सकै। पण एक बात म्हारी ई आपनै माननी पड़ैला।

—वा कांई!

—वा आइज के ठाकर म्हा परवारी एक पांवडी ई अठी उठी नीं देय सकै। म्है रात'र दिन हर वखत ठाकर रै सागै रैवांला।

—तो इण में कांई अजोगी बात है? आ तो आप म्हारै मन री बात कही। म्हारी तो खुद री आइज मंसा है के आप दोन्यूं जणा हर वखत वांरै सागै छियां री गळाई रैवाड़ो। जदै'इज तो ओ विखो पार पड़ैला। नीं तो आप जांणो के नवकूंटी मारवाड़ रै धणी रा हाथ घणा लांबा है।

—पण मारवाड़ रै धणी करतां इण संसार रै धणीरा हाथ तेर घणा लांबा है बाईसा। रांमजी राखै तो कोई नीं चाखै। अर ओ आप पूरौ भरोसौ रखावौ के पे'ली ए दोन्यूं लोथां जमीं माथै पड़ैला अर पछै'इज कोई ठाकर कांनी हाथ आगौ करैला।

—म्हनैं पूरौ भरोसौ है वीरा थांरै बाहुँबळ रौ अर इण भरौसारै पांण इज तो थां सूं सुहाग री भीख मांगती थकी अमर चूनड़ी री ओढांमणी चावूं।

पछै धनजी अर भीमौ दोन्यूं जणा ठाकर मुकनसिंह रै हरदम खनैं रैवण लाग्या। साचांणी छियारी गळाई अस्ट पोर वे वांनैं छोड़ता'इज कोनीं ठकरांणी नैं आ देख'र घणौ नेहचौ व्हियौ।

उठीने जोधपुर सूं जिण दिन ठाकर नाठ नै पाली ग्राया, उण दिन सू इज बातै पाछा जोधपुर बुलावण री तरकीबां सोचीजण लागी। थोड़ाक दिन बीतया पछै दरबार री तरफ सूं परवांणा ऊपर परवाणा पाली पूगण लाग्या। ठाकर नैं भांत-भांत सू समझाय नैं वेगा सू वेगा जोधपुर पूगण री ताकीद की जावण लागी।

—आप मारवाड़ राज रा दीवाण हो, यूं बिना पूछ्यां'इज पाली कींकर पधारग्या? आपरैं बिना राज-काज रा सैंकडू काम ग्रधूरा पड़चा है। आपनैं वेगो पधारणौ चाहिजै। पाली जैं कोई काम अड़ाऊ व्है तौ एकर अठै पधारनैं काम काज री भळामण घालनैं पाछा पधार सकौ। इण भांत एकर तो आपनैं तुरत जोधपुर आवणौ है, इणमें गळती नी रैवै।

कई महीना ताई लगातार परवाणा आवण सू हार खायनैं ठाकर-ठकराणी आपस में सलाह कीवी के एकर धनजी भीमजी सागै जोधपुर जायनैं दीवाणगिरी सू स्तीफौ पेस करदेवणौ चाहिजै। ठकराणी रवानैं होवती वखत ठाकरनैं भांत-भांत सू समझायनैं भेज्या अर उण दोनू जणा नैं ई अंतसरी भळामण दीनी।

रातवासौ पाली री हवेली में लेय नैं ठाकर दिनूगैं किलै वहीर व्हिया तो मामौ भाणेज वारैं सागैं हा। उठै कायदरौ घड़ियौ-घड़ायौ तैयार हो इण वास्तै किला री पिरोळ पूगताई हुकम व्हियौ के ड्योढ़ी छूट नी है, इण कारण दो आदमी साथैं नी जाय सकै। ठाकर इण वात माथै अड़ग्या के ए दोन्यू म्हारा खास आदमी है, इण वास्तै यांरै बिना तो म्हूं एक पावडौ ई आगैं नी देय सकू. दरबार नैं अरज कराय दी जावै अर जे हुकम नीं व्है तौ म्हूं पाछौ जावण नैं तैयार हूं। किला रैं मायनैं सलाह-सून व्ही। तैं व्हियौ के एक माथौ वढैला ज्यूं तीन ई भेळा वढैला, काई फरक पड़ै सो तीनू नै ई आवण दो। तीनू जणा किला रे मायनैं पूग्या। दरबार नैं मुजरौ अरज कियौ। बैठा, यानांचीता व्ही, राज-काज री सलाह लिरीजी। पण सुमाल-पुरै प्रतापसिंह पोतारो काम नी सार सक्यौ। ठाकर रैं डावैं अर जीमणै दोन्यू वानी जाणैं भैरव बैठा, जिकौ ठाकर रैं माथै घाव किया पे'लीज घाव करण वाळा रौ माथो धड़ भेळौ कर नाखै।

दो घड़ी किला में ठैर नैं ठाकर पाछा हवेली आया अर इण भांत नितरोज किलै आवणौ-जावणौ सरू व्हियौ। नितरोज तीनू जणा साथैं रा साथै किलै चढैं अर साथै रा साथै नीचै उतरैं। प्रतापसिंह री कानीं गू

लेय र पिरोळ रा दरवाजा बन्द कर दिया।

किला में पूरी जावतौ कियोड़ौ हो। दरवार रै घनै पूगता वै'लीज ठाकर रै दोळै घेरौ लागग्यौ। ठाकर खतरा नै समझ नै पोता री भूल माथै पछतापौ करण लाग्या। पण अबै काई व्है ? धनजी भीमजी सू तो जोजन कोस री छेटी पड़ी। बीच में भाखर व्है ज्यूं किला रौ दरवाजौ ऊभौ। प्रतापसिंह नै सांम्ही प्रावतौ देखनै ठाकर म्यान सू तलवार बारै काढली। घेरौ नैन्हौ होवण लाग्यौ अर ठाकर वार करै उण पे'लीज प्रतापसिंह री तलवार वुई सो ठाकर री गाथौ वाढ़ नांख्यौ। दुस्मियां रै मन चीतौ व्ही।

★ ★ ★

धनजी-भीमजी पाछा हवेली पूगा तौ ठा पड़ी के भावी तौ भरीजगी। गजब व्हैग्या। ठकराणी नै कीकर मूंडौ बतावाला ? उणरी अमर चूनड़ी वाळी साधनै कीकर पूरी करांला ? ठाकर माथै ई धणी झूंझळ आई पण अबै कांई व्है, अबै तो हुई सो भाग री। सोच-विचार करण री वखत नीं ही। भासतणै फरूकड़ै कुण जाणै कांई होय ! सो भवानी नै सुमर, ले खाडा हाथ में अर मामौ भांणेज जोधांणा रा किला कांनी रवांनै व्हिया। घर धणी आदमियां नै मारवाड़ रा नाथ सूं टक्कर लेवणी ही। धरती माथै ऊभा आभा सूं भेटी खावणी ही, माटी रा दीवाटियां नै आंधी रै झपाटा सूं मुकाबलौ करणौ हो। पण मनोबल री ताकत संसार में सब सूं मोटी व्हिया करै। उणरी सामरथ रौ कोई पार नीं व्है।

पिरोळ माथै पूगा तो दरवाजो बंद। किला री दरवाजौ भाखर रै उनमान ऊंचौ माथौ किया मानखा री निवळाई माथै हंसण लाग्यौ। तीखा-तीखा लोखंड रा सिरिया रूपी दांत लियां वो हाथियां सू हब्बोड़ा लेवण री हिम्मत राखै तो मिनख बापड़ा री कांई जिनात सो उणरै सांम्हां देख ई सकै। पण मांमै भांणेज कांनी खरी मीट सूं देख्यौ अर भांणेज री निजर पण मांमा री खीरा ज्यूं धुकती आंख्यां सूं मिळी। जांणै वे कैवै ही—

कितांक राखै काळजौ, कितांक नर जूंझार
आमंत्रण आयौ अठै, आज मरण त्यूंहार।

भाणेज मुळक नै मांमा रै चरणां में हाथ लगायौ अर मांमै उणनै छाती सूं चेप लियौ। एक नै किला रो दरवाजौ तोड़णौ हो अर दूजा नै किला रै मांय नै जाय नै मरण त्यूंहार मनावणौ हो। मामौ बेठां भांणेज सुरग सिधार जावै आ अणहूणी बात गिणीजै सो धनजी दरवाजौ तोड़णनै तैयार व्हियौ।

नित नवा कामतरा पड़ोजे पण कोई मान भरेणी पड़ै । दोन्यू भाई हर वगत साथै रैवै जिण सूं ठाकर साथै बात चालण री कोई री हिम्मत'इज नीं पड़ै ।

सेवट आपस में सलाह हुई के ए काम भरै नीं पड़ै । इण बातरो पतो लगायो के ठाकर एकलो किण वगत रैवै । उण वेळा उणनै तुरत किलै बुलायनै घात कर नांखो तो काम बण सकै ।

नोकरां रूप सूं गिणै किया सूं जाण पड़ी के ठाकर सोमवार री एकासणो रावै अर प्रभात रा पोहर दिन चढ़्यां सिवजी री पूजा करण नै जावै । उण वगत घड़ी भरियां एकलो रैवै । धनजी भीमजी उण वेळा साथै नीं व्है । अस्ट पोहर बदोकड़ी में रैवण सूं या उपाय रुपा री वेला व्है तो उण वगत ताको साझ सकै तो सझ सकै ।

दूजोड़ै दिन अठीनै तो ठाकर पूजा सूं निवड़नै सिवाळा सूं बारै निकळ्यो अर उठीनै दरबार सूं हलकारो परवांणो लेय नै हाजर व्हियो । कोई जरूरी कांम वास्तै ठाकर नै ऊभै पगे तुरत किला में बुलाया हा । पण हवेली पूगण सूं जांण पड़ी के धनजी-भीमजी तो कठैई बारै गयोड़ा है । ठाकर विचार में पड़ग्या । वांनै गतागम में पड़्या देखनै ठाकर रा दूजोड़ा नोकर-चाकर जिको ठेट सूं उण दोन्यूं जणां सूं ईसको राखता, ठाकर नै समझावण लाग्या —अन्नदाता आप महीनो भर व्हियो नित रोज किला में पधारो । घात व्हैणी व्हैती तो कदेई व्है जाती । धनजी-भीमजी माथै आपरो विस्वास है जिको चोखो इज है, पण कांई ए दो आदमी दरबार सूं ई वत्ता सांमरथ है ? दरबार तो आप रै माथै पूरा मेहरबांन है । आपनै नाराजगी री फगत वहम है । आप निसंक होयनै किलै पधारो । म्हे दो च्यार आदमी आपरै साथै चालां । कांई धनजी भीमजी व्है जठै इज दिन ऊगै ? नीं तो कांई अधारो इज रैवै ? वे दो न्यूं जणा तो आज वजार कांनी गयोड़ा है, कुण जाणै पाछा करै वावड़ै अर आपनै तो हुकम परवांणै तुरत किलै पूगणो चाहिजै ।

कुमत आवै जरै कैयनै नीं आवै अर भावी भरीज जावै जरै उणरो कोई इलाज नीं लागै । ठाकर परधै री वातां में आयग्या अर च्यारेक आटा खाऊ साथै लेय नै किला कांनी रवानै व्हिया पिरोळ रे दरवाजै पूगतांई पे'लै दिन वाळी सागैई वात व्ही, डचोढ़ी छूट नीं होवण री वहानो वणायनै च्यारूं आदमियां नै तो वारै राख दिया अर ठाकर नै चालाकी सूं मायनै

लेय नै पिरोळ रा दरवाजा बन्द कर दिया।

किला में पूरौ जावतौ कियोड़ौ हो। दरबार रै घनै पुगता पे'लीज ठाकर रै दोळै घेरौ लागग्यौ। ठाकर खतरा नै समझ नै पोता री भूल माथै पछतावौ करण लाग्या। पण अबै काई व्है? धनजी भीमजी सू तो जोजन कोस री छेटी पड़ी। बीच में भाखर व्है ज्यूं किला रौ दरवाजौ ऊभौ। प्रतापसिंह नै सांम्ही भ्रावतौ देखनै ठाकर म्यान सू तलवार बारै काडली। घेरौ नेन्हौ होवण लाग्यौ अर ठाकर वार करै उण पे'लीज प्रतापसिंह री तलवार वुई सो ठाकर रौ माथौ वाड़ नांख्यौ। दुसियां रे मन चींती व्ही।

★ ★ ★

धनजी-भीमजी पाछा हवेली पूगा तो ठा पड़ी के भावी तो भरीजगी। गजब व्हैग्या। ठकराणी नै कीकर मूंडो बतावांला? उणरी अमर चूंनड़ी वाळी साधनै कीकर पूरी करांला? ठाकर माथै ई धणी भूसळ आई पण अबै कांई व्है, अबै तो हुई सौ भाग री। सोच-विचार करण रौ वसत नी हो। मांखतणै फरूकड़ै कुण जाणै काई होय! सो भवानी नै भुमर, ले खांडा हाथ में अर मामौ भांणेज जोधांणा रा किला कानी रवांनै व्हिया। घर धणी आदमियां नै मारवाड़ रा नाथ सूं टक्कर लेवणी ही। धरती माथै ऊभां आभा सू भेटी खावणी ही, माटी रा दीवाटियां नै आंधी रै झपाटां सू मुकाबलौ करणौ हो। पण मनोबल री ताकत संसार में सब सू मोटी व्हिया करै। उणरी सामरथ रौ कोई पार नीं व्है।

पिरोळ माथै पूगा तो दरवाजौ बंद। किला रौ दरवाजौ भाखर रे उन-मांन ऊंचो माथौ कियां मांनखा री निबळाई माथै हंसण लाग्यौ। तीखा-तीखा लोखंड रा सिरिया रूपी दांत सियौं वो हाथियां सू हव्वीड़ा लेवण री हिम्मत राखै तो मिनख बापड़ा री कांई जिनात सो उणरै सांम्हा देख ई सकै। पण मांमै भांणेज कानी खरी मीट सूं देख्यौ अर भांणेज री निजर पण मामा री खीरा ज्यूं धुकती आख्यां सूं मिळी। जाणै वे कैवै हो—

किताक राखै काळजौ, किताक नर जूंझार
आमंत्रण आयौ अठै, आज मरण त्यूंहार।

भांणेज मुळक नै मामा रै चरणां में हाथ लगायौ अर मामै उणनै छाती सू चेप लियौ। एक नै किला रो दरवाजौ तोड़णौ हो अर दूजा नै किला रे मांय नै जाय नै मरण त्यूंहार मनावणौ हो। मामौ बेटा भांणेज सुरग सिधार जावै आ अणहूणी बात गिणीजै सो धनजी दरवाजौ तोड़णनै तैयार व्हियौ।

[illegible] लिगियो [illegible] अवतृतेरनामा [illegible] जिवन लाग्या। [illegible] दरवाजो पुडिया [illegible] [illegible]…! [illegible] आगर पुकारो, [illegible] दरवाजो [illegible] [illegible] अर उठी में [illegible] माथे मुनी।

दरवाजो तूटण सूं किला में गळबळी माचगी। जैड़ [illegible] नाकाबन्दी [illegible] किलारै मांयनै आंगण री भोम सूं भीमड़ी बिजळी रै पळाका रै ज्यूं [illegible]। प्रतापसिंह वळियो। पण [illegible] पुगता-पुगता [illegible]। उणरै नाकी माथै निजर पड़ता ई वो नाग री गळाई उण कानी तूटो, [illegible] तीन च्यारां नै बींध नै वीर भीड़ माथै आय पड़ी [illegible] आवोड़ा [illegible] गुदतो निजर आवी। री [illegible] हुई तो प्रतापसिंह रो माथो जमीं माथै [illegible] प्रतापसिंह पड़तां ई जोर रो हाको कियो अर भीमड़ा नै च्यारूं मेर सूं घेर लियो। खाटक बाजण लाग्यो। तड़ाक-तड़ाक करता माथा उडण लाग्या। सादूळो सिवजी री गळाई तांडव निरत करण लाग्यो। जोर री हुंकार हुई। [illegible] भचा-भच्च ! …भचा-भच्च ! भवांनी भप्पर भरण लागी। सिरै ड्योढी में लोही अर मांस रे लोथड़ां री कीच माचगी। एकल वीर जोधांणा रा किला में त्राहिमाम् मचाय दी।

केहर हाथळ घाव कर, कुंजर ढिगला कीध
हंसां नग हर नूं तुचा, अर दोत किरातां दीध
केहर कुंभ विदारियो, गज मोती खिरियाह
जांणैं काळा जळद सूं, ओळा ओसरियाह

धमचक माची तो पछै वा माची के घड़ी भर सूरज रथ थामै जेहड़ी वात वणी। भीमड़ो बुरी तरै सूं घायल व्हैग्यो। एक पड़ै तो ग्यारै आवै। वार पर वार होवण लाग्या। सरीर सूं लोही री पड़नाळो वग-वग करतोड़ो वैंवण लाग्यो। सेवट मुकन रौ वैर वाळनै सादूळो किला में कांम आयो। मांमै गढ री दरवाजी ढावियौ तो भांणैज सिरै ड्योढ़ी में डेरा किया। कवियां री वांणी माथै सुरसत आय विराजी—

अमर चूंनड़ी

आजूणो अधरात, महला रोई मुकनरी
(पण) पातल रो परभात, भली रोवाड़ी भीमड़ा।

पाली जोधपुर सूं नेड़ी पड़ै अर कुंभलगढ़ री मौड़ो आगौ, सो ठाकर मुकनसिंह री ठकरांणी तो आधी रात रा रोई अर प्रताप री ठकराणी नै ई भीमड़ परभात रा पोहर में रोवाड़ नाखी।

पांच घड़ी लग प्रोळ, जड़ी रही जोधांण री
गढ़ में रौळा-रौळ, थै भली मचाई भीमड़ा।

(मुरगा में)

बूझै मुकनो वात, कद्दो पातल आया करै?
मुरगा एकण साथ, भेळाई मेल्या भीमड़ै।
वैर मुकन रो वाळ, पछै किला मे पोडियौ
धारी धरियां थाळ, भला बजायौ भीमड़ा।

खेत वाळी वात

उतरतो आसोज अर लागतो काती । बाजरियां सांगो पांग पाकोड़ी । बांस-बांस ताळ डोका अर हाथ-हाथ भर सिरटा । दांणा देखो तो जांणै परड़ रा डोळा । मूगां चवळां री फळियां गुरजी भैंस रा सींग व्है जिसी अर मतीरा कानरां री टाफळ पांणी वेळा पग-पग माथै पाथरीजियोड़ी । पाछतरा तिल गवार नीला उदार करतोड़ा, जांणै मेहुड़ो अवार'इज बरस नैं गयो । बस्ती पांत रोही सुहामणी लागै कुदरत रा सिणगार नैं आंख्यां फाड़-फाड़ नै देखता'इज जाओ पण जीव तिरपत नीं व्है । मन ठालो भूलो धापै इज नीं । उठा सूं सरकण री मंसा ई नीं व्है ।

गांम री कांकड़ माथै चौधरी रो एक टणको खेत आयोड़ो । तीन बीसी हळवा रो एकठो चक । भगवांन री किरपा सूं इण पूरा चक में अबकै बाजर चैंठो तो पछै वो चैंठो के देखतांई भूख भागै जिसो । मिनख मारग वैवतांई थूथको नांखै ।

खेत रे सैं बीच एक लूंठो खेजड़ ऊभो । टणको गोड अर लांबा-लांबा डाळा । कदीम सूं उणरै माथै माळो वणै । साख में दांणो पड़तां ई चौधरी गोफण लेय नैं माळा माथै चढ़ जावै सो कातीसरो निवड़ियां इज पाछो नीचो उतरै । गोफणियां रा सरणाट उड़ै । सूंतमी चांमडपोस गोफण, गोळ गोळ एक माप रा गोफणिया अर चौधरी रे बाहुड़ां री करार । दो च्यार वार भमाय नैं गोफण री फटकारो लागै सो जाणै बंदूक में सूं गोळी छूटी ।

अमर चूंनड़ी

गोफणियो उडै सूंसाड़ करतोड़ो। मजाल है कोई चिड़ी री जायो ई चान्च डुबोयदे के मिनख रो जायो खेत में पावडो ई धर दे।

तावड़ो तपियां भातो खावण नै चौधरी माळा सूं नीचो उतरै अर तावड़ो टाळनै पाछो माथै चढ़ जावै। मिनख खेत री रखाळी अर चौधरी रै सुभाव सूं आछी तरियां वाकब हुण वास्तै कोई उणरै खेत कांनी मूंडो इज नीं करै। लावणी ताई धान सफा नकेवळो ऊभो रैवै अर काचरा मतीरा सफा अबोट पड़िया रैवै।

समाजोग री बात के एक दिन उठारो राजा सिकार नै निकळयो। आथूंणा भाखर री ढाळ में झाडी झाडी आयोडी। जिण मे सूंरां री डारां री डारां मछरां करै। दस बीस घोड़ा सू टाळमा मोटयार लेय नै राजा उण वनकटी में वळियो। झाडी उठै इतरी जाडी के ताळी देय नै माठ जावो तो पतो नी लागै। राजा रो घोड़ो थोडीक आगै वधियो के एक अरड़ाट करतो एकलसूर झाड़ी मे सू बारै निकळयो राजा। घोडो लारै नांख दियो। वरगड़ां वरगड़ां···वरगड़ां! आगै सूर नै लारै घोड़ो। घड़ीक जेज में पाच दस कौस रो आंतरो पड़ग्यो। मोटयार सगळाई लारै छूटग्या अर राजा एकलो पड़ग्यो। असैंदी भोम अर उजाड़ मारग। राजा सूर रै लारै थूक वाळ नै घोड़ो रांम भरोसै छोड़ दियो। चालता-चालतां करड़ी रोटी वेळा व्हैगी। सूरज मथारै आयग्यो। आसोज रो तावड़ो साथ बरसावण लाग्यो अर राजा रो सास सोसी में आयग्यो। तिरसा मरता री आम्चा फूटै। पण कठैई पांणी निजर नीं आवै।

सेवट राजा फिरतो-फिरतो उण चौधरी रै खेत कनै पूगो। माळा माथै मिनख ऊभो देखनै उणरै जीव में धावस बाधी। घोड़ो एकण कानी बाधनै वो बाजरी में अरड़ियो। पग-पग माथै काचरा मतीरां री बेला पापरी-जियोड़ी पड़ी। पगां में आंटिया आवण लागी। नीचै पगां कांनी देख्यो तो घड़ा रै उनमान टणका-टणका मतीरा पड़िया। राजा तो देखनै ई निरखत व्हैग्यो। थोड़ो सीक आगै वधियो तो एक डागळ सांची बेल निगै आ में पापरीजियोड़ी निजर आई। पानरा भीना बच भर तानो टाहुरी री गळाई कोटा दियोड़ो। उण माथै मायलोड़ा एक मोटेड़ा मतीरा नै देख नै राजा रो मन डुळग्यो। मतीरो घड़ा रै उनमान टणको, मीठा री गटकी भारी। वो उणनै तोड़ण वास्तै नीचो बुकियो, जितरै तो सूंसाड़ करतोड़ो एक गोफणियो उणरै माथै होय नै निकळयो। नै ऊभो व्हैगो तो मोटा

—तो उणरै माजना में धूड़ !" चौधरी चिड़तौ थकौ बोल्यौ। धरती रौ धणी होय नै इतरौ ओछौ मन राखै तो माजना में धूड़ पड़ैला इज। पण खैर थूं तो एक दो मीठा मतीरा खायलै भाया, तिरस्यां मरता मरता रौ कंठ सूखतौ व्हैला। कठै राजा वाळी रांमायण लेय नै बैठग्यौ।

चौधरी राजा नै पे'ली तो कोरा चुकळिया में सूं ठाडौ टीप पांणी पायौ अर पछै मीठा मिसरी व्हैं जिसा मतीरा धापनै खवाया। राजा तिरपत होयनै पोतारौ मारग पकड़ियौ।

वातां करतां पखवाड़ौ वीतग्यौ। राजा वाळौ मतीरौ पाकनै रांणवाण व्हैग्यौ। वेलड़ी कुम्हळीजगी अर कूपल वळगी। चोखौ दिन देखनै चौधरी मतीरौ लेयनै राजा रै दरवार कांनी वहीर व्हियौ। लट्टा रौ धोतियौ. सफेद पोपलीन री अंगरखी अर झीणी मलमल रौ साफौ। चोटी सूं लगाय नै एडी तांई सफेद भक्क, बगला री पांख व्है ज्यूं। मो'रां माथै ऊजळी वळाक पछेवड़ी में बंध्योड़ौ मतीरौ अर हाथ में तारां सूं गंठियोड़ी डांग। दरीखांनै जायनै खम्माघणी अरज कराई तौ मांयनै जावण रौ हुकम मिळग्यौ।

राजा तो उणनै देखतां पांण ओळख लियौ चौधरी तो वो सागैई। जावतांई मुळकनै आवकारौ दियौ—आवौ चौधरी आवौ! चौधरी तीन वेळा जमीं तांई लुळ-लुळ नै खम्माघणी अरज कर नै ऊंचौ राजा रै मूंडा कानी देख्यौ तो पगां नीचै सूं धरती सिरकती लागी। ओ तौ सागण उण दिन खेत में आयौ जिकोज आदमी! चौधरी रा धै छिलग्या। भंवळ सी आवण लागी। पण पाछी हिम्मत बांधी। अवै उखळ में माथै देयनै हव्वीड़ां सूं कांई डरणौ। व्हैला जिको भाग री। सो गाढ़ राख, मतीरौ राजा रै पगां में धरनै हाथ जोड़नै ऊभौ व्हैग्यौ।

राजा उणरौ संकोच तोड़ण खातर पूछण लाग्यौ कहौ चौधरी अब कै फसलां दूजी किसीक पाकी? चौधरी नै फेर थोड़ी हिम्मत बाधी अर धीरै-धीरै राजा सूं वंतळ करण लाग्यौ। अठी—उठी री मोकळी आडी डोडी वातां हुई पण दोन्यूं जणां उण दिन वाळी हकीकत जवांन माथै ई नीं लाया। पण मन में छकै पंजै सावधान।

सेवट राजा असली वात माथै आयो अर बोल्यौ—चौधरी मतीरौ तो थूं बडौ जोर को ल्यायौ रे। अरे है रे कोई, दीवाणजी नै बुलावौ। चौधरी नै इण अनोखी भेट वास्तै कांई इनांम इकरार तौ मिळणौ इज चाहिजै।

क्यूं गोमजी ?

—म्हूं अन्नदाता री मरजी माफक जांवणा ? गोमजी राजी व्हैनै बोल्यौ ।

—इण रै कोई इनाम इकरार री इंयूं गोमजी नो ? राजा मगन री मनगती बोली ।

—नी, नी म्हारै इण माळी बात अन्नदाता ! गोमजी नी सुनार री अर एक सुनार री चोट करनो बोल्यौ ।

राजा गोमजी रा मांय भागोडिया अर मूठो इनाम इकरार देयनै रवांनै कियौ ।

रूपाळी बींनणी

लचकै लाडा थारी मोजड़ी रै
ढळकै केसरिया री जांन
नगरी रे लोकां पूछियो रै
किसो बीरो परणं पधारै ऽऽ···

रात रा पाछला पो'र में लुगाया रा झीणा कंठ सूं गीत रे सागै सागै ऊंठां अर बळदां री बरीक पण सांतरी व्हैगी। इणसूं वांरै गळां में बांध्योड़ी टोकर माळा अर घुघरमाळां एक लय सूं रुण झुण टुण-मुण अर झम्मर झम्म री समवेत सुर उच्चारण लागी। इण सगळी चळवळ सूं आ बात जाहेर ही के कोई गांम नैड़ो आयग्यो है। जांनी स्यात् गांमवाळां नैं बतावणी चावै हा के कोई जांन जायरी है सो कोई आयनैं देखो।

पण उण कुवेळा में आपरी मीठी नींद छोड' र कुण उठतो। म्हूं जरूर उठग्यो कारण के म्हूं जांनी हो अर म्हारो छकड़ो सगळां सूं लारै हो। म्हैं छकड़ा रा पाटिया रै आपो लगायनैं पग लांबा कर लिया अर सिगरेट सुळगाय ली। इण वखत रात रो पाछलो पो' र हो सो नींद सफा उडगी ही। सिगरेट रे धुंआ रा गोट सागै विचारा रा दोट पण बणण अर विगड़ण लाग्या। बात जे इमांनदारी सूं कही जावै तो आ बात सौ टका सही है के जान में जावती वखत एक तरै रो नसो चढ जाया करै। इण नसा रो असर चूकता जांनियां माथै रैवै। कोई माथै थोड़ो तो कोई माथै घणो। कई लोग तो इण नसा रो असर तो जिनावरां तकात माथै मानै। पण इण

इण रा मांयं मुगतजी, जांन रो हाजो-हूतो, म्हनै मोड़ो भारि नो आवतो । मैं गाना मांय आनो न्हैंगाई ममती आवणी । पांचेक मिनट मुगतजी सूं बीत्या न्हैला के किणी म्हनै पंडोल नै अवाज दिनी । आंख्यां मसळतो देखूं तो आगै सूरज रो माथो निकळता ऊभो । हाका-वाक विहूयोड़ो । म्हे उणनै आवाभूक हालत में देख'र आखरा मरोड़ता कह्यो — काई बात है भाई ?

आप नै सेठजी अबार रा अबार बुलाया है सो पधारो ।

— इसी काई बात है ? बता तो खरी ।

— सूरज विफरग्यो है अर सेठजी सूं नहं पड़ै है, इण वास्ते सेठजी आपनै बुलाया है ।

सूरज रा सुभावनै म्हूं आछी तरियां जांणै हो पण इण मौका माथै उणनूं आ उम्मीद नी ही । म्हूं निकळण रै सागै सहीर विहूयो तो गै सूं पे'ली मारग में सेठजी मिळग्या । मूंडो पड़योड़ो, लिलाड़ में सळ पड़योड़ा अर पागड़ी रा आंटा ढीला पड़योड़ा । म्हनै देखतांई वे एक कांनी ले जायनैं बोल्या—

— चवदै बरसां में बीस हजार रुपिया खरच करनै इण नालायक नैं भणायो-गुणायो इणरो ओ नतीजो है माट सा'ब ?

म्हूं आंख्यां फाड़नैं सेठजी रै मूंडा कांनी देखण लाग्यो । वे बात नैं साफ करता बोल्या—सूरजियो कैवै के म्हूं बिनणी नैं रूबरू देख्या पछै इज उणरै सागै फेरा फिरूंला । उणनै देखा—देखी करणी ही तो दो बरस सगपण रह्यो है, उण वखत कांई ऊंघ आई ही ? अबै एन मौका माथै आ किसीक नालायकी री बात है । देखण रो मतळब तो उणरी पसंदगी-नापसंदगी रो सवाल हुयो । अर इण नालायक री पसंदगी रो नाप तोल कांई ? ओ तो आभा री अपसरा चावैला वा आवैला कठा सूं ? इण मूरख नैं भांत-भांत सूं समझाय नैं म्हूं हारग्यो के टावर म्हारै देख्योड़ो है—फूटरी, फररी अर दीपती है । थूं भरोसो राख । इण सूंई बेसी चावै तो थनैं उणरो फोटू बताय सकां । पण ऐन मौका माथै रूबरू देखण, री हर करणी कम अकल री बात है । पे'ली थनैं कांई मौत आई ही । फेर दो-च्यार मिनट में थूं उणरा गुण-औगुण तो जांण नीं सकै । पछै रूबरू देखण रो मतळब ई कांई ? इण वास्तै अबैं ऐन मौका माथै फालतू हठ छोड़दे । पण म्हारी तो मांनैं कोनीं सो आपनैं हाथ जोड़नैं अरज है के आप इण मूरखनैं ज्यूं-त्यूं

करनें समझावौ। जे कदाच ओ नटग्यौ तो आगलां रौ ग्रर म्हारौ दोन्यू रौ माजनौ जावैला। एक तरै सूं मरण व्है जाएला। म्हारौ बरातियौ नसौ उतरग्यौ।

किसाक भूंडा फंस्या। मन में जूंनी मानतावां अर नूवी मानतावां रौ मथण चालण लाग्यौ। दिमाग में कई विचार आवण लाग्या—प्रेम पे'ली ब्याव के, ब्याव पे'ली प्रेम ? पण ग्रबै इण बातां पर विचार करण रौ वखत नीं हो। ग्रबै तो तुरत कोई बीचलौ मारग काढणौ हो। म्हूं सूरज खनैं पूगौ ग्रर उणनैं भांत-भांत सूं समझायौ पण नटियौ मूहतौ नैणसी, तांबौ देण तलाक। म्हूं हार खायनैं पाछौ जनवासै आयग्यौ। उठै सूरज रै सासरा रा नाई सूं आ ठा पड़ी के सूरज रै हठ वाळी बात उणरै सासरा मे ई पूगगी है। अर इण बात माथै घर रा मिनखां मे ई फट पड़ग्यौ है। दो दळ बणग्या है। एक लिबरल अर दूजौ कंजर वेटिव। लिबरलां नै सूरज री बातां में कोई खराबी नीं दीसै अर कंजरवेटिवां रे वास्तै ओ जीवण मरण रौ सवाल है। कंजरवेटिव दळ री मुखी छोरी री मा ही अर लिबरल दळ रौ मुखी छोरी रौ बाप। दोन्यू दळां रा पोत-पोतारा न्यारा-न्यारा विचार अर दलीलां ही। पण सगळां सूं मोटी बात आ ही के धीरै-धीरै लगन रौ वखत नैड़ौ आवै हो अर कोई राजीपौ नीं बैठतौ हो। पण थोड़ीक जेज में रेडियौ एनाउंस री गळाई खबर आई के छोरी पोतै सूरज नै मिलण वास्तै बुलायौ है। म्हैं छोरी नै, छोरी री अक्कल नै, छोरी री मा नै ग्रर भगवान नैं सगळां नै ई धनवाद दियौ अर इंटरव्यू रे रिजल्ट री वाट जोवण लाग्यौ।

इंटरव्यू रा विगतवार समाचार तौ पछै सूरज रै मूडा सू'इज सुण्या। बणनैं इंटरव्यू वास्ते जिकण कमरा मे बुलायौ वो एक छोटौ'सीक कमरौ हौ। कमरा री सजावट सूं अदाज लागतौ हो के सजावट में कोई खांमची मिनख रा हाथ लाग्योड़ा है। हरेक चीज ठिकाणैसर अर ढंग सू धरियोड़ी ही। दो एक मिनट में लारलौ दरवाजौ खुल्यौ अर उणरी होवण वाळी बीनणी—सारदा आयनैं सन्मुख ऊभी व्हैगी।

सूरज उणरै मूंडा कांनी देख्यौ तो चितबंगौ व्हैग्यौ। सांम्ही जांणै रूप रौ खजांनौ ऊभौ। चंवरी में बैठण री संपूरण त्यारी रै सागै नख सूं सिख ताई जोवन रा भार सूं दब्योड़ी। पण संकोच-सरम रौ कठैई नांम ई नी। प्याला जिसा मोटा-मोटा नैणां अर बांकड़ली भवां री मार सूं

सूरज भायल ढैग्यो । दुनिया नै सगळू बतावण वाळो सूरज आज पोत सगळू अन्धग्यो । सारदा री सफाई सामनी ओग आगै साळवा रे बैठगी । सेवट मारदा मूंग मोड्यो, गुलाब रा फूल जिसा कंवळा-कंवळा होठ हिल्या—बिखरी ! अर सूरज कुरसी सांमने बैठग्यो ।

—थें म्हूं आपनै दाय आवगी के नी ? कोयल रै कंठ जिसी मीठी आवाज गूंजी ।

—ठीक, आना । सूरज अकनकायनै पडुत्तर दियो ।

—तो लिखाओ इण कागद माथे के आपनै म्हूं दाय आवगी अर आप म्हारै साथै फेरा फिरण नै तैयार हो—ओ लियाओ पेन अर ओ कागज ।

सूरज आगापाछो बिचार्यो नी सफाई कही ज्यूं ई लिखनै दसखत कर दिया ।

सारदा कागद री पुरजियो सांवटनै ब्लाउज में घालती बोली आप म्हनै पसंद करली ओ आपरो बडापणो है, पण आप म्हनै जाबक ई दाय कोनी आया । सो आया ज्यूं ई पाछा पधारो । तकलीफ दीनी इण वास्तै माफ कराई जो ।

चिलम भरै जितरी वेज में गांम में हाको सो फूटग्यो । सगळा जांनियां री नसो उतरग्यो । जांन आई ज्यूं पाछी रवानै व्ही । पण अबकाळै नीं तो घुघर माळां री रुणझुण ही अर नीं टोकर माळांरी टुणटुण । उण बात नै आज दस बरस व्हैग्या पण आज ई कोई जांन जावती देखूं तो म्हनै दो बातां याद आय जावै— एक तो सारदा री पडुत्तर अर दूजो वो गीत—

लचकै लाडा थारी मोजड़ी रै
ढळकै केसरिया री जांन……

बोल म्हारी माछळी

भाग फाटो। पंछी पंखेरू बोलण लाग्या। मास्टर पुरसोत्तम री आंख खुली। रजाई सूं थोड़ौसो'क मूंडो बारै काढ़्यौ तो ठाड री कड़कडाट करतोड़ो रेळो इसो आयो के लप्प करतां मूंडो पाछो मायनै लुकाय लियो अर आंख्यां काठी मीचली। पगां कांनी रजाई फाटयोड़ी ही सो पगतळियां ठरण लागी तो गोडा छाती रै चेप नै पसवाड़ो फेर लियो। धींगड़िया री गळाई झोळी वण्योड़ो माचो चरड़ चूं करतो बोलण लाग्यो। उणनै थोड़ी झूंझळ आई। वो कितरा दिना सूं एक दो नूवा मांचा वणावण री मतो करै। पण बातड़ी बैठै इज नी। अर नूवी रजाई वणावण सारूं तो लारला दो सियाळा सूं गूदा गळै पण कोई बात भरै पड़ै इज नीं। घर में नैना मोटा ग्यारै मिनख अर ऊपर सूं ओ मूंधीवाड़ो। माथो ई ऊंचो नीं करण दे। खावण री ई नीठ पूरी पड़ै तो पछै मांचा अर रजाईयां कठा सूं वणावणा? मांचा बिना धरती माथै ऊगरांणो सूईज सकै, रजाईयां बिना फाटोड़ा पूरां में जऊंबी वणनै, रात काढीज सकै पण पेट रो खाडो तो टैम सर भरणो इज पड़ै। खावण रो खोट घालै कोनी सो कायो नै माड़ो तो देवणो इज पड़ै। घी-दूध अर मेवा मिस्टान्न तो गया खाड़ै मे पण छाछ बाजरी मे तो घाटो नी रैवणो चाहिजै।

छाछ री बात याद आवतां ई वो सोचण लाग्यो—आज छाछ कठा सूं मंगावणी? पू गाम में धीणो-धापो मोकळो हो पण मिनखां रा मन ओछा पड़ग्या। इण वास्तै लुगायां गोठां में छाछ म्हैता मकाई नट जावै।

उणैं स्हैर में पढ़ियोड़ा टाबरां री भारी मांग री ही। जिणारे घरे धीणो हो वे मांगीगर विनोभावाजी रै दिन दोफारा भरनै माट सा'ब रै छाछ पुगाय देवता। पण इण मास्टरां रै टाबरां नै खाट बिराजणो जरूरी हो नींतर छाछ भींत आवती अर मास्टरजी रै घर में बगाबग बिना महाभारत बन जावतो।

वो आज्यां सोच्या मूनो-मूनो मांनण लाग्यो— किसोक साठो जमांनो आयग्यो! कितरो मुंगीवाड़ो वधग्यो! अर हाल ई कठै, अजां तो दिन-दिन वधतो इज जावै है। भगवांन जाणै आगै जायनै कांई हालत व्हैला। स्यात् घी सूंघण नै अर गांठ तिलक लगावण नै मिळैला। पनरै-वीसेक वरसां पे'ली जद वो नोकर व्हियो किसोक मजारो वगत हो। कितरी सस्तीवाड़ी, वीज वरसां री कितरी वोहळाई! रुपिया रा पक्का दस सेर गेहूं मिळता अर रुपिया में सेर भर घी आवतो। खांड रुपियारी च्यार सेर पक्की मिळती अर गुड़ नै तो कोई सूंघतो ई कोनीं। सनलाईट साबुन री चक्की फगत दो आंनां में मिळती अर च्यार छ: आंनै गज चोखो कपड़ो चाहिजै जितरो ई मिळतो। वीस रुपिया महीना री तनखा मिळती पण खावतां पींवतां उणमें सूं ई दस रुपिया बच जावता। आज दोय सौ रुपिया मिळै पण धींगलो ई नीं वनै। उल्टा वीस-तीस माथै व्है।

जिण वरस वो नोकर व्हियो उणीज वरस उणरो व्याव पण व्हियो। दोन्यूं मिनख खूब खांवता पींवता अर मस्त रैवता। कोई अड़को न कोई धड़को। किसीक मजारी जिंदगी ही। भैंस भादवो चीतारै तो एक घड़ी ई नीं जीवै। पण हूंणी इतरी बळवांन व्है के भैंस वापड़ी नै तो कांई पण मिनख नैं ई क्षख मारनैं जीवणो पड़ै। उणैं एक ऊंडी निसासा नांख'र डाढी माथै हाथ फेरची तो वा उणनैं वध्योड़ी लागी। उणरो मन जांणैं कींकर ई व्हैग्यो। उणनैं पोतारो वो फोटू याद आयो जिको उणैं व्याव रे दूजी साल धणी-लुगाई दोन्यूं भेळा ऊभ नैं खेंचायो हो। उण वखत सुसीला रौ किसौक फूट रौ सरूप हो। आज ई फोटू देख्यां आंख्यां तिरपत व्है जाए। आछौ कियौ जो उण वखत फोटू खेंचाय लियौ। अवै कठै वो सरूप अर कठै वे वातां। वे पांणी मुल्तांन गया। उणनैं मोकळा वरसां पे'ल री एक वात याद आयगी। स्यात् सांवणी तीज ही। सुसीला ओढ पे'र नैं लड़ा भूंव व्हियौड़ी तळाव माथै पांणी लावण नैं गई अर वो एकलौ धर में बैठचौ हो। थोड़ी'क ताळ में उणरै कानां में मेंहदी गीत री कड़ियां गूंजण लागी।

पांणी जावतो पणिहारियां गावै ही--

मेंहदी तो बाई मेड़ते रै
तांतो गयो अजमेर···
मेंहदी रंग लाग्यो···
कोई जायनै भंवरजी नै यूं कहिजो रे
थारां बाईजी परणीजै घरै आव
मेंहदी रंग लाग्यो···
बाईजी परणीजै तो म्है कांई करां रै
दायजो दीजो भरपूर
मेंहदी रंग लाग्यो···

लुगायां रा समवेत सुर में ई सुसीला रो तीखो सुर छानो नी रह्यो। वो कान लगाय नै सुणण लाग्यो हो—

कोई जाय नै ढोलाजी नै यूं कहिजो रे
थांरी मरवण मांदी घरै आव
मेंहदी रंग लाग्यो···
आज तो धुपावूं धोतिया रे
काले तो मारवणी रे देस
मेंहदी रंग लाग्यो···

घरै आयां वो सुसीला रे माथै सूं मटकी उतरावण लाग्यो तो उणरो रूप देखनै चितबंगो सो व्हैग्यो। वो मटकी उतरावणो तो भूलग्यो अर आंख्यां फाड़-फाड़ नै उणरै मूंढा कांनीं'ज देखण लाग्यो। वा रीसां बळती बोली—म्हूं थारां मरद हूं देखो कोनीं ? यूं कांई आंख्यां फाड़्यां ऊभा हो, कठैई निजर नांख दोला। उणै थूथकी नांखतां कह्यो—थनै साचाणी निजर लाग जाएला म्हारी मरवण, पांणी जावै जरै काजळ री टीकी लगाय नै जाया कर ला हूं। सुण नै वा हंसण लागी तो गालां में नैंना-नैंना खाडा पड़ग्या। कितरा बरस व्हैग्या इण वात नैं पण हाल तांई वो भूल्यो कोनीं हो। मोकळी बार इण बात नैं याद कर वो'करै। खास करनै आंख्यां मीच्यां सूतां थ्है जरै उणनै आ बात याद करण में घणी मजो आवै। मजा मूं आंख्यां काठी मीचनै वो सुसीला रो फूटरापो निरखतो रैवै अर वा बापड़ी मटकी ऊंचायां भारा मरती ऊभी रैवै।

आज ई वो उण चितराम रो अणछक आणंद लूटतो हो के मांचा रै

नींचै कांई गळगळाट व्हियो। पांवरियो कुत्तो पोंगारो खाज मिटावण नै डील रगड़तो व्हैला। संगळा उणरै पाख सूं गरद व्हियोड़ो। ठोड़-ठोड़ सगळा पड़ियोड़ा मोठी ठों अर गाभियां ढीगै उणनैं घिन सी आई। मन तो कांई पण मूंडो ई कड़वास सूं भरीजग्यो। उणै रजाई रै मांयनैं जोर सूं धाकल मारी अर कुत्तो नाठग्यो। सुसीला नैं सो वार कैय दियो के दिनूगै ई दिनूगै आडो आंटाळ नै रागो, उगाडो नीं रागो। ओ सूगलो पावरियो कुत्तो नीं जाणै ताक नैं इज बैठ्यो रैवै। आडो उगाड़ो मिळ्यो के चट मांयनैं। टाबर सूतो व्है तो जायनैं बीच मैं घुस जावै। सगळा गूदड़ा ई खराब कर नांखै। पण उणरी सुणै कुण? सुसीला रो तो जांणै माथो इज भंवग्यो है, सुभाव तो इसो चिड़चिड़ो व्हैग्यो है के बात-बात में बटका इज भरै। सीधी बात कैवां तोई उणनैं ऊंधी जचै। कालकी'ज बात देखो— सबसूं नैंन्या गीगला रै दांत आवै जिणसूं उणनैं दस्ता लागै अर उल्टियां व्है। सो टाबर रसोई में बैठ्यो ही कि उल्टी व्हैगी। उल्टी व्हैणी टाबर रै हाथ री बात कोनीं। उणरी मा रो फरज हो के उणनैं अवेरै। पण म्है कह्यो के उणरो तो माथो इज भंवग्यो है—फड़ाफड़ दो-तीन थप्पड़ां पड़ी टाबर रा मूंडा माथै अर छोरै रोय-रोय नैं घर माथै ले लियो। उणरैं देखादेखी उणसूं दो बरस मोटो पप्पू ई जोर जोर सूं रोवण लाग्यो अर घर में जांणै महाभारत मचग्यो। म्हैं कह्यो—ए भली मिनख टाबर नैं यूं मारै? आ कठारी समझदारी है? अर इतरो सुणतां पांण तो जांणै आग में घी पड़ियो। छळचोड़ी डाकण री गळाई वा म्हारैं कांनी आंख्यां काढ़नैं बोली—एक दिन ई टाबरां नैं अवेरो तो ठा पड़ै, कोरा बातांरा मटरका किया है। थांरी इण टींटा फौज नै अवेरो तो जांणू के टाबरां नैं नीं कूटणा समझदारी है। नीं तो कोरी मोरी बातां रा पटीड़ा पाउण में तो कांई जोर पड़ै? घर में नव-नव टाबर अर म्हारी जिद एकली। म्हनैं तो जीवती नैं खाय ली है दुरिटयां। हे भगवांन अबै तो मौत देवै तो इण नरकवाड़ा सूं पिंड छूटै।

म्हनैं वहम व्हियौ के वा फोटू वाली अर मेंहदी गावण वाळी सुसीला कोई दूजी ही अर आ बड़का बोली डाकण व्है जिसी सुसीला कोई दूजी ज है। उणरौ सुभाव तौ कितरौ ठीमर, कितरौ मीठौ अर कितरौ गरवौ हो अर इणरौ सुभाव कितरौ तीखौ, कितरौ कड़वौ अर कितरौ औछौ है। ब्याव व्हियां पछै च्यार बरसां तांई कोई टाबर नीं व्हियौ जितरैं तो आ

नैना टाबर थानर तरमतो अर अबै तो पलक-पलक में टाबरा नैं मरणरी आमीमां देवैं।

मास्टर पुरसोत्तम नैं एक जोर री छींक आई अर उणं रजाई ढील रै काठी लपेट ली। कठैई ठाड नीं लाग जावै। गई साल इण दिनां मे इज उणनैं नमूनियो व्हैग्यो हो। सुसीला उणरी कितरी सेवा चाकरी कीवी ही। सात दिन अर सात रात मांचा रैं लनैं सूं आगी ई कोनी सिरकी। म्हैं बापड़ी सुसीला नैं जमारा में दुख रै सिवा कांई सुख दियो। ठीक है ब्याव व्हियां पछै च्यार बरस कोई टाबर-टूबर नीं व्हिय जितरै थोड़ा दिन नेहचा सूं निकळग्या। पछै तो बापड़ी फोड़ाइ'ज भुगतिया। रांमू जनम्यां नैं दो बरस व्हिया के स्यांमू आयग्यो अर पछै तो जाणं टाबर लैणसर तैयार इज ऊभा हा अर संसार में आवणरी बाटइ'ज जोवै हा। हर दो बरस री छेटी सूं तीजां, चौथकी, पांचकी, आयचुकी, धापूड़ी, पप्पू अर मुनियो धड़ाधड़ जनमता इज गया। हरेक सुआवड़ इणरैं वास्तै मौत री घाटी बणनैं आई पण भगवांन इज लाज राखी नीं तो राम जाणं म्हारी कांई हालत व्हैती। इण बापड़ी इसी एक नीं दो नीं पण पूरी नव जूंणां भुगती है। ऊपर सूं खुराक चोखी मिळी व्हैती तो ई इणरैं पइ री इतरो पोखाळो नीं व्हैतो। पण अठै तो सगळी उमर पांच री आमद अर सात रो खरच रह्यो। चोखो खावणो-पीवणो चावां पण लावणो कठासूं अर मिनख री गळाई जीवणो चावां पण जीवणो कीकर ?

गोडा छाती में लियां थोड़ी निवास वापरी तो उणं पग पाछा लांबा कर लिया। वो सोचण लाग्यो—इण दीवाली री'ज बात है, टाबरा रे नूंवा कपड़ा ई नीं आय सक्या। टाबर तो टाबर इज है, वे मा बापा री अवखाई नैं कांई समझै। वे तो दूजा टाबरां नैं नूंवा कपड़ा पेहरियोड़ा देखै जद आय नैं मा रो जीव खावै। रांमू, स्यांमू अर तीजां तो फेरूं कांईक समझै है, इण वास्तै वां रो तो इतरो दुख कोनी पण लारली फौज तो सफा अबोध है। वांरै तो बस नूंवा कपड़ा चाहिजै, फटाका चाहिजै। आयचुकी, धापूड़ी अर पप्पू नूंवा कपड़ां अर फटाकां खातर कितरा रोया हा। याद कियां आज ई करूणा आवै।

...टाबरां रै कपड़ा दीवाळी मायै नीं बण्या तो कोई बात नी पण अबै तो बणावणा इज पड़ैला। कितरी गजब री ठाढ पड़ै अर टाबरां रै सरीर मायै ऊनी छोड़नै पूरा सूती कपड़ा ई कोनीं। सगळां रै ई कपड़ा

[illegible] है। इण महीना में [illegible] री
[illegible] आवसी। [illegible] पाव-
[illegible] है। आज दिन दिन [illegible]
[illegible] अर [illegible]। [illegible]
[illegible]। पण [illegible]
[illegible] है। [illegible]
[illegible] बैठ्या है। अठै [illegible]
[illegible] ? [illegible] जाई जा सकै।
पण अठै तो च्यार च्यार [illegible] है। भगवान जांणै ओ [illegible] कियां पार लागै
ला।

…रांमू ई इण वरस [illegible] सैकेंडरी कर लेवैला। आगली साल उणनै कॉलिज में भेजणो है…सोचतां-सोचतां उणरो माथो भंवण लाग्यो। रजाई में आंख्यां खोली तो ई चाफेर अंधारो इज निजर आयो।

दिन ऊगग्यो हो पण मास्टर पुरसोत्तम री गूदड़ा छोड़ण री नीत नीं ही। इतरै तो उणै सुण्यो के सुसीला जोर जोर सूं उल्टियां करै ही। उणरो तो काळजो फड़कां चढ़ग्यो। कारण के महीना भर सूं बहम तो उणनैं हो'इज। वो रजाई एकदम आगी उछाळनै सुसीला खनैं पूग्यो अर बोल्यो—कांई बात है? सुसीला बापड़ी कांई जवाब देवती। ढोळै बैठ्योड़ी गाय री गळाई आंख्यां फाड़नैं उणरै मूंडा कांनी देखण लागी। टाब-रियाई जागग्या हा अर सूता सूता ई गूदड़ां में इज रमण लागग्या हा। पांची कैवै ही— बोल म्हारी माछळी कितरो पाणी ?

कितरो पांणी ?

धापू उणनैं पडुत्तर देवै ही—इतरो पांणी—इतरो पाणी !

मा रौ ओरणौ

गांम रै अड़ौअड़ एक खेत आयौड़ौ—पादर। गांम नै खेत रै बिचाळै फगत एक बाड़। खेत री जमीं इसी उपजाऊ के माथौ बाढ नै बावौ तो उग जावै। सांवण रौ महीनौ सो बाजरियां निनाण आयोड़ी। नीली कच, सांवली भंवर, डाफळपानी। खेत जाणै उफण आयौड़ो। सूरियौ बायरौ पूंगी बजावै अर बाजरी लै'रा लेवै। आंख्यां आधी मिच्योड़ी आधी उघाड़ी।

खेत में बड़बोरड़ियां आयौड़ी, गहर उम्मर व्हियोड़ी, जांणै बडला ऊभा। फळसा आगली बोरड़ी रै नीचै एक टाबर रमै। टाबर एक बाजरी रा झूंबा नै पाळ राख्यौ सो उणरै च्यारूं मेर पाळी बणा'र रोज उणनै पांणी पावै। आज ई तनमन सूं इण काम में लाग्योड़ौ, चुकळिया सूं लोठियौ भरनै ल्यावै अर बाजरी रै गोड में ऊंधाय दे। मूडै सूं बड़बड़ावतौ जावै—

जंतर मंतर बोल पळीतर मोटौ व्हैजा फुरं"

निनाण करती उणरी मा आपरी थर कस्सी रै हिचकी टेक नै ऊभी व्हैगी। टाबर मतर बोलनै पूठ फेरी तो मानै ऊभी देखनै एक दम सरमायग्यौ। वो दौड़नै मा रै पगां मे लिपटग्यौ अर आपरौ मूंडौ लुकाय लियौ।

मा'रै बेटौ एकाएक होवण सूं घणा लाडकौ। वो उणरै आख्यां रौ तारौ अर काळजै री कोर। भाठा जितरा देव पूजनै नौठानीठ देख्यौड़ौ सो वा उणनै अधर रौ अधर राखै। जांणै वो कठै चालै अर कठै हाय

गया। बेटा रै एक बेर गी लियोड़ो है दीयाळी रिया पछै निज मा रै खोळा में सूतग्यो अर सिरांणै एक नवी कहाणी सुणवी। आज ई बेटै हठ झाल्यौ कै मा इसी कहाणी सुणाई जिणी कोई भांति'सीक कहाणी सुणा, जिण में ... धमकै धड़ाम-धड़ाम अर बंदूकां छूटै धड़ाम-धड़ाम !

मा रै जीव नै एक खिरगी व्हैगी। जिण रोज ... अर बंदूकां वाळी कहाणी कठा सूं लावणी ? मा बोली - बेटा, इण रा कहाणी कैणां तो मारग ... भड़ाकड़ा मारग भूल जावै।

इण रोज रो भड़ाकड़ा मारग कोनी भूलै ? बेटो गळगळो होय नै बोल्यो। आंख्या भरीजगी। मा रे हार ... पड़ी।

थोड़ी ताळ आंख्यां मीच नै मा बोली - काती महीनै दीयाळी आवै बेटा अर उण रै दो दिनां पे'ली आवै धन तेरस। सेठ साहूकार उण दिन घर-घर सगळो ई गेहणो गांठो नै पैसा टका बारै काढ़ै अर दरवाजा बंद करनै रात रा लिछमी नै रिझावै। लिछमी धनरी देवी गिणीजै इण वास्तै लिछमी रा लाडका उणनै तन मन सूं पूजै।

पण बेटा नै नीं तो लिछमी सूं मतळब हो अर नीं उणरी पूजा सूं। वो तो बंदूकां रै धड़ाकां नै उडी कै हो। वो मा रै मूंडै कांनी देखण लाग्यो। मा ठीमर सुर में आगै बोली --थारै जनम रै दो वरसां पे'ल री वात है बेटा, आंपणै गांम में धाड़ो पड़्यो हो, धन तेरस रै सै दिन। चवदै धाड़ैती नव ऊंठां सूं चढ़नै गांम लूटण नैं आया। धवळै दिन रा दोपार री वेळा दड़ी छंट दोड़ता नव ई ऊंठ गांम रै मांय वळिया। कातीसरा रा दिन, खेतां में ऊभा तिल ग्वार तड़ै, पैसा दीनां ई मजदूर मिळै नीं सो करसा तो सगळाई खेतां में हा। धाड़ैती पण इण वातनैं आछी तिरियां जांणै हा के गांम में लारै रह्योड़ा मिनख वौदा है अर इणां में सूं कोई वांरो सांमनो करण नैं नी आवै। सो पवन रै वेग आवतोड़ा ऊंठ एकदम आयनैं चोवटै रुकग्या अर वंदूकां रा दो तीन भड़ाका एक साथै इज व्हियां— धड़ांम ! धड़ांम ! धड़ांम !

वेटा नैं कहाणी सुणण में रस आवण लाग्यो, वा मा रै खोळा में आगौ सिरकग्यो।

—वंदूकां रा भड़ाका अर धाड़ैतियां रै आवण री खवर सुणनैं गांम में खळबळी सी माचगी। मिनख जीव लेयनै दौड़ण लाग्या। घरांरा वारणा खुला पड़्या, चीज वस्त ऊघाड़ी पड़ी, पण कोईनैं कोईरी चिंता नीं।

सगळां रैई पोत-पोतारै जीव री पड़ी। आप मरतां बाप किणनैं याद आवै। लुगायां रै कोई री टाबर पोड़िया में सूतो तो कोई री बारै रमणनैं गयोड़ो तो कोई रै चूल्है माथै घाट बिना हिलायां ओदी व्है री पण सगळी घर-बार छोड़-छोड़ नैं जीव कराळियै नाठी।

जीव बचावण नैं कोई कोठा कोठियां में वळियो, कोई घास री बागर में घुस्यो तो कोई राली गूदड़ां में बड़ग्यो। किणैई रैबारियां रै बाड़ां री सरण लीवी, किणैई भीलां रा झूंपा संभाळ्या तो कोई रा पगथेट खेतांरी बाजरिया में जावता ठमिया। आदमी'र लुगायां सगळा हांफ फांफ व्हियोड़ा, पेट रा गोळा ऊंचा चढ़योड़ा, छाती में सांस नी मावै। आदमी धोतियो पकड़ै तो पोतियो बिखर जावै अर पोतियो संभाळै तो धोतियो खुल जावै। रावळी पिरोळ पुरोहितां रा घर अर मंतां सीमाळियां रा आंगणां मिनखां सूं भरीजग्या। कोई धूजै, कोई रोवै तो कोई कळपै।

उठीनैं धाड़ितियां चांवटा रै से बीच ऊंठ भोकिया, आंतरा माथै जाजम ढाळी, कपड़ै री दुकान फोड़'र मोठड़ा फुकाया, सबा माथै नूवा खेस राळिया अर सब सू पे'ली सुनार री दुकांन लूट'र मोहरत कियो। एक जणो बंदूक ले'र टूकियो बैठ्यो, दूजोड़ो जाजम माथै ऊंठां खनैं ठैरियो। बाकी बारै जणा सुनार नैं साथै लेय नैं मोटी-मोटी हवेलियां कांनी चाल्या।

गांम में स्यापो छायोड़ो, पांनड़ो ई नीं हिलै, चिड़ी रो जायो ई नीं फरूकै, कुत्ता ई जांणै पताळ में पैठग्या। धवळै दिन रा गांम सफा सूनो मसांण व्है ज्यूं लागै। घोड़ी-घोड़ी जेज में ठैर-ठैर नैं तिजोड़ियां माथै घण बाजै धम्मीड़...धम्मीड़। कदै ई कोई जोर सूं कूकै अर ए सगळी आवाजां आधी रात रा सरणाटा में सुणीजै ज्यूं गांम रा इण खूंणा सूं उण खूणा तांई एक सरीखी सुणीजै।

कांबड़ियां रा सरणाट उठै—सड़ंद सड़द ! और डंडा रा बरणाट उठै-बडंद। धडंद। मिनखां भाला उघड़गी, बंदूक रै कुंदां रै धम्मीड़ां सूं माथा फटग्या, खून सूं आंगणा लाल कंबोळ व्हैग्या पण रागसां रा मन नीं पसीज्या। उणां जिण घर नैं लूटियो उण में निजर पड़ी कोई चीज साबत नीं छोडी। किवाड़ तोड़ दिया, टीकर फोड़ दिया अर पेटिया रो चूरो चूरो कर नांख्यो। हरेक लूटयोड़ा घर सूं लगाय नैं चावटा री जाजम तांई चीजा री पाज बाधगी। भाळा, ईंवणिया रेसमी कांचळियां, मलमल रा धोतिया, धोरा वाळा फेटिया, चोथे फेरै री चूनड़ियां, हींगळू री कूंपिया,

गुग्मा री हंसिया, बालक री [illegible], म्हां [illegible] री हंसियां, [illegible]
री [illegible] अर न [illegible]। ऐ भीड़ ऊभी मारग गली-गली में
जिगरियोड़ी पड़ी ही। भावड़ै री आडण मायै लिछमी रा ढिगला
लाग्योड़ा। [illegible]। ढोमी नै
[illegible] बुलायो। ढोल-थाळी पुरीज रह्या, थोमा भर भर नै निछरावलां
व्है री। ऊंटां नै घेरण नै पां रा पीगा पाग रह्या, पी ऊंनो करण नै कपड़ां
री होळी होम री। जरी, रेसम जोर जट अर रेसमीन रो ढेर लाग्योड़ो।
जरी रो एक एक टुकड़ो पांन-पान मो री कीमत रो, जिणां नै उठाय-उठाय
नै आग में होम रह्या। पूरो ठाट जम्योड़ो।

बेटै नै आणंद आवण लाग्यो, उणरो बाल मन सगली चीजां परतग देखण लाग्यो। मा आगै बोली— आंपणै पादर रै ज्यूं गांम रै उतराद में एक खेत आयोड़ो है—सोळंकियां रो वाड़ियो। इण खेत में अजीतसिंहजी सोळंकी कई मिनखां सागै बाजरी गाळता हा। उणां ई बंदूकां रा भड़ाका सुण्या अर पछै देख्यो कै धोरै माथै सूं मतीरा गुड़कै ज्यूं मिनख वाड़ कूद कूद नै खेत रै गांयनै गुड़कै है। वांनै खतरा री जांण व्हैगी।

—कांई बात है रै ? गुड़कण वालां नै अजीतसिंहजी पूछ्यो।

—धाड़ैती गांम लूटै है। कोई गुड़कतो गुड़तो बोल्यो।

—धाड़ैती गांम लूटै अर थे आय नै बाजरी में लुको ? फिट रै नादारां थांनै।

राजपूत री आंख्यां में लाल डोरा तणग्यां। मूंछांरा बाल ऊभा व्हैग्या। उणी वखत हाथ री दातर आगी फेंकनै गांम कांनी रवानै व्हिया। खेत में ऊभा किमतरीया कूकीया—अजीतसिंहजी गेला व्हैग्या कै कांई बात है ? धाड़ैतियां माथै घाव करणो मौत नैं हेलो करणो है।

—मौत ? मौत एक बार व्हिया करै। आज मातर भोम री ओरणो खेंचीजै हैं अर म्हूं जांणतो थको मूंडो लुकाय नैं बैठूं तो म्हारी मौत तौ व्है चुकी। इण मौत करतां तो वा मौत लाख दरजै चोखी।

घर में सस्तर पाटी रै नांम माथै फगत तलवार रौ एक खापटौ हो। वे चुपचाप तलवार ले'र निकळता इज हा के उणांरी बैंन देख लिया। वा वारणौ रोक'र रौवती कळपती बोली—

—वीरा पे'ली इण टाबरियां कांनी देख लो। इणांरी मा संसार नी है सो विचार कर नैं पग आगै धरजौ।

ागा सिरकजी म्हूँ ई गोडीवाळ लूं।
क्यां है के बटण है, दीखै कोनीं। अठै तौ आगै ई
ेरी आवै। आधौ ढूंगौ टेक नै नीठ बैठा हूं अर
फरमावै के थोड़ा आगा सिरकजौ। घर रा तौ
आटौ मावै। लारली ठेसण माथै इण सेठां नै
थोड़ी सी'क जगै दीवी तौ होळै-होळै ग्यावणी
ंजम्या। छाछ नै आई अर घर री धणियांणी
ं फेर न्यारा करै। जांणै पूरा जावै है। दो
इज ढाबली। अबै तौ माथा मायै बैठणौ
ा राख जौ।

ंई कोई आंती भायोड़ौ दीसै। बंतळावतां
ं सुणाय दी। घरां सूं लड़नै निकळ्यौ
ो तेड़ मेलै अर हारचौ हाकम जांमनी
ौ आगा इज भला। राड़ आडी वाड़
ा सूं भारत व्है जाएला। सो उणरै
ागला रै ज्यूं एक टांग माथै ऊभौ

ं पसरनै बैठी हो। मटकी रै उन-
ट मायौ, गोळ-गोळ बटण जेड़ी
ा। परसेवा में लयपथ व्हियोड़ौ
ा अंगोछा सूं मिनट-मिनट में
ौ सांकरी गळाई नीच लौ
ौ। गाडी में कांई विराज्या
ौ हो।

हा। करड़ा लट्ठ व्हियोड़ा
ौ-ऊंची बुसर्ट, दिलिप
ौ चस्मौ अर हाथ में
ा मोडरेट वण्योड़ा।
आय नै विराजग्या

ौ एक सिरिमांनजी फेर विराज्या

ठौड़ भांग पड़ी

[illegible] री बेळा । [illegible] नावतो पड़ै । भाग्यो फाटै जिग्यो । मुगां बाजै । [illegible] करनी । [illegible] । मेळी आगर मिळै गो जायो ई वारै नीं [illegible] । [illegible] बाजळी [illegible] । आ तो आ [illegible] नै काढ़णी [illegible] । पण [illegible] जिकै तो भांग मोली में आयगी अर दिन [illegible] जायनै गाड़ी [illegible] । [illegible] ई जायनैं टिगट मांग्यो तो बाबू नैठो इज आयो —म्हारी जेज कांई जंग आई ही ? अबै फा फूं व्हियोड़ा जांणै बाबू नै निजाग करण नै पधारचा है । झट निकाळ नै बाळो आगा पैसा, गाड़ी आउटर मनैं आयगी है ।

टिगट लेय नैं डब्बा में चढ़चो तो थचोथच भरचोड़ो । हिलोळा खाए । पग मेलण नै ई जगै नीं । मांयनै वड़तां ई जांणै गारियो पड़चो—

जगै कोनीं ! जगै कोनीं ! वारै ! वारै !

पे'ला कवा में इज माखी अर चवरी में इज रांड व्हैती देखी तो वारैं लारै धूड़ वाळी । पण नीचै उतरियो जितरै तो भू sss sss क ! जांणै गधो भूंकियो । काळजी फड़कां चढग्यो । जे लंगूर री गळाई फदाक मारनैं लप्प करतो नी चढूं तो लारै रैय जावतो सै मैंणत अकारथ जावती अर कातियो विकियो कपास व्है जातो । पण आंधां रा तंदूरा रांमदे वजावै सो गाडी तो कियांई पकड़ली ।

पण इण डब्बा में ई वा री वा गत । करम नैं छिया साथै चालै । करणो कांई करणो ? सेवट हिम्मत करनैं एक जणा नैं होळै सी'क कह्यो—

अमर चूंनड़ी

भाई जी राज, पोड़ा आगा सिरकजी म्हूं ई गोडीवाळ लू।

पहुतर मिळयो-आंख्यां है के बटण है, दीसै कोनी। अठै तो आगै ई मरां हां। सांस ई दोरी-दोरी आवै। आधो हूंगो टेक नै नीठ बैठा हां अर आप अबै पधारया है सो फरमावै के पोड़ा आगा सिरकजो। घर रा तो धरटी चाटै अर पांवणां नै आटो भावै। लारली ठेसण माथै इण सेठां नै ज्यूं-त्यूं सांकड़-मांकड़ करनै थोड़ी सी'क जगै दीवी तो होळै-होळै ग्यावणी भैंस री गळाई पसर नै विराजग्या। छाछ नै आई अर घर री धणियांणी बणनै बैठगी। ऊपर सूं टसका फेर न्यारा करै। आंपै पूरा आवै है। दो मिनखां री जगै तो इणां एकलै इज दाबली। अबै तो मापा माथै बैठणो बाकी रह्यो है, या ई मन में मत राख जो।

म्हैं देख्यो ओ ई म्हारी गळाई कोई आंती मायोड़ो दीसै। बंतळावतां इज वाप्यां पड़ै। एक री इक्कीस सुणाय दी। घरां सूं लड़नै निकळयो दीसै। साची कही है तप्यो भाठो तेड़ मेलै अर हारयो हाकम जांमनी मांगै सो माथै व्हियोड़ा मिनखां सूं तो आगा इज भला। राड़ आडी बाड़ चोखी। नीं तो अबार कठै ई तिणकला सूं मारत व्है जाएला। सो उणरै लारे पावड़ै-पावड़ै धूड़ वाळ नै म्हूं बगला रै ज्यूं एक टांग माथै ऊभो व्हैग्यो।

सेठ साचाणी ग्यावणी भैंस री गळाई पसरनै बैठा हा। मटकी रै उनमांन टणकी तूद, दोणियां जेड़ो पोटम पोट माथो, गोळ-गोळ बटण जेड़ी आंख्यां अर पाणी रै जिसा मैला पांण कपड़ा। परसेवा में लथपथ व्हियोड़ी बकरो धासै ज्यूं बासतो हो। रावा माथै पड़्या अ गोछा सूं मिनट-मिनट में परसेवो पूंछतो अर जितरी वार परसेवो पूछतो साढरी गळाई नीच सो होठ लांबो करनै अस्स ऽऽऽ ऽऽ री आवाज करतो। गाडी में वाई विराज्या हा आंणै रेल्वाई विभाग माथै मोटो एहसान कियो हो।

साम्हली सीट माथै एक बाबू सा'ब विराज्या हा। करड़ा मट्ट व्हियोड़ा बन्दूक री सोळी व्है जिसो काटी मोरी रो पैंट, ऊंचो-ऊंचो बुशर्ट, छिंतिर बट बाल अर तलवार कट मूंछां। आंख्यां माथै काळो चश्मो अर हाथ में अंगरेजी रो अखबार। कड़का-कड़क उस्तरी में भस्ड़ा मोरंरट बण्योड़ा। जाणै अबार इज हेलीकोप्टर सूं उतरनै सीधा गाडी में आय नै विराज्या व्है।

बाबू सा'ब रै पासवाड़ै बारी कानी एक निरिमानवो फेर विराज्या

है। [illegible] । [illegible] आगै [illegible] । [illegible] री
[illegible] । [illegible] । [illegible] मोटा-
[illegible] री
[illegible] । [illegible] नाफैर
[illegible] मैदांन।
अर [illegible], [illegible] जोट
[illegible] । [illegible] जोग फ़ड़ी के
[illegible] हा।

डब्बा में भीड़ अणूती घणी ही। पगथाळो फेरणी ई कुसी करण रै बगोवर ही। म्हारी पूठ में एक बाबोजी महाराज ऊभा हा। भस्मी रमायां अर हाथ कमंडळ लियां मासियान जाणै सिवजी रो अवतार। अर मूंडा आगै एक रवारण घर धणी री गांठड़ी ऊंचायां 'इवनिंग इन पेरिस' री सुसबू फैलावती ऊभी ही। पूठ में बाबाजी रा हाथ कमंडळ अर चींपटा सुवण लागा अर नाक में एवड़ रै पसेव री गमगोळ फूटण लागी तो जीव घुमटी जण लागो। पण निजोरी बात ही, जोर कांई करतो। रांम जाणै दिनूंगै मूंडो किणरो देख्यो हो।

अपूठै ऊभै इंज बाबाजी नै अरज करी-गुरुदेव आपरा सस्तरपाटी थोड़ा सावळ राखावो, नीं तो इण गरीब रा हाडका भाग जाएगा। बावोजी सुणनैं पे'नी तो थोड़ा हस्या अर पछै ठेट कबीरजी री निरगुण वांणी में बोल्या—

थोड़ा धीरज रक्खो भगत, संसार असार है अर सुख-दुख का जोड़ा है। साधु संत की सोहब्बत तकदीर वाले को मिलती है। सो मालिक का सुमिरन करो और प्रेम से सीधे खड़े रहो बेटा !

बावैजी महाराज फैसलो सुणाय दियौ अर उण रवारण नैं तो बापड़ी नैं कैवण री कोई रस्तौ ई कोनीं हो। वा तौ पोतै ई म्हारी गळाई एक टांग माथै ऊभी ही। सो बावाजी रा उपदेस प्रमाणै आंख्यां मींच अर नाक भींच नैं सीता पति री सुमरण कियौ के है दीनानाथ ! कोई मुसाफर नैं सुमत दे सो वो आगला ठेसण माथै उतर जावै अर म्हनैं इण सत्संग सूं मुगती मिळै।

गाडी होळै-होळै स्पीड पकड़ी तौ डब्बा में थोड़ी सांति वापरी। सीटां माथै बैठोड़ै बड़ापणा री निजर सूं ऊभोड़ां कांनीं गरुर सूं देख्यौ अरऊभोड़ां साम्यवादी निजर सूं बैठौड़ां कांनी खरी मीट सूं जोयौ। धीरै-धीरै आपसरी

में थंतळ सरू व्ही । पोता री तूंद माथै खूब प्यार सूं हाथ फेर नै अंगोछा सूं लिलाड़ रो परसैवो पूंछतां सेठ म्हनै पूछ्यो—

—आपरो किसो गांम ?

—खांडप

—आगै कठा तांई जावोला ?

—जोधपुर तांई ।

—म्हूं ई लूंणी तांई चालूंला ।

— आपरो कठै बिराजणो ?

—म्हूं रैवूं तो जोधपुर हूं पण म्हारी दुकांन रांणी वाडा में है ।

—आपरो नांम ?

—किसन गोपाळ ।

—दुकांन तो आपरी ठीक चालती व्हैला ?

—ठीक है सा, दाळ रोटी निकळ जावै । वाकी तो इण जमानां मे बिणज-वैपार कांई करणो है, दुख देखणो है । पण कबूतर नै कुवो सूझै । वडेरां रो घंधो है । दूजो करणो चावां तो ई कांई करां ।

—क्यूं सेठां अेड़ी कांई तकलीफ है बिणज वैपार में ?

—तकलीफ तो भाई जी, अबै आपनै कांई वतावां । लागै जिणरै चरवरै अर दुखै जिणरै पीड़ । कह्यां सू कांई थाग लागै । कह्यो है के— कुठौड़ री पीड़ अर सुसरोजी वैद —अबै कैवणो ई किणनै रह्यो ?

– तो ई कांई वतावो तो खरी । म्हैं तो आ जाणां के इण जमाना में वैपारी खूब कमावै अर मजा करै ।

सेठजी एक लांबी ढकार लेवता बोल्या—ओ थांरो कसूर कोनीं भाया, आतो परम्परा री रीत है के पराई थाळी में घी घणो दीसै । बाकी तो असल बात आ है के वैपार रै वास्तै बड़ो खराब टैम आयोड़ो है । अबै तो बस खोस खावणा अर नांठ जावणा । दूजो वात ई'ज नीं । कितरा तो अफसर । टोळा रा टोळा । भेळा किया व्है तो वाड़ो भरीज जावै । सेलटैक्स रा न्यारा, इनकमटैक्स रा न्यारा, फूडप्रेन रा न्यारा, हेल्प वाळा न्यारा, इनफोर्समेंट रा न्यारा तो पुलिस वाळा न्यारा । अर सगळाई म्हारा बेटा एक एक सूं अगळा तिलाट रै बूक मां डिलीश । भूगी भवानी रै ज्यूं लाव-लाव ई'ज करै । इणांरा पेट है के लेटर बक्स है । ठूसता ई जावो तो ई खाली रा खाली । एक मूंडो व्है तो हाट मू ई

भरीज आवै पण [illegible] री पूछ सूं ई कोनी भरीजै । [illegible] ऊंचा-नाचरा [illegible] । [illegible] अर [illegible] धूप री [illegible] । अबै आप इण [illegible] करो के [illegible] है [illegible] ।

पण सेठा ! आप ईमानदारी सूं धंधो करो तो किणराई पेट क्यूं भरणा पड़ै ?

—ईमानदारी ? सेठ हसनै बोल्या—आप काई धंधो करो ?

—मास्टर हूं । टाबर पढ़ावण रो धंधो करूं ।

—माट सा'ब जी, जरै इज टाबरां जैड़ी भोळी-भोळी बातां करो । आपनै ईमानदारी निजर आई कठैई इण मुलक में ? सही बात आ है के जे ईमानदारी राखणी चावां तो ई कोनी राख सकां । रांड रंडापो काढणी चावै पण रंडवा कोनी काढण देवै ।

—पण जे रांड व्हैनां धकाई या नाचटै सूवै अर रंडवां रै भाठा फैंकै तो पछै रंडवां रो काई कसूर ?

—माट सा'ब आप सफा गळत पेट मार्थ हो । म्हूं आपनै घरवीती सुणाऊं—सेठ जोर री डकार लेवतां बोल्या—गया महीना री बात है, कोई मांमूली लैण-दैण रा मांमला में एक अफसर म्हारा सूं बेराजी व्हैग्या । म्हनै ई रीस आयगी के देवतां-देवतां ई अकड़ बतावै, सो आपसरी में छोड़ व्हैग्यो । नतीजो ओ निकळ्यो के म्हनै एक अमल रा केस मे फंसाय दियो अर उण केस में हजारां रो धूंवो उडग्यो । इण ढंग रा एक नीं पण अनेकूं किस्सा है । कांई-कांई सुणावां अर किणनै सुणावां ?

सेठ स्यात् फेरूं कई किस्सा सुणावता पण गाडी मोड़ में चालण लागी तो जांण पड़ी के लूंणी नैड़ी आयगी है । सेठ रै अठै उतरणो हो सो माया समेटण लागा । पागड़ी संभाळता बोल्या—

लो माट सा'ब अबै तो बैठ जाओ, कणाकलाई ऊभा हो, काया व्हैग्या व्हौला ।

म्हैं मन में कह्यो—लेखै विणजै वांणियो अर फ़ेर ओडावै पाड़ । इतरी जेज सांकड़ मांकड़ करनै बैठण री जगै दी व्हैती तौ थांरी भलाई ही । अबै तो भावै ई सीट खाली करणी पड़ैला । सो कांई पाड़ ओढावणी कोनीं ।

म्हारै बैठतां ई बाबौजी बोल्या—अलख निरंजन ! थोड़ी सी जगै

हमकूं ई दे दे भगत,फगत एक ढूंगां टेक के बैठ जायेंगे। संकर तेरा कल्याण करेंगे बेटा। खड़े-खड़े पैर थंभे की तरह हो रहे हैं और नसा उतर जाने से सिर में चक्कर आ रहा है। जगह मिल जाय तो बड़ा पुन्न होगा।

म्हैं कह्यौ—बाबाजी आ रवारण वापडी कणाकली बोझौ ऊंचायां ऊभी है। इणनै बैठण दो तौ आपनै बड़ौ पुन्न व्हैला। पण बावौजी तो म्हारी बात पूरी व्हियां पे'लीज अरड़धम करता म्हारै माथै इज बिराजता बोल्या—

—औरत की जात बड़ी कट्टी होती है भगत। तुम इसकी चिन्ता मत करो। ये तो जनम भर खड़ी रहवै तो भी इसके कुछ नहीं बिगड़ेगा। तुलसी महाराज कह गये हैं—ढोल गंवार…म्हैं बाबा नैं मन में मोकळी गाळी दी। पण बावै तो पोतारौ आसण जमाय लियौ हो। नैहचा सूं बैठनै म्हैं सांम्ही देख्यौ तो नेतौजी लेवा होठ में जरदौ भरनै ऊंचौ मूंढौ किया बैठा हा। थोड़ी'क ताळ में बारी कांनी मूंढौ करनै आड़ै-आड़ै बैठा मुसाफरा माथै डी० डी० टी० रौ छिड़काव करता बोल्या—

—साला सेठ का बच्चा!

म्हनै लागौ नेतौजी इतरी जेज भरचौड़ा बैठा मांए रा मांए घुमटी-जता हा। सेठ री बातां खतम व्हियां भाखण देवण री पूरी त्यारी कियां बैठा हा। हिचकी माथै आयौड़ा थूक रा टेरा नै पूंछता बोल्या—

—माट सा'ब इण सेठ नैं ओळखौ आप?

—नीं सा म्हूं तो आज पे'ली वार इज मिळयौ।

—इण री बातां तो सुणली, आप?

—हां बातां तो सुणीज है।

—खुद गुरूजी बैंगण खावै अर दूजां नैं परमोद बतावै।

—आ कीकर?

—कीकर काई ओ घंटा भरियौ व्हियौ सरकार अर नेतावां—अफ-सरां री भूंडियां करै हो। इणनै खुदनै तो पूछौ के थूं कांई-कांई कवाड़ा करै है। म्हूं इणरी सगली बातां कांन देय नै सुणतौ हो अर विचार करै हो के ओ आपरी सैं बाफ काढ देवैं तो सौ सुनार री अर एक लुहार री सुणाऊं। पण ओ तौ माटी लूणी में इज भाग छूटौ। नीं तो आज इण नैं वा खरी-खरी सुणावतौ के इणरी बोलती बंद कर देवतौ।

—खैर वे तो गया पण म्हानैं तो सुणाय दो के सेठ एड़ा कांई कवाड़ा

मरीज जाणै पण डाग गो मूंड सूं ई कोनीं मरीजै :
कानून निकळै । जे इण देवाळां में हैंगगर अर
गीतो नी इगबड़ियां त्यार । अबै आप इज मिनार
अचार मिणज मैगार में ।

—पण सेठां जे आप इमानदारी सूं धंधो
भरणा पड़ै ?

—इमानदारी ? सेठ हंसनै बोल्या —आ

—मास्टर हूं । टाबर पढ़ावण री धंधो

—माट सा'ब हो, जदै इज टाबरां
आपनै इमानदारी निजर आई कठै ई इण
जे इमानदारी राखणी चावां तो ई कोनी
चावै पण रंडवा कोनी काढण देवै ।

—पण जे रांड व्हैतां थकांई वा
तो पछै रंडवां री कांई कसूर ?

—माट सा'ब आप सफा गळ
सुणाऊं—सेठ जोर री डकार ले
कोई मांमूली लैंण-दैंण रा मांमला
म्हनै ई रीस आयगी के देवतां
छोड़ व्हैग्यो । नतीजो ओ निक
दियो अर उण केस में हजारां
अनेकूं किस्सा है । कांई-कांई

सेठ स्यात् फेरूं कई कि
तो जांण पड़ी के लूंणी नैड़ी
समेटण लागा । पागड़ी संभाळ

लो माट सा'ब अबै तो वैठ
व्हौला ।

म्हैं मन में कह्यो—लेखै विणजें
इतरी जेज सांकड़ मांकड़ करनै वैठण री
ही । अबै तो भावै ई सीट खाली करणी पड़ैला ।
कोनीं ।

म्हारै वैठतां ई बाबौजी बोल्या—अलख निरंजन

समाज री सेवा अर देसरी तरक्की खातर त्याग अर तपस्या करणी पड़ै। सेवा रौ मारग अवखौ घणौ है, कोई करनै देखै तो जाण पड़ै।

नेतौजी भाखण देवता-देवता सांस भरीजग्या। म्हैं मौकौ देख'र अरज करी—

—सेठ वापड़ौ सफा कूड़ौ तो कोनीं। आंपणै समाज में जिकौ नैतिक गिरावट आय री है उण में ऊपरलौ तबकौ सफा निरदोस है आ बात तो किया कैय सकां।

नेतौजी फेर भीमरिया म्हैं आ कद कही के ऊपरलौ तबकौ निर-दोस है। सफा निरदोस नीं तो ऊपरलौ है अर नीं नीचलौ। थोड़ौ-थोड़ौ दोस दोन्यूं रौ है। पण आ बात म्हूं सुभट कैय सकूं के सरकार अर नेतावां री भूंडियां करणी तो एक फैसन बणगी है। अर आ चीज आंपांनै फोड़ा घालैला। *कारण के मूंडा सूं कैवणौ सरल है पण करणौ कठण है।*

गाडी ठमी तो नेताजी री भाखण ई ठम्यौ। बातां-वांता में ध्यांन ईं कोनी रह्यौ के किसौ टेसण आयग्यौ। नेताजी नै अठै इज उतरणौ हो सो झट आपरौ झोळौ संभाल नै लप्प करता नीचा उतरग्या। वापड़ी रवारण नै बैठणनै जगै मिळगी। वा वावाजी रै अड़ीअड़ गोडां माथै गांठड़ी धरनै बैठगी। गाडी पाछी रवानै व्ही तो अबकाळै सांम्हां बैठ्या बावूजी बोल्या—

—जमांना थारी वळिहारी।

म्हूं वांरै मूंडा कांनी देखण लाग्यौ तो वे फेरूं बोल्या—सूपड़ौ तो बाजै सो बाजै इ'ज पण छालणी ई बाजै।

—आ बात आप किणरै सारूं कही?

—इण नेताजी सारूं दूजौ किणरै सारूं। म्हांटी सेवा अर त्याग री कितरी मोटी-मोटी बातां करै हो, जाणै खास त्याग रो इ'ज अवतार है।

—आप ओळखौ इण नेताजी नै?

—आंछीतरियां। इणनै कांई इणरा बाप नै ई ओळखूं। सरूपांत में पंडां जोधपुर मे अखबार वेचणरौ काम करता अर गळी-गळी हाका करता रोवता फिरता। धीरै-धीरै पोतारी न्याती री छात्रावास बणावण रै वास्तै एक उस्टंड कियौ। एक दो सम्मेलन किया। चंदा चपाटी री रसीदां छपाय नै गांम-गांम फिरनै हजारां रुपया भेळा करनै डकारग्या। छात्रावास रौ मकांन तो हालतांई अधूरौ इ'ज पड़्यौ है पण पोतरौ मकांन कदेई वणग्यौ।

करै ?

अबै नेताजी भाखण देवण रा जोश में आयग्या हा। तणका व्है नैं बैठता थका बोल्या--

—आ मत पूछो के ओ कांई कबाड़ा करै, आ पूछो के ओ कांई-कांई कबाड़ा नीं करै ? धान में बजरी अर माटी भेळनै ओ बेचै, घी में भेळसेळ ओ करै, चोरी सूं खांड नै कपड़ो पाकिस्तान भ्रो भेजै अर धाप नैं अमल री धंधो ओ करै। म्हांसूं इणरी एक ई पोल छांनीं कोनीं। लारला महीना में इंज इणरो मोटोड़ो बेटो पकड़ीजग्यो हो अबार जमांनत माथै छूटनैं आयो है।

—किण केस में पकड़ीज्यो हो ?

बैठोड़ा अर ऊभोड़ा सगळाई नेता री बात कांन देय नैं सुणण लाग्या।

—रांणीवाड़ा में इणरी किसनगोपाळ मणीलाल रै नांम सूं दुकांन चालै। उठा सूं गुजरात री कांकड़ नेड़ी पड़ै। लारला पनरै बीस बरसां सूं किसनगोपाळ मणांबंद खोटिगी अमल त्यार करनैं चोरी सूं गुजरात भेजै। पालणपुर जिला रा दो-च्यारेक पटेल जिकी इण धंधां में लाग्योड़ा है, वे इण अमल नैं आगै सूं आगै पुगाय दे गुजरात री सरकार मोकळा दिनां सूं हैरांन ही के पालणपुरा जिला में इतरी अमल आवै कठा सूं है ? गुजरात सरकार सेवट हैरांन होयनै राजस्थांन सरकार नैं इण बाबत लिख्यौ। केन्द्र सूं ई तपास करण खातर मदद मांगी। केन्द्रीय सरकार दो च्यारेक हुंस्यार सी० आई० डी० इण कांम वास्तै मुकर किया। उणां पे'ली ती पूरी भेद लियौ अर पछै पटेलां री वेस धारण करनैं किसनगोपाळ खनै अमल री सौदो करण नैं आया। पैंसठ हजार में मणांबंद अमल लेवणी तै व्हियो। इणै वां नैं रात री वखत एक ढांणी खनैं मोटर लेयनै आवणरौ कह्यौ अर हाथोहाथ रकम गिणावण री बात तै व्ही। आपरी पूरी त्यारी करनै ठीक टेंम माथै बतायोड़ा ठाया माथै पूगग्या। आधीक रात री वखत हो। जोर-जोर सूं होर्न दियौ तौ किसन गोपाळ री बेटौ मणीलाल दो आदमियां सागै अमल रा गांठड़ा लेय नैं हाजर व्हियौ अर पकड़ीजग्यौ। वो केस हाल तांई चालै इं'ज है। आ हालत है इमांनदारी सूं विणज वैपार करणिया इण सेठांरी। जिकौ धरम री धजा बण्योड़ा फिरै अर बात बात में सरकार नैं, अफसरां नैं अर नेतावां नैं तौ कोसै पण पोतारी खोड़ निगै ई कोनीं आवै। डूंगर बळती तौ सैं नैं दीसै पण पगां बळती किणनैं ई कोनीं दीसै। थोथी बातां सूं कांई कोनीं व्है।

समाज री सेवा अर देसरी तरक्की खातर त्याग अर तपस्या करणी पड़ै। सेवा रो मारग अबखौ घणो है, कोई करनै देखै तो जांण पड़ै।

नेताजी भाखण देवता-देवता सास भरीजग्या। म्हैं मौकौ देख'र अरज करी—

—सेठ बापड़ो सफा कूड़ो तो कोनीं। आंपणै समाज में जिको नैतिक गिरावट आय री है उण में ऊपरलौ तबको सफा निरदोस है आ बात तो किया कैय सका।

नेताजी फेर भींमरिया म्है आ कद कही के ऊपरलौ तबको निर-दोस है। सफा निरदोस नीं तौ ऊपरलौ है अर नीं नीचलौ। थोड़ौ-थोड़ौ दोस दोन्यूं रौ है। पण आ बात म्हूं सुभट कैय सकूं के सरकार अर नेतावां री मूंडियां करणी तो एक फैसन बणगी है। अर आ चीज आंपांनै फोड़ा घालैला। कारण के मूंडा सूं कैवणो सरल है पण करणो कठण है।

गाडी ठमी तो नेताजी रो भाखण ई ठम्यो। बातां-बांता में घ्यांन ई कोनी रह्यो के किसी टेसण आयग्यो। नेताजी नै अठै इज उतरणो हो सो झट आपरो झोळो संभाल नैं लप्प करता नीचा उतरग्या। बापड़ी रवारण नैं बैठणनैं जगै मिळगी। वा बाबाजी रै अड़ोअड़ गोडां माथै गांठड़ी धरनै बैठगी। गाडी पाछी रवानै व्ही तौ अबकाळै सांम्हा बैठ्या बावूजी बोल्या—

—जमांना थारी बळिहारी।

म्हूं वांरै मूंडा कांनी देखण लाग्यौ तो वे फेरूं बोल्या—सूपड़ो तो बाजै सो बाजै इ'ज पण छालणी ई बाजै।

—आ बात आप किणरै सारूं कही?

—इण नेताजी सारूं दूजौ किणरै सारूं। म्हाटी सेवा अर त्याग री कितरी मोटी-मोटी बातां करै हो, जाणै खास त्याग रो इ'ज अवतार है।

—आप ओळखो इण नेताजी नै?

—आछीतरियां। इणनै कांई इणरा बाप नै ई ओळखूं। सरूआत में अठा जोधपुर मे अखबार बेचणरो काम करता घर गळी-गळी हाका करता रोवता फिरता। धीरै-धीरै पोतारी न्याती रौ छात्रावास बणावण रै वास्तै एक उस्टंड कियौ। एक दो सम्मेलन किया। चंदा चपाटी री रसीदां छपाय नैं गांम-गांम फिरनै हजारां रुपया भेळा करनै डकारग्या। छात्रावास रो मकान तो हालतांई अधूरो इ'ज पड़्यो है पण पोतरो मकांन कदेई बणग्यौ।

अबै गांम में एक डेरो ई कबाड़लियो है माथै मसीन लगाय री। डेरा रो असली मालिक बापड़ो एक गरीब माळी है जिणनै नै मुकद्दमा बाजी में अळूझाय नै बरबाद कर दियो है अर पोतै धणी-धोरी बणनै बिराजग्या है।

म्हे बाबू सा'ब नै बीच में टोकनै धीरै सीक कयो— माफ कराई जो बाबू सा'ब ! ए बातां आपनै नेताजी रै मूंडा माथै केवणी ही। तो कांईक मजेदारी रैवती। बाबू सा'ब नै म्हारी बात थोड़ी आंछी लागी। वे रीसां बळतां बोल्या—'माट सा'ब आ जमात अबै इतरी नकटी व्हैगी है के इणांरै मूंडा माथै कैवो तोई कोई फरक नीं पड़ै। सरै आंम लोगड़ा इणांरी गाजनो पाड़ै, इणांरा करतब बखांणै पण चिकणा घड़ा माथै छांट लागै तो इणां माथै ई असर व्है। अर आप तो गांमड़ा रा रैवण वाळा हो, आपसूं कांई बातां छांनी है ? तरै-तरै रा रूप में अर तरै-तरै रा भेस में गांम गांम में नेता त्यार है। इणां रो धंधो इज तिकड़मबाजी है। लोगां में मुकद्दमा-बाजी करावणी, सरकार सूं झूठा लोन उठावणा, सरकारी अहलकारां री साची झूठी सिकायतां करणी, जठै पोता री पापड़ सिकती निजर आवै उठै पूंछ हिलावणी अर गरीबां नैं झूठा बत्ता देयनैं लूटणा अर चूसणा इणांरी खास धंधो है। इणां रै देखा देखी समाज री नैतिक इस्तर ई पीदै बैठग्यो है। झूठ, धोखेबाजी, जाळसाजी अर बेइमांनी चांफैर निजर आवै। अबै ओ सुभट लखावै के इण मुलक में सेवट क्रांति व्हैला। अर क्रांति व्हियां इ'ज समाजवाद री थरपणा व्हैला। ओ धूड़ धमावो अर कचरो जठा तांई बळ नैं भस्म नीं व्है, अठै समाजवाद नीं आय सकै।' बाबू सा'व कोई फेरूं आगै कैवता पण इणरै पेली'ज डब्बा में एक इसी अजोगी बात बणी के सगळां रो ई ध्यांन उण कांनी लागग्यो।

बात आ हुई के बाबो रवारण रै अड़ोअड़ म्हा वाळी सीट माथै इ'ज बैठो हो। भीड़ अणूंती ही'ज। सो इण रापटरोळ में बाबै माटै न जांणै कांई कुचमाद कीवी सो रवारण खांच नैं एक झापड़ धरी बाबा रै मूंडा माथै—झप्पीड़ ! करतौड़ी। झापड़ पड़तांई बाबै विकराळ रूप धारण कियौ अर साखियात दुरवासा बणनैं बकण लाग्यौ—

—रंडी साधु पर हाथ उठाती है, सत्यानास जाएगा तेरा, रूं रूं में कीड़े पड़ेंगे साली के। मैंने तेरा क्या बिगाड़ा ? सीट पे जगै नहीं तो मैं क्या करूं ! औरत की ओछी जात। अभी कोई मरद सामने होता तो मार चिमटां के भुरता बना देता साले का। रंडी छः महीने के अंदर अंदर रांड

नहीं बन जाय तो मैं असली साधु नहीं।

गाळा सुणी तो रवारण ई चंडिका बणगी। उणे बाबा रे हाथ में सूं तूंबो झड़प नें ठरकाळो बाबा रे कपाळ में सो किरची किरची। रीस में तंबोळ व्हियोड़ी बोलण लागी—

—भंगियां भूत भगड़ा, दस नंबरिया, साधु रो भेख धारण कियो है, थनें सरम कोनीं आई—अर एक झापड़ फेरूं घरी झप्पीड करतोड़ी—बाबा री डाढी नें जटा सै बिखरगी—खा जाऊं बापड़ा चोरनै थे म्हनें समझी कांई है? अबकै कर देखांणी हाथ आगो—दांतां सूं तोड़ नें नीं नांख दूं तो म्हारो नांम जांजूड़ी नीं।

बाबे अबकै चींपटो उपाड़ियो पण म्है बीच में इ'ज पकड़ लियो। अर उठी नें जांजूड़ी करकड़ी खाय नें पड़ी बाबा रें माथें सो मार मार नें फूस काढ दियो। झोळी भंडा फाटग्या, माळावां तूटगी, डाढी जटा रा बाळ ऊखड़ग्या पण रवारण तो माटी हाथां रो खार काढण लागी तो जाणो धोवण कपड़ा धोवण लागी। बाबाजी रो चीपटो म्है सीट रै हेटे नांख दियो हो नी तो वा बाबाजी नें पिंजारो रूं नै पींजै ज्यूं पींज नाखती। मार ई परमो रतन गिणीजै। कुतको बड़ी कताबलांठा ई लटका करै। सो बाबो तो अल्लारी गाय बणग्यो। हाथां सूं माथो लुकाय नें मुड़दा री गळाई पड़ग्यो। चूकारो ई कोनी कियो। रवारण मारतां मारतां थाकगी तो बकण लागी—

—थारी मा रा बींद थारी रा भगड़ा फेर करजै कोई लुगाई रै कांनी आगो हाथ। सीढी काढियो कणाकलो आगो सिरकै अर माथै माथै पड़ै। म्हैं जांणतै गम खाई के बापड़ो साधु है, भीड़ में दोरो बैठो है, जावण दो, धूड़वाळो—तो ओ इण री मा रो गौठियो हाथ सूं कुचमाद करण लाग्यो। तोई म्हैं तो धो ळो जितरो दूध जांण्यो के बापड़ो पोतारा पंढ रै लाज सणतो व्हैला इण सूं स्यात् इणें समझलियो के आगें ई कोई इण रै भाजना-री'ज व्हैला। सो दस नंबरियै म्हारै पूठियो भर लियो। नें साम्ही गाळां फेर न्यारी काढे। उल्टो चोर कोटवाळ नै डंडै। थारो काळजो खाय जाऊं रै बापड़ा थारो—च्यार चुरला भरनै लोही पी जाऊं दुस्टी, थारो—अर वा फेर करकड़िया पीसण लागी।

भेरव री दुरगत व्हैती देख नें कई भगतां रो काळजो दुखण लाग्यो। साधु है, नसा में कोई भूल व्हैगी तो सजाई मिळगी। विसांमां खाय नें

* कुए भांग पड़ी

गा फेंक कठैई बाबा नै मारण री म्हारी बात; सो सोगड़ा उणनै भांत-भांत सूं समझावण लागा भूंडो है सो ई भोगव है, आपणा री बात गाय, उणरो राम निकळग्यो पण थूं नीं आयो नद। सम म्हानै जिकोई सोतो मिनख नजर रै मिनख नै भांत कीनी जैसी भूख लेवी अर सजा ई मिळणी अर अबै गाडी गाडियां सूं मूंढै सो अबै म्हारा थूं सम गाडैजे।

पण। जणां कैवण लागा सो ना ई भोड़ी भीमी पड़ी अर बाबो ई भीनोड़ी मिनखी री मळाई मानर बैठग्यो।

पण डब्बा में हुल्ला दम्बाड़ वधी जोर री व्ही ही सो पूरी गाडी में मुसाफरां रा हू हाफ सूण री ही। इण वास्तै पुलिस रा जवान, गार्ड अर टी० टी० सगळा ई म्हा वाळा डब्बा में आय गमक्या। उणां आवतांई पूछताछ कीवी अर बाबा नै पकड़नै दूजा डब्बा में लेग्या। होळै-होळै डब्बा में सांति वापरी। टी० टी० पोतारो काम सरू कियो। टिकट चैक करतो-करतो वो म्हारी सीट कानी आयो जिण सेमी'ज म्है देख्यो कै म्हारै सांम्हला बाबूजी चोला चाना उठनै तारस में बड़ग्या। सगळा मुसाफरां नैं चैक कियां पछै टी० टी० तारस री दरवाजो खड़खड़ायो। पण घणी ताळ खुल्यो कोनीं। तो जोर सूं खड़खड़ाय नैं पुलिस नैं बुलावण री धमकी दीवी। जरै कठैई जायतो दरवाजो खुल्यो अर मांयनै सूं समाजवादी क्रांतिकारी बाबूजी नीचो माथो कियां बारै आया। भारत भोम रो नूंवो खून अर मोरल करेक्टर नीची धूंण घाल्यां ऊभो हो। टी० टी० उणरो कॉलर पकड़नैं ठिरड़तो-ठिरड़तो नीचै लेयग्यो।

म्हारो माथो भंवण लाग्यो। गाडी रवांनै व्ही तो म्हनै लाग्यो के आ जायनैं सीधी जोधपुर रा किला रै भचीड़ खावैला अर मांयनैं बैठोड़ा मुसाफरां री बोटी-बोटी विखर जाएला।

पांन झड़ंता देखनैं

डोकरी सुगणा कोरी नामरी'ज सुगणा कोनी ही पण काम सूं ई सुगणा ही। आखा गांम में नेना अर मोटा सैं उणनैं सुगणा काकी रै नाम सूं बतळावता। कारी सुगणा गवाड़ रै सुख-दुख में हाजर रैवती। साजै मांदै में, ब्याव सा मे, आंणा मुकलावा में अर हर खुसी गमी में सुगणा हरेक रै घरै बिना बुलाया पूग जावती। लोग अेड़ा हेवा व्हैग्या हा के सारी रै बिना कांम पार पड़तो इं'ज कोनी।

सुगणा रो सुभाव इसो के गांव में कदैई कोई सूं दो दांत कोनी व्ही। चालतां कीड़ी नै ई कोनी दुखाई। कोई रै भाख में घाल्योड़ी ई कोनी राखरी। पण इसी भली लुगाई री मानरी तो कांई पण भगवांन ई मदद कोनी कीधी। मोट्यार धणा मे घणा बरसां सूं पेट मड्यो हो के घर भाग्यो। कोई आठ दस बरस नीठ पूड़ो हाथ रह्यो व्हैला के रंडापो आपग्यो। पड़ता दुकाळ अर व्हैती रांड री हूक बड़ी जोर री व्है पण करम री गति नै कुण टाळै ? रेख में मेख कुण मारै ? नी जीवणो चावतां थकां ई जीवणो पड़ै। सुगणा रै माथै दुख री गासर पड़्यो पण समै रो मल्हम इतरो असरकारक व्है के वो मोटा सूं मोटा घाव नै ई भर नांखै।

सुगणा मिनखां रै घरै बडी मजूरी अर पांणी पोरियो सरू कियो। सावण री छोट धार्मिनी सी किणांई पेट री खाडो तो भरणो इं'ज पड़ै अर पेट भरण खातर मैणत मजूरी ई करणी पड़ै। सुगणा जिसी सुलखणी अर असराफ लुगाई रै वास्तै कोई मजूरी री कमी कोनी ही। सो ज्यूं-

[illegible] दिन [illegible] दे [illegible] दिया। सुगणा रो बेटो मोटो व्हियो नीं [illegible] आयो। आगै [illegible] दिन बीता अर [illegible] दिन आया। पण [illegible] सुगणा रै [illegible] ई रांनी [illegible] ?

[illegible] रै बेटा रो ब्याव कियो नी बहुआरी कजात मिळी। सुगणा [illegible] अर [illegible] काम री माटी अर [illegible]। [illegible] पड़ौसा पाड़णा अर [illegible] इण घर सूं उण घर [illegible] रोवती [illegible]। सुगणा [illegible] सुणावै। कुत्ता री गळाई मूंढो [illegible]। सुगणा नीं [illegible] लागगी। [illegible] लाग्या एक भव [illegible] नीं तो सुगणा कासी में अेड़ी बहुआरी क्यूं मिळी ?

दिन बीतता गया अर सुगणां [illegible] थाकती गई अर झमकू बहू मातती गई। इण रा आया पड़ता दिन अर उण रा आया चढ़ता दिन। सुगणां, [illegible] जिकै [illegible] जिको काम री [illegible] करती री पण सेवट टांटिया थाकग्या जरै घर री पेढी झाल ली। बहुआरी दिन-दिन [illegible] गी। सुगणा रै जीव नैं पूरी गिरै व्हैगी। अबै रात दिन देराणी अर [illegible]। डोकरी बापड़ी [illegible] कर कर नै सेवट आंधी व्हैगी। मांचो पकड़तांई बहू मोसा मारण लागी अर करड़ खरड़ करण लागी— डैण नीं मरै अर नीं मांचो छोडै। रात दिन घड़ी-घड़ी खल्लू-खल्लू करै। थूक-थूक नै सगळो घर खराब कर दियो। आ मरै तो इण घर री साड़

[illegible]गां रै मरगी ई हाथरी बात कोनीं ही। इण वास्तै [illegible]ड़ी पड़ी रैवती। झमकू उणरै मांचा हेटै माटी रौ एक [illegible]। याद आवै जरै उण में टुकड़ौ नांख देवे, नींतो डोकरी [illegible]वै। वा उण ठीवड़ा में इज थूके अर उण में ईज खावै। [illegible]री जूंण जीवै। आंख्यां सूं दीसैनीं, पगां सूं चालीजै नी अर [illegible]ीजै नीं पण उमर री डोर तूटैनीं अर हंसौ काया रौ पिंजरौ [illegible]।

मनख सुगणां रै बेटा नैं कोसण लाग्या—एक तिल व्हैनैं ई तालर में [illegible]ी, नां जोगौ साचांणी लुगाई रे घाघरा री जूं वणग्यौ। बापड़ी

डोकरी इणरी आस माथै रंडापो गाळ्यो अर छेवट थाका पगां बापड़ी री आ दुरगत व्ही। अबै तो सांवरियो सार करै तो खोळियो छूटै।

पण बेटे नै ळाज के दाझ काई कोनी ही सो उणै मिनखां रै कैण कावण री कोई गिनरत ई कोनी करी। यू दिन बीतता ग्या अर सुगणां रै उमर रा आखर ओछा व्हैता ग्या।

मोकळा बरस बीता पछै सुगणा रा बेटा रै ई बेटो व्हियो। हाळी आया टावर रा लाड कोड व्हिया। घर मे मेवा मिस्टान्न वण्या पण डोकरी रा ठीबड़ा में तो सूखा टुकड़ा इ जआया। दिन लाग्याटाबर ई मोटोव्हियो। उणरो ई ब्याव व्हियो, बिनणी घर मे आई पण सुगणा हाल बैठी'ज ही। उणनै देखतो जिकोई कैवतो के सांवरियो चिट्ठी भूलग्यो है। पण बिनणी नै आयां नै तीन च्यारेक महीना व्हिया पछै छेवट एक दिन सुगणा री हेलो सुणलियो अर उणरो खोळियो छूटग्यो।

बास ग्वाड़ रा मिनख भेळा होयनै सुगणां नै दाग देवण नै लेयग्या तो लारै सूं झमकू सासू बिनणी नै कैवण लागी—

—बिनणी डोकरी रो भ्रो ठीबडो तो बारै उखरड़ा माथै नाख दे लाडू, आंगणा रै से बीच पड़्यो भूडो दीसै। अबार गाम री लुगायां बैठण नै आवैला तो वांनै सूगली वांस आवैला।

बिनणी घूंघटी ऊची करनै सासू कांनी खरी मीट सू देखती बोली—

—ठीबड़ो बारै क्यू नांख दू? इणनै तो अबेर नै धरूला। थारै वास्तै चाहिजैला जरै दूजो ठीबड़ो कठै भाळती फिरूला!

सासू आंख्या फाड़ नै बिनणी कानी देखती'ज रैयगी।

—०—